विचार दृष्टि

वर्ष : 13 | जनवरी-मार्च 2011 | अंक : 46 | मूल्य : 50 रुपए

सुशासन के कार्यक्रम

2010-2015

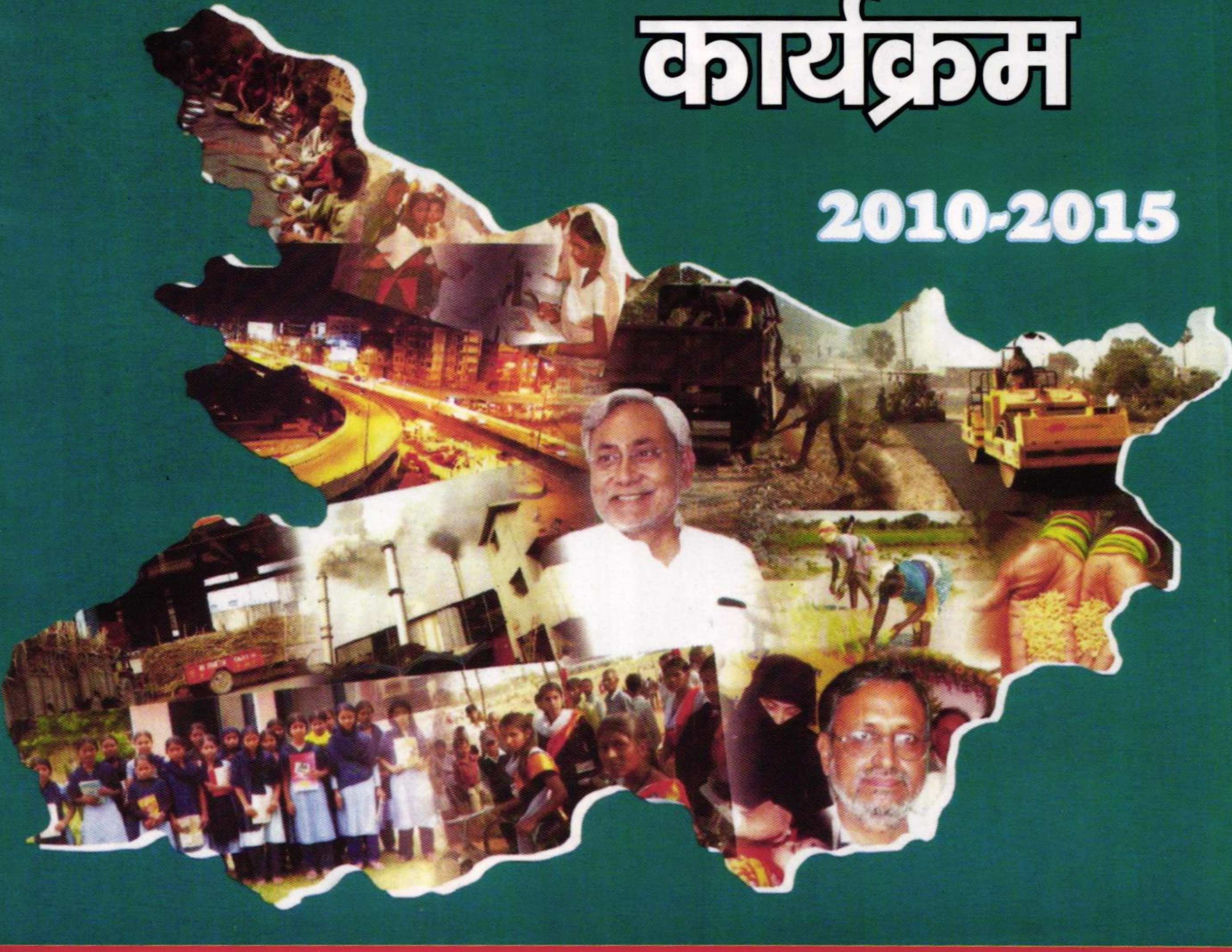

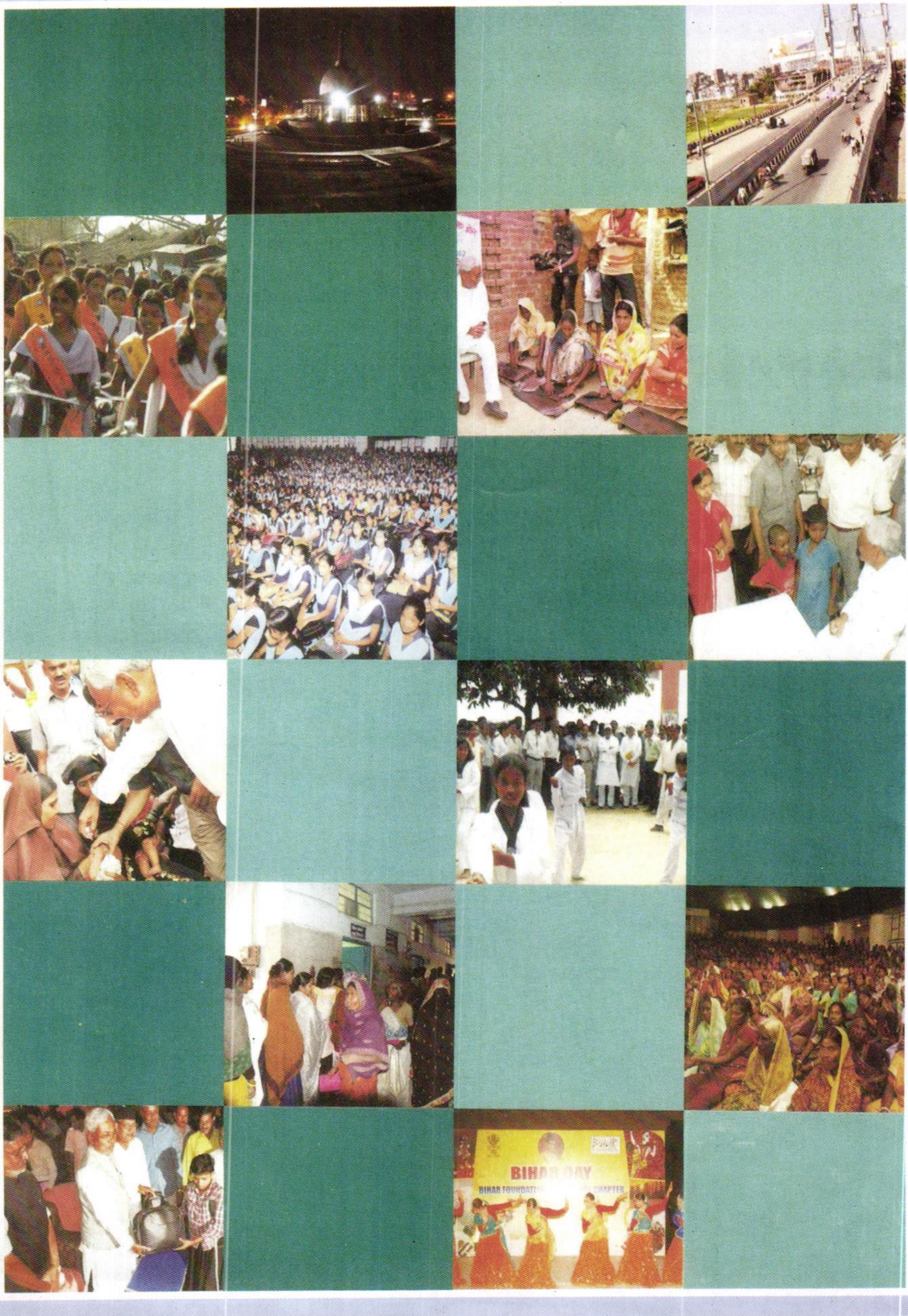
BIHAR DAY

विचार दृष्टि

RNI REG.NO. : DEL HIN/1999/791

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका)

वर्ष–13, जनवरी–मार्च 2011, अंक–46

संपादकीय सलाहकार : डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

संपादक : सिद्धेश्वर

सहायक संपादक : उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'

: डा. मणिकान्त ठाकुर

प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन

साज–सज्जा : भरत कुमार

संपादकीय कार्यालय

'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली–92

फोन : (011) 22530652 / 22059410

मोबाईल : 9811281443 / 9873434086

फैक्स : (011) 42486862

मूल्य

एक प्रति	: 40 रुपये
वार्षिक प्रति	: 150 रुपये
द्विवार्षिक	: 300 रुपये
आजीवन सदस्य	: 1500 रुपये
विदेश में एक प्रति	: US $ 08
वार्षिक	: US $ 32
आजीवन	: US $ 400

पत्रिका–परामर्शी

- प्रो. पी. के. झा. 'प्रेम'
- अनिकूर रहमान
- संजीव कुमार

नरेन्द्र मिश्रा (उत्तर बिहार प्रतिनिधि)

पत्रिका–परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं। रचनाकारों के विचारों से पत्रिका–परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

रचना और रचनाकार

संपादकीय 3–5

बिहार का सौवां साल : शानदार शतक

पाठकीय पन्ना 2

बिहार विशेषांक–2011

बिहार का विकास–मॉडल *–रीता झा* 6–16

बिहार जनादेश–एक आशा *– संतोष कुमार* 17–18

बिहार : ऐतिहासिक चुनाव, चुनौतियाँ एवं सुनहरे सपने *–शिव कुमार* 19–20

जीत : विकास, विश्वास और स्वाभिमान की *–प्रो. पी.के.झा 'प्रेम'* 21–22

एन.डी.ए. की जीत में महिलाओं की भूमिका*–प्रो. अंजना चौबे* 23

इस ऐतिहासिक जीत के मायने *– संजय कुमार* 24–25

बिहार में लोकतंत्र ने अपनी तान भरी *–सिद्धेश्वर* 26–27

राजनीति की नई दिशा *– संजीव पाण्डेय* 28–29

वापसी हुई नए युग की *–संजय तिवारी* 30–31

अब मिसाल बन सकता है बिहार *–शैबाल गुप्ता* 32–33

विकास का बिहार–मॉडल*–देविन्दर शर्मा* 34–35

यह जनादेश बिहार के लिए ही नहीं है *–के. विक्रम राव* 36

एक नई सुबह का एहसास *– सिद्धेश्वर* 53–54

नीतीश सरकार की पुनर्वापसी *–सिद्धेश्वर* 55–56

समाज

महिलाएँ एवं बदलते पारिवारिक प्रतिमान *–अनामिका* 57

साहित्य

जनवादी कथाकार : बाबा नागार्जुन *–डॉ. मणिकांत ठाकुर* 58–59

राष्ट्रभाषा की महत्ता एवं हिंदी *– डॉ. हेमवती शर्मा* 60

भारतीय समाज में मनुष्य की जातिगत स्थिति और 'बच्चन' *–डॉ. राज शेखर* 61–63

श्रद्धांजलि

मेरे अनन्य मित्र गोपाल प्रसाद *– सिद्धेश्वर* 64–65

मीडिया

घुन लगा मीडिया *–नित्यानंद गायेन* 67

कहानी

आज का पुरुष *– स्नेह ठाकुर* 70–71

गतिविधियाँ

ज्ञान का केन्द्र बनेगा नालंदा : नीतीश *–शिव कुमार* 31

तृतीय राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी संपन्न 37–44

संस्कृत भारतीय संस्कृति की धरोहर है 45–48

'बिहार संदेश' स्मारिका लोकार्पण समारोह–2010 52

राष्ट्रीय विचार मंच एवं अनुव्रत महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में सरदार पटेल की 135वीं जयंती पर संगोष्ठी *–डॉ. मणिकांत ठाकुर, उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'* 68–69

बाबा कानपुरी को पं. सुमित्रानंदन पंत साहित्य सम्मान *–देवेन्द्र कुमार मित्तल* 72

नेत्रहीनों के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाई लुई ब्रेल ने *–डॉ. राज शेखर* 72

क्या मायने हैं राष्ट्रीयता के *–डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'* 73–74

कविवर 'नलिन' का काव्य–विवेक *–डॉ. राम गोपाल पाण्डेय* 75–78

राष्ट्रीय विचार मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन *–डॉ. बी.एन. पाण्डेय* 79–80

सच्चा देशभक्त वही है जो देश हित में काम करे : सोलंकी *–सुरेन्द्र झा* 81

समीक्षा

'ब्याहता' : सहज संवेदना की पारिवारिक कहानियाँ *–सरिता शर्मा* 82

राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे भारतवंशी अमेरिकी–कवि सुरेन्द्र नाथ *–सिद्धेश्वर* 83–84

किनारे की धरती –कहानी संकलन *–सुजाता प्रसाद* 85–86

सामयिकी

भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य बना*–उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'* 87

समुद्री डकैती (पाइरेसी) : गंभीर अंतर्राष्ट्रीय समस्या*–उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'* 88

कविताएँ

- **हम उसी पथ के पथिक हैं** *–बाबा कानपुरी* 57
- **मुक्तिपर्व का गीत** *–वरूण कुमार तिवारी* 59
- **ग़ज़ल** *–आजाद कानपुरी* 60
- **ग़ज़ल** *–राजेश रंजन कुमार* 65
  ग़ज़ल *–अलख नारायण झा*
  मुक्ति *–कुसुम नेप्सिक*
- **आओ चले बातें बनाएं** *–देव आनंद* 66
  मील का पत्थर *–डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'*
- **दृष्टि दोष** *–आनन्द वर्द्धन* 71
  बे–खबर *–राम कुमार करौतिया*
- **गीत** *–शिव कुमार बिलग्रामी* 84

Website : www.vichardrishti.com E-mail : contactus@vichardrishti.com

प्रिय पाठकों एवं लेखक,

'पाठकीय प्रतिक्रिया' वास्तव में पत्रिका परिवार के लिए एक दर्पण-सा होता है। यही कारण है कि हमें प्रकाशित रचनाओं और समग्र रूप में प्रस्तुति पक्ष पर आपके बेबाक विचारों/उचित प्रस्तावों का बेसब्री से इंतजार रहता है। प्राप्त पाठकीय प्रतिक्रिया एवं प्रस्तावों को हम न केवल प्रकाशित करते, बल्कि उन पर विचार भी करते हैं। 'संपादकीय कोप' का कोई ख़तरा नहीं है। नए स्तंभों की शुरुआत और समय-समय पर संशोधन-परिवर्तन इसका प्रमाण है। दूसरे दशक के सफ़र में पत्रिका और अधिक स्तरीय, पठनीय, संग्रहणीय, सुंदर एवं आकर्षक हो ; इसमें पाठकों और लेखकों का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है।

प्राप्त पाठकीय प्रतिक्रियाओं में से हम केवल उन्हीं प्रतिक्रियाओं आदि को शामिल कर पाते हैं, जिनमें वस्तुनिष्ठ, कृतियों से संदर्भित संक्षिप्त समीक्षा/टिप्पणी या मार्गदर्शक बिंदु होते हैं।

● *सहायक संपादक*

विचार दृष्टि के 'राष्ट्रमंडल खेल विशेषांक में नीतीश सरकार के पाँच साल' लेख पढ़कर अच्छा लगा। सचमुच नीतीश जी ने बिहार में परिवर्तन की न सिर्फ सकारात्मक शुरुआत की है बल्कि बिहार की नई पहचान कायम करने के लिए भी वे तत्पर दिखते हैं। नीतीश जी ने बिहार की उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही छवि में आशापूर्ण परिवर्तन का शुभारंभ कर बिहारवासियों में नई उम्मीद का संचार किया है। बेहतर होगा कि नीतीश जी इस परिवर्तन की गति को और तेज करे एवं बिहार को नई पहचान दिलाएं।

◆ राजीव रंजन कुशवाहा, नई दिल्ली

विचार दृष्टि के 45वें अंक को 'राष्ट्रमंडल खेल 2010 विशेषांक' के कलेवर में देखकर सुखद महसूस हुआ। पत्रिका की साज–सज्जा में सुधार होने के साथ–साथ आलेखों की गुणवत्ता भी बढ़ती प्रतीत हो रही है। **'माँ मुझे मारो नहीं'** कविता पढ़कर भावुक होने को विवश हो गया, तत्क्षण समाज की भ्रूण हत्या संबंधी कुरीति के प्रति मन में आक्रोश भी व्याप्त हो गया। **'चपल चितवन'** कविता मन के सहज उतार–चढ़ाव को बिल्कुल सरल शब्दों में बहुत ही अच्छी तरह से बयां करती है।

◆ बिजयेन्द्र, धीरज; पटना

लेखकों से विशेष अनुरोध

- ▼ रचना की छाया/कार्बन प्रति या अस्पष्ट हस्तलिखित प्रति प्रेषित न करें।
- ▼ रचना के मौलिक एवं अप्रकाशित/प्रकाशित होने की सूचना अंकित करें।
- ▼ रचना के अंत में पत्राचार का पूरा पता (दूरभाष सहित) अंकित करें।
- ▼ रचना के साथ पासपोर्ट आकार का फ़ोटो एवं जीवन-वृत्त संलग्न करें।
- ▼ समीक्षा हेतु पुस्तक/पत्रिका की दो प्रतियाँ भेजें अन्यथा केवल प्राप्ति-सूचना ही प्रकाशित की जाएगी।
- ▼ अन्य भाषाओं की कालजयी/उत्कृष्ट रचनाओं के हिंदी अनुवाद प्रकाशनार्थ भेजें।
- ▼ रचना के प्रकाशन से संबंधित जानकारी हेतु जवाबी पत्र अवश्य संलग्न करें।
- ▼ श्रेष्ठकर होगा ई. मेल द्वारा रचनाओं का प्रेषण। रचना Kruti-Dev 010, Walkman- Chanakya 901, 902, 905 फॉन्ट्स में ही टंकण कराकर नीचे लिखे ई-मेल आईडी पर ही भेजें। हम उन्हें प्रकाशन में प्राथमिकता देते हैं।
- ▼ हम युवा एवं नये रचनाकारों को भी प्रोत्साहित करते हैं।

Email : id
krishnaraj74@yahoo.com
upendra74@gmail.com

विचार दृष्टि

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केंद्रीय कानून 1956, नियम 8) के अनुसार विचार दृष्टि से संबंधित विवरण

प्रपत्र-4

प्रकाशक का नामः सिद्धेश्वर
प्रकाशन का स्थानः दिल्ली
प्रकाशन अवधिः त्रैमासिक
मुद्रक का नाम : सिद्धेश्वर
राष्ट्रीयता : भारतीय
पताः 'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-110092
मालिक का नाम व पताः सिद्धेश्वर
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

मैं सिद्धेश्वर यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

(सिद्धेश्वर)

तिथिः 22 मार्च, 2011

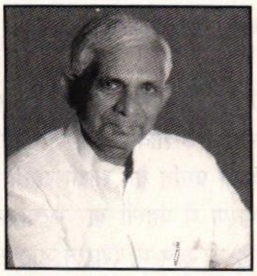

बिहार का सौवां साल: शानदार शतक

आज से ठीक एक सौ साल पहले यानी 22 मार्च, 1912 को बिहार और उड़ीसा प्रदेश का गठन हुआ था। इसके पहले तक बिहार बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा था। बिहार की स्थापना के 99 वर्ष पूरे होने और इसके सौवें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में बिहार की राजधानी, पटना के गाँधी मैदान में 22 मार्च से 24 मार्च 2011 को आयोजित किए जाने वाले मुख्य समारोह में बिहार दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर राजधानी के घरों में पौधा दान किया जाएगा तथा उनसे अनुरोध किया जाएगा कि वे 22 मार्च को अपने घर के आगे पौधा लगाएँ और दीप जलाएँ। राजधानी में हर दिन शहर के डेढ़ दर्जन जगहों यथा गाँधी मैदान, पटना कॉलेज, खगौल, दानापुर,फुलवारी शरीफ व पटना सिटी के मंगल तालाब पर नाट्य व नुक्कड़ नाट्य संस्थाएँ नाटकों की प्रस्तुति करेंगी। हर दिन कम से कम 24 नुक्कड़ नाटक होंगे। इस दौरान राज्य भर से जुटे रंगकर्मियों की स्थानीय ए॰ एन ॰ सिन्हा संस्थान में संगोष्ठी भी होगी। पहले दिन 'नया बिहार व सांस्कृतिक नीति' तथा दूसरे दिन 'बिहार रंगमच की पहचान' विषय पर रंगकर्मी अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' हिंदुस्तानी आशाओं के अनुरूप भले ही सफल नहीं हुआ हो, पर यह एक निर्विवाद सच है कि बिहार में यह आंदोलन कतई असफल नहीं हुआ था। 11 अगस्त 1942 को, पटना सचिवालय के सामने हुई भीषण गोली-बारी में सात नौजवानों ने जूझते-हँसते अपने प्राणों को भारत माँ की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। कुल 23861 लोग इस मुक्ति-युद्ध में जेल गए। बिहार में उस समय कुल 395 थाने में से 219 थाने पर हमले हुए और 80 थाने पर तो लोगों ने कब्जा ही कर लिया था। यह सच है कि बिहार में बदलाव की चिंगारी यहीं जनमती है, शोले भड़कते हैं, पर पता नहीं क्यों वह राख में तब्दील हो जाते हैं। आपने देखा नहीं सन् 1974 में जे॰पी॰ आंदोलन में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए बिहार सहित पूरे देश की तरुणाई थीं, इस बुजुर्ग की थरथराती आवाज से प्रेरणा प्राप्त कर तनकर खड़ी हो गई थी। हुकूमतें हिल गई थी और परिवर्तन के बिगुल की आवाज पूरी दुनिया में सुनाई पड़ती थी। जयप्रकाश नारायण जी के सपनों को उनके शिष्यों ने यहाँ तक पहुँचाया? यह तो कहिए कि इसी बिहार की धरती से जे॰ पी॰ आंदोलन की उपज नीतीश कुमार एक बार फिर उठकर खड़े हुए और उन्होंने यह साबित किया कि बिहार अपंग नहीं है। जिस बिहार को जे॰ पी॰ आंदोलन के लोगों ने ही गर्त में डुबो डाला था, उसे नीतीश कुमार ने बताया कि हमारी बुनियाद कितनी मजबूत है। यहाँ के नौजवान युवक-युवतियों ने वर्ष 2010 के बिहार विधान सभा चुनावों में बताया कि बिहार के नवनिर्माण में उनकी भूमिका मिसाल बनेगी और वे प्रदेश को अपनी सोच और कामों से गढ़ने की शुरुआत करेंगे। बिहार के नवनिर्माण के लिए वे अब डटकर खड़े हैं। तो आइए, बिहार के इस सौवें वर्ष में साथ रहकर, साथ चलकर और साथ-साथ बिहार के नव-निर्माण के लिए बढ़ने का आगाज किया जाए। ऐसा करने से बिहारी प्रतिमान (Model) निश्चित रूप से विकास की इबारत लिखेगा।

पिछले कई वर्षो में बिहार अपनी कुछ-उपलब्धियों और कुछ विवादों के कारण देश और दुनिया भर में चर्चा का विषय रहा है। वैसे भी बिहार के इतिहास, आर्थिक जीवन, साहित्य, संस्कृति, बौद्धिक विरासत , राज व्यवस्था, भौगोलिक परिस्थितियाँ, जनजातीय जीवन, कला एवं स्थापत्य, संगीत एवं नृत्य, ऐतिहासिक स्थल एवं स्मारक, पर्यटन, विविध संस्थाएँ तथा यहाँ की महान हस्तियाँ प्रमुख रही हैं जिनपर देश और दुनिया भर के लोगों का ध्यान केंद्रित रहा है। 22 मार्च 2011 को बिहार अपने गठन के 99 वर्ष पूरे कर शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है और उसके 10 करोड़ से भी ज्यादा लोग शताब्दी-वर्ष को पर्व के रूप में मनाएँगे। कभी शक्ति, शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र रहे बिहार ने न केवल विश्व को मुद्रा से अवगत कराया, बल्कि भारतीय राष्ट्रध्वज को अशोक चक्र दिया। सबसे कम साक्षरता दर होने के बावजूद बिहार ने अब तक असैनिक सेवा के सभी कैडर मिलाकर सबसे अधिक 15 प्रतिशत अधिकारी राष्ट्र को दिए हैं। केरल और तमिलनाडु मिलाकर जितने शिक्षित हैं, उससे अधिक अकेले बिहार में हैं। भारत के दो सबसे अधिक विकसित राज्य गुजरात और महाराष्ट्र से अधिक आई.आई.टी. के इंजीनियर अकेले बिहार से हैं। सबसे अधिक शिक्षित राज्य केरल से अधिक बिहार की छात्राएँ हर वर्ष स्नातक की डिग्री पाती हैं।

अतीत के आईने से निकलकर नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय एक बार फिर पूरी दुनिया के सामने अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की तैयारी कर चुका है। भारत के इस गौरव को पुनर्जीवित करने का श्रेय मुख्यमंत्री नीतीश को जाता है। वैसे इसे पुनर्स्थापित करने में जापान, चीन व सिंगापुर जैसी बाहरी देशों के साथ ही डॉ0 ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम और प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ0 अमर्त्य सेन ने भी अपना विशेष सहयोग दिया है। विश्वविद्यालय की स्थापना की दिशा में बिहार सरकार के प्रयास काफी सकारात्मक हैं। गौतम बुद्ध

की कर्म भूमि बिहार के नालंदा में शक्ल लेने के बाद यह विश्वविद्यालय शिक्षा के जरिए समूचे विश्व को एक सूत्र में पिरोने का काम करेगा।

बिहार का ऐतिहासिक महत्त्व सदियों पुराना है। बौद्धधर्म और जैन धर्म के उद्गम-स्त्रोत के रूप में बिहार ने विश्व को शांति ,अहिंसा और भाईचारे का संदेश दिया। मौर्यों ने एक योग्य, केंद्रीयकृत शासन प्रणाली का यहाँ निर्माण किया। सम्राट अशोक ने पहली बार एक कल्याणकारी राज्य का आदर्श प्रस्तुत किया। गुप्तकाल में यह क्षेत्र विद्या, साहित्य और विज्ञान की अद्‌भुत प्रगति का साक्षी रहा। 1857 में बाबू कुँवर सिंह और पीरअली जैसे देशभक्तों ने ब्रिटिश सत्ता को यहाँ से ललकारा। गाँधीजी ने चंपारण में पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग भारत में जन-आंदोलन के हथियार के रूप में सन् 1917 में किया। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को बिहार की भूमि ने ही प्रदान किया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण की 'संपूर्ण क्रांति' की कल्पना इसी क्षेत्र में व्यापक जन-आंदोलन का प्रेरणा-स्त्रोत रही। सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह के जन्म स्थान के रूप में बिहार आज भी एक तीर्थस्थल है। विरासत से मालामाल तथा प्राकृतिक सुरम्यता से भरपूर बिहार के राजगीर, नालंदा, वैशाली, विक्रमशिला और नालंदा विश्वविद्यालय आदि के भग्नावशेष बिहार की ऐतिहासिक विरासत की दास्तां को बखूबी बयां कर रहे हैं। बिहार का इतिहास जितना पुराना है, इतनी ही समृद्ध इसकी संस्कृति भी रही है। बिहार अनेक धर्मावलंबियों की भूमि है। बौद्ध, जैन, सिक्ख, ईसाई तथा सनातन धर्मों से यहाँ का गहन संबंध रहा है। बिहार अपने ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक वैभव, भौगोलिक संपन्नता, प्राकृतिक सुंदरता, वन संपदा और जीव-जंतुओं की विविधता की वजह से पर्यटकों के लिए स्वर्ग माना जाता रहा है। बिहार एक ऐसा राज्य है जिसकी धरती पर साधना कर एक सामान्य-सा इंसान राजकुमार सिद्धार्थ भगवान बुद्ध बन जाता है और उनके बताए सत्य और अहिंसा की राह पर चलने को पूरी दुनिया तैयार हो जाती है। यह वही धरती है जहाँ माता त्रिशला के पुत्र वर्द्धमान सम्मति, वीर, अतिवीर की सीमाओं को लाँघकर भगवान महावीर हो गए। जिस धरती ने गुरु गोविंद जैसी विभूति को जन्म दिया; जहाँ कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की; जो विक्रमशिला और नालंदा जैसे विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की पवित्र भूमि है; जो महाभारत के कर्ण की कर्मभूमि है और जहाँ कलिंग के युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने अपनी तलवार गंगा की गोद में डाल दी। याद रहे, चंद नेताओं के भ्रष्टाचार, घोटालों,चरमराती विधि व्यवस्था एवं अपहरण की घटनाओं से इस भूमि का मूल्यांकन भले न होता रहा हो, किंतु बिहार के आम व्यक्ति मेहनती, प्रतिभावान और ईमानदार हैं बिना जिनके श्रम से पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र जैसे राज्य रातों-रात शून्य पर आ जाएँ।

देर-सबेर बिहार को बँटना ही था, सो संसद में बिहार पुनर्गठन विधेयक 2000 पारित हो जाने के पश्चात् बिहार दो भागों में बँट गया। जयपाल सिंह से लेकर शिबू सोरेन जैसे नेताओं द्वारा पिछले सात-आठ दशक से चलाए जा रहे आंदोलन से झारखण्डी नेताओं का सपना पूरा हुआ। झारखण्ड की जनता फूली न समाई। दूसरी ओर शेष बिहार के लोग इसलिए मायूस नजर आए कि उसे वन संपदा के साथ-साथ कोयला, लोहा, ताँबा, गंधक, अबरख, मेंगनीज, बॉक्साइट, चूना, पत्थर, क्रौमाइट और यूरेनियम जैसे खादानों से तो वंचित होना पड़ा ही; बोकरो इस्पात संयंत्र, राँची स्थित भारी अभियंत्रण निगम (एच इ सी) जैसे बड़े-बड़े कल-कारखाने भी झारखण्ड के पल्ले पड़ गए। ले-देकर शेष बिहार में बची रह गयी- कृषि एवं चीनी मिलें। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि बिहार का विभाजन राजनीतिक कारणों से हुआ। आखिर क्या कारण था कि "बिहार का विभाजन उनकी लाश पर होगा" यह घोषणा करने वाले भी झारखण्ड राज्य के गठन का प्रस्ताव लोकसभा में भेजने पर मजबूर हुए। खैर जो हो, झारखण्ड के गठन से उसे विकास की गति मिलनी चाहिए थी, मगर राजनीतिक संकीर्णता और अवसरवादिता के दुष्परिणामस्वरूप वह राज्य विकास से अब तक अछूता रहा। चूंकि इस राज्य की जनता बेजुबान थी इसलिए वह अपनी बात सही तरीके से नहीं कह सकी। इसके चलते उसकी और अधिक उपेक्षा ही हुई। यह वही क्षेत्र है जिसकी बदौलत बिहार को रत्नगर्भा कहा जाता था। दरअसल हुआ यों कि विकास का लाभ बिचौलिये उठा रहे हैं।

यह सही है कि झारखण्ड राज्य के गठन के बाद शेष बिहार की अर्थव्यवस्था चरमरा गई और इसे पूर्णतः केंद्रीय अनुदान पर आधारित रहना पड़ रहा है जिसके निदान के लिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की माँग यहाँ की जनता द्वारा लगातार की जा रही है। किंतु यह भी सच है कि बिहार में कृषि की प्रबल संभावनाएँ मौजूद हैं, क्योंकि सिंचाई के लिए गंगा, सोन और गंडक जैसी नदियाँ हैं जिनमें अथाह पानी है। बदली हुई परिस्थिति में उत्तर एवं दक्षिण बिहार में कृषि आधारित चीनी, जूट, कागज एवं खाद्य प्रसंकरण उद्योग तथा मछली एवं दुग्ध उत्पादन का विकास कर बिहार की समृद्धि के द्वार खोले जा सकते हैं। जरूरत केवल इस बात की है कि दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, नई कार्य संस्कृति, विकास की ठोस रणनीति व भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन प्रदान कर बिहार को समृद्ध बनाया जा सकता है। खुशी इस बात की है कि विगत 2005 में बिहार की सत्ता पर विराजमान होने के बाद बिहार की जनता ने भरपूर जनादेश प्रदान कर कर्मठ, निष्ठावान, सूझबूझ तथा दृढ़ इच्छाशक्ति वाले नीतीश कुमार जैसे परिपक्व नेता को वर्ष 2010 में हुए बिहार विधान सभा चुनावों के बाद दूसरी पाली में बिहार की गद्‌दी पर बैठाया है जिन्होंने बिहार के नागरिकों तथा नेताओं में सकारात्मक इच्छाशक्ति जाग्रत करते हुए भ्रष्टाचार को मिटाने का संकल्प लिया है और उस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। आय से अधिक संपत्ति जब्त करने तथा सेवा का अधिकार कानून बनाकर उन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। पंचायती राज में महिलाओं और अति पिछड़ों

की भागीदारी सुनिश्चित कर मुख्यमुंत्री ने समाज के हाशिए पर पड़े लोगों को देश की मुख्यधारा में लाने का सराहनीय प्रयास किया है। वर्ष 2010 चुनाव के बाद एक अच्दी बात यह देखने में आई है कि बिहार की जनता सहित प्रायः सभी दलों के नेताओं ने दलगत भावना से ऊपर उठकर बिहार के विकास के मुद्दे पर पूरी एकजूटता के साथ काम करने तथा राज्य की परियोजनाओं की स्वीकृति दिलाने से लेकर उसके कार्यान्वयन की दिशा में सामूहिक पहल करने का कारगार संकल्प लिया है और नए बिहार के निर्माण में तन-मन और धन से मुख्यमंत्री के साथ खड़े हैं। फिर भी मंजिल तक पहुँचने में कई चट्टान अवरोध बनकर खड़े हैं जिससे पार पाने के लिए कुछ नई पहल करने की जरूरत है ताकि मंजिल तक पहुँचने में हमारे कदम तेजी से बढ़ें। इसलिए मेरे विचार से शासन व्यवस्था की प्रथम कड़ी पंचायती राजव्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार के ग्राफ को नीचे करने के लिए सरकार को ठोस पहल करने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार में लिप्त सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारियों पर लगानी होगी, तभी नया बिहार बन पाएगा। बिहार के मुख्यमंत्री भ्रष्टाचार मुक्त बिहार बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।

जो हो, पर इतना तो तय है कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्यकलापों पर न केवल इस देश के सभी राज्यों, बल्कि पूरे विश्व की निगाहें हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि बदलाव और न्याय के साथ विकास की राह पर चलकर मंजिलें तय करने का पक्का इरादा जाहिर करने वाली बिहार की जनता को समुचित सहयोग करने के लिए आगे आना होगा और नए बिहार के सपने को जन-जन तक पहुँचाना होगा। अँधकार को धिक्कारने की बजाय उन्हे स्वयं एक दीप जलाना होगा। वैसे कोई भी बदलाव की बयार बिहार से ही चलती है। कुछ इसी ख्याल से राष्ट्रीय विचार मंच के सभी सदस्य और राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' जन चेतना जाग्रत करने हेतु अग्रसर हैं और आपके समक्ष 'बिहार विशेषांक' प्रस्तुत हैं।

कहते हैं-

कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे में ढल गए,
कुछ लोग थे जो वक्त के सांचे में बदल गए।

बिहार के लोगों द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करने के ज़ज़्वात को सलाम।

संपादक

नव वर्ष - 2011 संपूर्ण बिहारवासियों के लिए मंगलमय हो।

मो. अनिकूर रहमान (सचिव एम.आर. जनता महाविद्यालय, महेश पट्टी उजियारपुर, समस्तीपुर (बिहार), फोन.- 06278288215

बिहार का विकास-मॉडल

❑ रीता झा

बिहार उत्तरी भारत की पवित्र गंगा घाटी में स्थित प्राचीन भारतीय इतिहास का एक गौरवशाली प्रदेश है जिसकी अपनी एक विशिष्टता रही है –विशिष्ट संस्कृति, विशिष्ट भाषा, विशिष्ट कला और विशिष्ट सोच भी । ऐसा कहा जाता है कि सृष्टि का आरंभ भी यहीं से हुआ था–बांका जिला स्थित मंथन गिरि मंदार इसका जीता जागता प्रमाण है – जहाँ पर भगवान विष्णु से उत्पन्न मधु एवं कैटभ को भगवान ने अपने हाथों से मारा तथा भगवान मधुसूदन नाम से विख्यात होकर बौंसी में स्थित हैं । बाद में इस मंदार पर्वत को मथानी के रूप में उपयोग कर सृष्टि का विस्तार आरंभ किया गया। यह राज्य महात्मा बुद्ध और 24 जैन तीर्थंकरों की कर्मभूमि भी रही है । कभी यहाँ पर गूँजा था बौद्धों का **''अहिंसा परमो धर्मः'** तथा **'अप्प दीपो भव'** का मंत्र, तो कभी मंडन मिश्र तथा आदि शंकर का शास्त्रार्थ – **'ब्रहं सत्यम् जगन्मिथ्या जीवो ब्रहैव नापराः'** के अलौकिक उद्‌घोष के साथ–ही–साथ **''या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता.......''** के रूप में लौकिकता को वरण करने के लिए शक्ति प्राप्ति का आग्रह भी। कभी गौरवशाली वैशाली का गणतंत्र सबको साथ लेकर चलने का, सभी जीवों के विकास करने का, सम्पूर्णप्रभुत्वसम्पन्न होने का संदेश, तो कभी महात्मा चाणक्य की भीषण प्रतिज्ञा–अन्याय, अत्याचार को जड़ से उखाड़कर छोटे–छोटे राजवंशों को मिटाकर अखंड भारत का निर्माण कर उसकी सत्ता जमीन से जुड़े तबकों को प्रदान करने की तथा गांधी का आततायी अंग्रेजों के विरूद्ध प्रथम शंखनाद, तो कभी हुआ था लोकनायक जय प्रकाश की **'सम्पूर्ण क्रांति'** का सूत्रपात । यह भूमि क्रांति की भूमि भी है, तो शांति की भी । निर्माण के साथ–साथ निर्वाण की स्थली भी रहा है बिहार । समय रूकता नहीं–सत्तायें आती हैं, जाती हैं । उत्थान तथा पतन होता रहता है – ज्ञान तथा अज्ञान, रौशनी तथा अंधकार का नर्तन होता रहता है – इस विश्व पटल पर । बिहार भी इससे अछूता नहीं रहा । पुरानी गलतियों से सीख लेकर हमें अपने ही हाथों से, अपने ज्ञान से बिहार का नव निर्माण करना है । अब बिहार के वर्तमान परिदृश्य का जरा अवलोकन करें –

बिहार भारत के प्रमुख राज्यों में से एक है । इसके उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में झारखण्ड राज्य हैं । इसका विस्तार 21^0 58' 10'' उत्तर से 27^0 31' 15'' उत्तर अक्षांश तथा 82^0 19' 50'' पूर्व से 88^0 17' 40'' पूर्व देशांतर में है । इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किलोमीटर तथा इसकी आबादी 82,998,509 हैं । यहाँ पर 38 जिले हैं। यहाँ अनेक नदियाँ बहती हैं जिसमें प्रमुख है गंगा। अन्य नदियाँ हैं सोन, पुनपुन, फल्गु, कर्मनाशा, दुर्गावती, कोशी, गंडक, घाघरा बागमती आदि। कुछ साल पहले तक यहाँ की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी– अराजकता एंव पिछड़ापन राज्य की नियति हो गई थी। वह एक दुःस्वप्न था। उसे भूलना ही होगा। पिछली जद(यू) – भाजपा नीत सरकार ने कुछ सराहनीय कार्य किये यथा पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू किया नतीजा हुआ 2010 के चुनाव में 55 प्रतिशत महिलाओं ने वोट डाले जबकि कुल मतदान हुआ 52.10 प्रतिशत और अब तक की सबसे अधिक 33 महिला विधायक चुनी गयी ।

भाजपा सदृश कथित मुस्लिम विरोधी पहचान वाली पार्टी से गठजोड़ के बावजूद उन मुस्लिम बहुल 43 विधान सभा क्षेत्रों में भाजपा को 17, जद(यू) को 14 सीटें मिली। सबसे आश्चर्यचकित करने वाली बात रही अमौर, बायसी और प्राणपुर इत्यादि क्षेत्रों में – जहां पर मुस्लिम मतदाताओं का प्रतिशत क्रमशः 74.30, 69.04 और 49.27 है जिनके सहयोग के बिना जीतना मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है, वहाँ पर भी भाजपा जीती है। **ये जीत सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के राजनैतिक परिदृश्य को बदलकर रख देगी। अब विकास चाहिए, काम चाहिए – मात्र नारेबाजी नहीं।** ये सब हुआ – अल्पसंख्यक मुस्लिम बालिकाओं के लिए व्यावसायिक उन्मुखीकरण तथा आर्थिक निर्भरता हेतु 'हुनर' योजना के क्रियान्वयन के कारण, इनके बच्चों के लिए 'उत्थान केंन्द्र' तथा 'तालीमी मरकज' के कारण, बालिकाओं के मध्याह्न भोजन, साइकिल तथा उचित शिक्षा–दीक्षा की प्राथमिकता के कारण। जनता एहसान फरामोश नहीं होती – काम का पुरस्कार जरूर देती है – अच्छे काम का अच्छा तथा बुरे काम का बुरा। सब कुछ समझती है। पब्लिक है–सब कुछ जानती है।

पिछली सरकार ने बाढ़ तथा सुखाड़ का डटकर सामना किया । नहीं कुछ से तो कुछ करना अच्छा है। आगे और भी बहुत कुछ करना है। सड़क, कानून व्यवस्था तथा स्वास्थ्य के भी क्षेत्रों में सुधार हुआ है।

'मुख्यमंत्री महादलित पोशाक योजना', 'शौचालय निर्माण योजना' तथा 'जीवन दृष्टि योजना से' महादलितों तथा वचिंतो के लिये भी कार्य हुए। 'लक्ष्मीबाई विधवा पेंशन योजना' जैसी मानवीय योजनाऐं भी आई।

परन्तु, यह गम्भीरता से आकलन करने की बात है कि महादलितों, दलितों, मुस्लिमों इत्यादि वोटों के मिलने के साथ ही व्यापारियों, नौकरशाहो, सभी जातियों, धर्मों का वोट मिलने के बावजूद मात्र दो से तीन प्रतिशत वोट ही सत्तारूढ़ गठबंधन

को विपक्षी दलों से अधिक मिले हैं। तो इस सरकार के लिए इतराने की भी बातें नही हैं। अगर इस सरकार ने जरा भी जनता की आकांक्षाओं और विश्वास के साथ छल या विश्वासघात किया तो इसे भी जनता नहीं छोड़ेगी और छोड़ना भी नहीं चाहिए। सरकार के कार्यों का कच्चा चिट्ठा विपक्षियों के पास, टी0वी0 चैनलों, अखबारों, रेडियो के पास नहीं होता है यह होता है – जनता के पास । इतिहास गवाह है जो सरकार जनता के साथ छल करती है, समय आने पर जनता उसे दण्डित करने से नहीं हिचकती है।

ऐसा भी संज्ञान में आया है कि पिछली सरकार ने शराब के काफी ठेके खुलवाये हैं । परन्तु इसका असर अभी हुआ नहीं है इसीलिए इस चुनाव में तो महिलाओं ने 55 प्रतिशत वोट देकर नीतीश सरकार को बहुमत दिलवाया है । यही महिलाएँ इस नीतीश सरकार को आगे के चुनाव में दण्डित कर सकती हैं जब इनके पति, भाई और अन्य संबंधी शराब पीकर इन्हें तथा इनके बच्चों को प्रताड़ित करेंगे। आन्ध्र–प्रदेश इसका उदाहरण रहा है। इससे सरकार की राजस्व आय तो अधिक हुई है परन्तु सरकार को इतना विवेक तो अवश्य होना चाहिए कि किस मद से राजस्व कमाना विवेकसंगत होता है और किस से नहीं । ये सरकार ऑखें बंदकर एक गरीब आदमी का ध्यान करे और अपने आप से पूछे कि शराब ठेके से उस आदमी को फायदा होगा या नहीं । उत्तर स्वयं मिल जायेगा । **सरकार शराब के ठेकों पर प्रतिबंध और वह भी पूरा प्रतिबंध लगाये।** इससे महिलाओं तथा बच्चों का पूर्ण आशीर्वाद इन्हें मिलेगा । भ्रष्टाचार तथा शराब मिलकर ही विकास की गति को रोकते हैं । इसके साथ–ही–साथ आपराधीयों की संख्या मे भी वृद्धि होती हैं। इस बार तो सरकार का चुनाव अपराधियों की धर–पकड़ के कारण ही हुआ है। कानून–व्यवस्था में सुधार की तो इस सरकार की उपलब्धियों में गणना होती है। एक तरफ तो सरकार भ्रष्टाचार तथा अपराध को नियंत्रित करने की कार्यवाही कर रही है और दूसरी तरफ इहें बढ़ावा देने वाले प्रमुख काकर शराब के ठेके भी खुलवाने में सरकार लगी हुई है। यह युक्ति संगत नहीं है। यह विरोभासी–कार्यवाही जनता खूब समझ रही है। अभी फैसला सरकार के हाथों में है, वरणा आगे का फैसला तो जनता कर ही देगी।

इसी तरह, जो पार्टियाँ मुस्लिम समुदाय को पहले भाजपा का डर दिखाकर उनसे वोट लेने में कामयाब हो जाते थे उनका समय अब लद गया है । यदि ये सरकार अल्पसंख्यक समुदायों को साथ लेकर चलती है और इनके आर्थिक उत्थान तथा सुरक्षा के लिये ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक कार्य करती है तो सब कुछ ठीक–ठाक रहेगा और इनका भरपूर समर्थन भी सरकार को मिलेगा अन्यथा इसके लिये सरकार ही दोषी होगी, जनता नहीं । **अल्पसंख्यक केवल मुस्लिम ही नही बल्कि बौद्ध, सिख, जैन, ईसाई इत्यादि समुदाय भी बिहार में रहते हैं, इनके लिए भी अल्पसंख्यक योजनाएँ होनी ही चाहिए।**

भ्रष्ट नौकरशाहों तथा जनप्रतिनिधियों, कर चोरी करने वालों को भी सरकार को पूरी तरह दंडित करना ही होगा। दंडित करने के दिखावे मात्र से काम नहीं चलेगा । सब कुछ जमीन पर होते देखना चाहती है, यहाँ की जनता । इतना ही नहीं आपके हर कार्यों का दूसरे प्रदेश की जनता भी आकलन कर रही है। जनता पुराने सरकारों की कलाबाजियों से पूरी तरह परिचित है। अतः इस वर्तमान सरकार पर भी जनता की सशंकित निगाहें लगी हैं। शुरू में पिछली सरकार ने भी ऐसा ही किया था --- जगह–2 छापेमारी की थी पर बाद में क्या हुआ यह सभी जानते हैं । परन्तु इस सरकार में संजीदगी दिखाई देती है । अब आगे आने वाला समय ही बतायेगा।

जहाँ तक आगे विकास की बात है तो विकास एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है । विकास के केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक पहलू भी होते हैं। विकास की हमारी प्राचीन अवधारणा कहीं अधिक व्यापक थी इसमें केवल व्यक्ति के विकास की ही बातें नहीं थी । विकास की अवधारणा सभी–जड़ हो या चेतन–को आवृत्त कर व्याप्त थी । जहाँ तक चेतन की बात करें तो वह केवल व्यक्ति, समाज, देश या विश्व के मानव की ही बातें नहीं थी, वह संसार के सभी जीवों–मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट–पतंग – जितने भी गोचर एवं अगोचर प्राणी थे – उन सभी की बातें थीं । अगर हम जड़ की बातें करें तो वह हवा, पानी, धरती, आकाश, अन्तरिक्ष के विकास की भी बातें थीं और थीं जड़ तथा चेतन के बीच सेतु बनने की भी । इस ब्रह्माण्ड में हमारा एकल विकास संभव नहीं हो सकता क्योंकि हम सभी एक दूसरे से गूँथे हुए हैं । इसी सन्दर्भ में एक श्लोक स्मरणीय है जो **'शांति वचन'** के समय बोला जाता है –

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ, शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ, शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

अर्थात् व्यक्ति विशेष की शान्ति के लिए जल, पृथ्वी, अन्तरिक्ष इत्यादि में भी शान्ति की आवश्यकता है । सिर्फ इतना ही नहीं। यहाँ पर तो शांति को भी शांति मिलने की कामना की गई है इस विकास की अवधारणा में । आज के संदर्भ में विकास की इसी अवधारणा की तरफ पूरा विश्व धीरे–धीरे बढ़ता प्रतीत होता है। हम आर्थिक शक्ति एवं उन्नति प्राप्त करें परन्तु समाज, देश, विश्व ही नहीं बल्कि प्रकृति से भी सामंजस्य स्थापित करें। पहले की तरह आजकल भीAll Inclusive growth and development की भी बातें हो रही हैं । प्राचीन परिप्रेक्ष्य में एक साधारण उदाहरण से इसे समझा जा सकता है । हमारे यहाँ अपनी थाली में से भोजन का अग्रभाग गाय के लिये तथा बचे हुये को कुत्ते और कौवे के लिये निकालने की

परम्परा थी। बात तो छोटी सी है परन्तु इसके पीछे का भाव, अर्थ तथा प्रभाव गहरा था । भारत जैसे कृषि आधारित देश के लिये जहाँ की कृषि जानवरों पर निर्भर करती है ऐसा करना विवेक संगत कार्य था । क्या आजकल की All Inclusive growth Theory में इस तरह की उदात्त अंतरंगता स्थापित करने की भी कोई भावना है जिससे हम अपनी प्रकृति के साथ भी सहर्ष रह सकें। आजकल जानवरों की रक्षा के नाम पर जंगलों से आदिवासियों को विस्थापित किया जा रहा हैं। यही आदिवासी सदियों से जंगल में रह रहे हैं । न तो इन्हें जानवरों से और न जानवरों को इससे कभी खतरा हुआ । ऊँची विकास दर का हवाला देते हुए अर्थव्यवस्था की गुलाबी तस्वीर पेश की जा रही है। All inclusive growth philosophy की बात की जाती है। इसके बारे में अच्छे एंव ऊँचे दार्शनिकों एंव विचारकों के लेख छपते हैं। पर यह दावा उस समय धोखा साबित हो जाता है जब 'राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो' की छानबीन की जाती है तो पता लगता है कि हमारे देश में कृषक तथा कृषि गहरे संकट में हैं। **1997 से लेकर पिछले साल 2009 तक यानि पिछले तेरह साल में देश में दो लाख सोलह हजार पाँच सौ किसानों ने आत्महत्या की** है और पिछले साल तो देशभर में सत्रह हजार तीन सौ अड़सठ किसानों ने आत्महत्या की जबकि इसी दरम्यान देश में ऊँची विकास दर का ढिंढोरा पीटा गया। इसका साफ अर्थ है कि कृषक तथा कृषि के लिए यह विकास दर नहीं है। अतः कहीं–न–कहीं हमारे विकास की परिकल्पना में गंभीर खामी है। इस समय सौभाग्य से हमारे प्रदेश में सरकार की बागडोर उनके हाथों में है जिसमें एक तो किसान का बेटा है तो दूसरा उद्यमी का। बस! यही सरकार इसका समाधान निकाल सकती है। **कृषक तथा कृषि की हालत तभी सुधरेगी जब कृषि क्षेत्र का उद्योग खासकर कृषि आधारित उद्योगों से गठबंधन होगा। वर्तमान जद(यू)– भाजपा के गठबंधन की तरह। कृषि आधारित उद्योगों में किसानों की भागीदारी निश्चित कर दी जाय तथा इस प्रदेश की जमीन की प्रकृति का अध्ययन कर ऐसी कृषि–क्रान्ति का सूत्रपात किया जाय जिसमें पंजाब तथा हरियाणा जैसे हरित–क्रान्ति वाले प्रदेशों की कृषि नीति की कमियां नहीं हों परन्तु उत्पादन अधिक हो। कृषक की आमदनी बढ़े।** बिहार प्रदेश की पंचवर्षीय योजनाएँ कृषि तथा कृषक को केन्द्र में रखकर बनायी जाय। कृषि की हालत सुधरने से ही 60 से 70 प्रतिशत आबादी की हालत स्वतः सुधर जायेगी। तभी 'घाघ' की पुरानी कहावत चरितार्थ होगी –

"उत्तम खेती, मध्यम बान ।
नीच चाकरी, भीख निदान। "

पर यहाँ पर ये सभी बातें महत्वहीन हैं । विकास के नाम पर शोषण हो रहा है। विकास की पाश्चात्य अवधारणा की जगह हमें प्राचीन भारतीय अवधारणा का चिन्तन मनन करते हुये अपनी आवश्यकता अनुरूप नई अवधारणा गढने की जरूरत है। फिलहाल हम बिहार के विकास की बातें करें – थोड़ा बहुत विकास तो बिहार में पिछले नीतीश जी की अगुवाई में जे डी (यू)–बी जे पी गठबंधन वाली सरकार में हुआ है जिसमें कानून व्यवस्था में तथा सड़क में विशेष सुधार दृष्टिगोचर हो रहा है। इसके साथ ही स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली इत्यादि सभी क्षेत्रों में विकास की शुरूआत हुई है। परन्तु इससे भी आगे बढ़कर बहुत कुछ ऐसा करने की आवश्यकता है जिससे पूरे बिहार का सर्वांगीण विकास हो तथा पूरा प्रदेश पूर्णतया आत्मनिर्भर हो और दूसरे प्रदेशों के लिए एक मिसाल भी। हिन्दुस्तान के सभी प्रदेश एक दूसरे से आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक मामलों में सर्वथा भिन्न हैं । अतः हमारे प्रदेश बिहार का विकास मॉडल भी अनूठा होना चाहिये – अपनी आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक स्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया गया मॉडल ही कामयाब हो सकता है । विकास की प्राथमिकता नियत करना वैसे तो कठिन ही होता है और एक तरह से मुद्दों के साथ नाइंसाफी भी । विकास खासकर आर्थिक विकास तो जीवन से एकदम जुड़ी हुई बातें होती हैं और जीवन की हर जरूरतें प्राथमिक ही होती हैं । फिर भी व्यावहारिक तौर पर तो प्राथमिकता तय करनी पड़ती है – खासकर जहाँ हमारा बिहार आर्थिक तौर पर सभी प्रदेशों की तुलना में अंतिम पायदान पर है । वह प्राथमिकता क्या हो इसकी ही विवेचना यहाँ पर की गई है –

भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार विकास की जड़ पर ही प्रहार करता है अतः विकास को जीवित रखने और उसकी रफ्तार तेज करने के लिए भ्रष्टाचार की ही जड़ों पर सबसे पहले प्रहार करने की आवश्यकता है । ऐसा हम सभी मानते हैं कि अगर किसी योजना के तहत 100 रूपये का आवंटन किया जाता है तो आम जनता तक आते–आते यह राशि 20 रूपये हो जाती है अर्थात् 80 रूपये भ्रष्टाचारियों के हाथों में चले जाते हैं। अगर किसी प्रदेश का योजना व्यय 14,000 करोड़ रूपया हो तो इसका सीधा अर्थ हुआ कि इस योजना व्यय में काम केवल 2,800.00 करोड़ रूपये का ही हुआ होगा तथा शेष 11,200 करोड़ रूपये भ्रष्टाचारियों की जेब में। वास्तविकता कितनी कड़वी है ? इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते । यह तो केवल एक अनुमान है और इस पर प्रदेश की जनता भी सहमत हैं। यह बात केवल एक प्रदेश के लिए नहीं है बल्कि समूचे हिन्दुस्तान के लिए भी सच है। यह अत्यन्त सोचनीय तथा भयावह स्थिति है । भारत में भ्रष्टाचार किस हद तक है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश के भ्रष्ट लोगों ने 462 अरब डालर की राशि स्विट्जरलैंड के बैंकों या कर चोरी हेतु ऐसे ही अन्य पनाहगाहों में जमा कर रखी है। अंतराष्ट्रीय संगठन 'ट्रांसपरेंसी इटरनेशनल' की भारत की कार्यकारी निदेशिका अनुपमा झा ने कहा कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वालों को 11 चुनिदां बुनियादी सेवाएं

हासिल करने के लिए एक वर्ष में 900 करोड रूपये की रिश्वत देनी पड़ती है । यह तो क्रूरतम अपराध है। अमानवीय कृत्य है। इसे तत्क्षण रोकना चाहिए । भ्रष्टाचार रोकने मात्र से ही हम

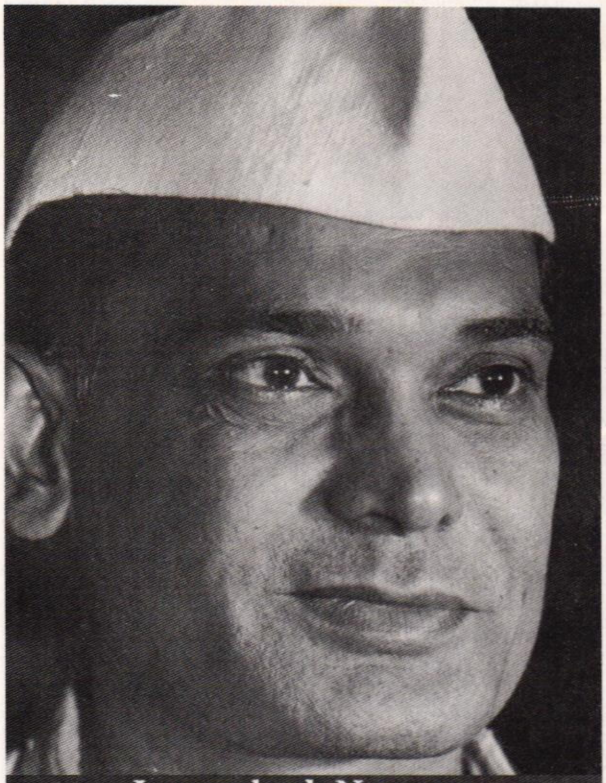

Jayaprakash Narayan

हिन्दुस्तानियों की जेब से अनुचित रूप से निकलने वाली यह राशि 900 करोड़ रूपये रूक जायेंगी, तथा हमारी योजना व्यय का सम्पूर्ण उपयोग हो जायेगा। **अतः भ्रष्टाचार रोकना भी निवेश (Investment) बढ़ाने के समान है। जिस अनुपात में भ्रष्टाचार रूकेगा, उसी अनुपात में हमारी प्रगति होगी ।** भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिये और भी तमाम कदम उठाने की जरूरत है । मनरेगा में भ्रष्टाचार है, तो इन्दिरा आवास आबंटन में भी । बी पी एल हो या ए पी एल, सूची बनाने में ही व्यापक गड़बड़ी की जा रही है । जन वितरण प्रणाली में अलग तरह का भ्रष्टाचार है । गरीबों को अनाज ही नहीं मिलता । प्रखंड कार्यालय हो या थाना– सभी भ्रष्टाचार के गढ़ हैं । किसी भी कर्मचारी के पास काम के लिये जायें तो सभी घूस माँगते हैं– और कहते हैं क्या करें ऊपर तक पहुँचाना होता है । कौन है ऊपर जिसे यह पहुँचाना होता है ? सरकार या आफिसर – अगर आफिसर है तो सरकार कार्यवाही कर सकती है लेकिन यदि सरकार है तो फिर कौन बचायेगा ? भ्रष्टाचारी कहाँ पर हैं ? कैसे काम करते हैं ? इसे कैसे रोकना है ? इत्यादि बातें सभी को मालूम है। इसे रोकने का शासन तंत्र सरकार के हाथ में ही है। चाहिए बस एक दृढ़ राजनैतिक इच्छा–शक्ति जो कि इस सरकार में दृष्टिगोचर भी हो रही है।

जनता ने इस सरकार को अपार समर्थन दिया है पर समर्थन जिम्मेदारी भी लाता है। भ्रष्टाचारियों के विरूद्ध उठाये गये सरकार के हर कदम पर जनता की बखूबी नजर है । सुप्रीम कोर्ट की एक खंडपीठ ने किसी मामले में सही कहा है कि आम आदमी कहीं ज्यादा प्रबुद्ध है। यह मत समझिए कि यहाँ के लोग बेवकूफ हैं। **बिहार सरकार जनता पर भरोसा कर भ्रष्टाचार के विरूद्ध कदम उठाये। जनता आप पर भरोसा कर रही है। सरकार केवल इतना ही ध्यान रखे – भ्रष्टाचारी बचे नहीं और निर्दोष किसी भी तरह फंसे नहीं। 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्टकृताम्'।** भ्रष्टाचारियों को घेर कर केवल पकड़ना ही जरूरी नहीं है। इससे भी ज्यादा जरूरी है **भ्रष्टाचारियों द्वारा लूटे हुए धन को फिर से सरकारी खजाने में लाना अर्थात् जनता का पैसा जनता को देना।** इस प्रयास में उठाया गया हरेक कदम स्वागत योग्य है। इस क्रम में सन् 2009 में बनाया गया कानून–जिसमें भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों की आय से अधिक सम्पत्ति को जब्त करने का प्रावधान है और जिसके तहत कार्रवाई भी शुरू हो गई है – स्वागत योग्य कदम है। क्या ऐसी ही कार्यवाही भ्रष्ट जनप्रतिनिधियों, कर चोरी करने वालों तथा अन्यों लोगों पर भी होगी ? क्या यह कार्य निष्पक्ष होगा ? यह आगे आने वाला समय ही बताएगा । अभी तक तो भरोसा है कि आगे भी ऐसा ही होगा।

अभी हाल में बिहार सरकार ने विधायक कोष को खत्म कर दिया है। यह एक अच्छा कदम है । विधायिका का कार्य है विधि विधान अर्थात् नियम कानून बनाना न कि कार्यपालिका के कार्य को अपने हाथ में लेना। रोड बनाना, बाँध बनाना इत्यादि काम (एम0 एल0 ए0 या एम0 एल0 सी0) विधायक या विधान परिषद के सदस्य का नहीं होता है । उनका काम है – नौकरशाहों से काम लेने का, समुचित दिशा–निर्देश देने का । परन्तु, अगर जनप्रतिनिधियों की प्रबल इच्छा हो ही जाये तो इसके विकल्प के बारे में विचार करने की भी जरूरत है। एक राय यह भी है कि इसके लिए एक स्वतंत्र कोष की स्थापना की जाय जिसमें सभी विधायकों (विधान सभा तथा विधान परिषद) के नाम से रूपया हो तथा पूरे विधानसभा तथा विधान परिषद के सभी विधान सभा एवं परिषद क्षेत्रों का (Constituencies) एक स्वतंत्र सर्वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट द्वारा कराया जाय जिससे यह पता लग सके कि किन–किन क्षेत्रों में इस फंड का उपयोग कहाँ–कहाँ पर और किस क्रम में होना चाहिए। इससे Organised development अर्थात् व्यवस्थित विकास होगा और जनप्रतिनिधियों पर पक्षपात का भी आरोप नहीं लगेगा। साथ ही जनप्रतिनिधि भी जनता को यह नहीं कहेंगे कि मेरी सरकार नही है या मैं मंत्री नहीं हूँ इसलिए कोई काम नहीं हो पा रहा है। जनता के साथ–साथ जनप्रतिनिधि भी उपेक्षित महसूस नहीं करेंगे। जहाँ तक इस फंड के दुरूपयोग

की बातें हैं तो इसके लिए भ्रष्टाचार निरोधक तंत्र को सशक्त करना चाहिए। भ्रष्टाचार के निरोध का काम तो किसी भी सरकार की पहली प्राथमिकता होना चाहिए क्योंकि **भ्रष्टाचार का पहला शिकार भूमिहीन खेतिहर मजदूर, छोटे व सीमांत किसान एवं हमारी सामाजिक व्यवस्था के अंतिम पायदान पर स्थित गरीब, शोषित, दलित तथा पीड़ित होते हैं। इनकी सुरक्षा करना हरेक सरकार की पहली प्राथमिकता होती है।** सम्पन्नों के द्वारा किया गया भ्रष्टाचार उनके लोभ को बढ़ाता है तो गरीबों को भुखमरी और अधिक गरीबी की ओर ढकेलता है। इस दिशा में त्वरित कार्यवाही की अपेक्षा है क्योंकि इस दिशा में की गई देरी एक तरफ कई भ्रष्टाचारियों को प्रेरित करती है तो दूसरी तरफ साथ ही साथ कई जरूरतमंदों की मुसीबतें भी बढ़ाती है। भ्रष्टाचार के बारे में तो बिहार सरकार को Zero tolerancce की त्वरित नीति अपनानी होगी। अतः बिहार सरकार द्वारा जारी रिपोर्ट कार्ड 2009 में उल्लिखित " **जो बिहार आज सोचता है कल देश उसे अपनाता है"** की जगह अब यह लिखा होना चाहिए कि " जो बिहार अभी करता है, कल देश उसके बारे में सोचना शुरू करता है" क्योंकि केवल सोचने से कई गुना अच्छा होता है सोच–समझकर कार्य करना । अब कार्य करने का समय आ चुका है ।

कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग : बिहार गाँवों का प्रदेश है। यहाँ की 85 प्रतिशत आबादी ग्रामीण है। यहाँ के सभी गाँव शत्–प्रतिशत कृषि पर निर्भर हैं । अतः यह कहना उचित है कि बिहार पूरी तरह कृषि पर आधारित है। राज्य के बँटवारे के बाद कल–कारखाने झारखण्ड में चले गये। इस प्रदेश को प्रत्येक वर्ष बाढ़ तथा सुखाड़ से जुझना पड़ता है। जहाँ देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या 28 प्रतिशत है वहीं बिहार में इनकी संख्या इससे दोगुनी अर्थात् लगभग 55 प्रतिशत है। देश में प्रति व्यक्ति आय 44 हजार रूपये से ज्यादा है, जबकि बिहार में मात्र 14 हजार रूपये। बिहार में पिछले 25 साल से कृषि क्षेत्र में निवेश हुआ ही नहीं है। एक अनुमान के अनुसार, बिहार को सही तौर से विकसित करने के लिए लगभग चार लाख करोड़ रूपये की आवश्यकता है परंतु योजना आयोग से मिलते हैं – केवल 21 हजार करोड़ रूपये। कैसे चलेगी सरकार ? ले देकर बचती है निवेश की बात। पर कृषि में निवेश की संभावना क्षीण है क्योंकि कृषि बिहार में पूरी तरह घाटे का ही सौदा है और घाटे में कोई निवेश नहीं करता। अतः बिहार सरकार को कृषि क्षेत्र का मोर्चा खुद ही सँभालना होगा। बाढ़ रोकने के लिए राज्य सरकार को भारत सरकार से

मिलकर नेपाल सरकार से बात करनी होगी। सुखाड़ रोकने के लिए नहर की बदहाल स्थिति को सुधारना तथा बिजली का उत्पादन बढ़ाना होगा। **बिजली उत्पादन के परम्परागत उपायों के साथ ही गैर परम्परागत स्रोतों यथा सोलर, बायो गैस इत्यादि से कुल ऊर्जा जरूरत का कम से कम 20 प्रतिशत उत्पादन करने का लक्ष्य रखा जाये।** इसमें लागत भी कम है, कच्चा माल भी उपलब्ध है तथा जहां पर पारम्परिक बिजली नहीं पहुँची है वहाँ भी इसकी शुरूआत कर सकते हैं । इसके लिए केन्द्र के गैर पारंपरिक ऊर्जा मंत्रालय से बात करनी चाहिए। प्रयास करने पर इन क्षेत्रों में निवेश हो सकता है।

हरेक ब्लॉक की कृषि–भूमि की प्रकृति का अध्ययन कर अलग–अलग कृषि योजना बनानी होगी तथा इन्हीं कृषि–योजना को ध्यान में रखकर हरेक ब्लॉक के लिए कृषि आधारित उद्योगों विशेषकर खाद्य–प्रसंस्करण उद्योग (Food Processing Industries) तथा Dairy farming को बढ़ावा देना होगा। तभी कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग एक दूसरे के पूरक के रूप में काम करेंगे। **कृषि आधारित उद्योगों में किसानों की भागीदारी पूर्णतया सुनिश्चित होनी चाहिए तथा इसके लिए सरकार को आगे आना चाहिए। Agro based industries केवल किसानों खासकर लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए ही हो। इससे बड़े उद्योगपतियों को बिल्कुल अलग रखना चाहिए। इसके लिए विशेष खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र बनाना अच्छा कदम होगा। सब्जी तथा फल के उत्पादन में बिहार पूरे देश में तीसरे स्थान पर है।** अतः प्रदेश सरकार को खुद पहल कर दिल्ली या अन्य मेट्रो शहरों में इन्हें भेजने का प्रबंध करना चाहिए ताकि किसानों को अधिक से अधिक मूल्य मिले। यहाँ पर एक बात विशेष रुप से उल्लेखनीय है कि बिहार प्रदेश की अर्थव्यवस्था बड़े बाजार से जुड़ी नहीं है जिसके कारण उत्पादकों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता। इसके लिए बिहार सरकार को विशेष पहल करनी होगी। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री ने राज्य सभा में बताया कि वर्तमान में देश में प्रसंस्करण का स्तर करीब 10 प्रतिशत होने का अनुमान है जिसमें फल तथा सब्जियों का प्रसंस्करण स्तर 2.2 प्रतिशत होगा। अमेरिका में यह स्तर करीब 65 प्रतिशत तथा फिलपींस में 78 प्रतिशत होने का अनुमान है। **साथ ही पांच नए खाद्य पार्कों के लिए स्थानों का चयन होना है। इसमें बिहार सरकार को भरपूर प्रयास करना चाहिए जिससे अधिक से अधिक पार्कों का यहाँ पर निर्माण हो।** भारत सरकार ने भी यह माना है कि फसल कटने के बाद संचालन के विभिन्न स्तरों पर देश में होने वाली वर्तमान कृषि उपज में से करीब 3 खरब रूपये मूल्य के फसल की बर्बादी होती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सांख्यिकी के मुताबिक कृषि उत्पादों के वैश्विक व्यापार में भारत का हिस्सा मात्र 1.4 फीसद है तथा चीन का 3.5 फीसद तो ब्राजील का 4.5 फीसद। खाद्य तथा फल प्रसंस्करण उद्योग में निवेश की बहुत अधिक संभावना है, अतः किसानों के हित में नीति बनाकर निवेश सुनिश्चित करना चाहिए। **बर्बादी रोकने के लिए Cold Storage का भी निर्माण होना चाहिए। इसके लिए Public-Private partnership होना चाहिए, Fruit और Food प्रसंस्करण उद्योग में किसानों को ही प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इस क्षेत्र में ये प्रयास कृषि को उद्योग से जोड़ने में अहम् होगा और तभी कृषक तथा कृषि की दयनीय स्थिति सुधरेगी।** इस दिशा में बाबा रामदेव द्वारा **U.P.** में अच्छी पहल हुई है। परन्तु यह सावधानी रखनी जरूरी है कि **हमारे किसानों की भूमि किसी भी हाल में किसानों के हाथ में ही रहे।** आजकल बड़े–बड़े उद्योगपतियों, कॉरपोरेट सेक्टरों की नजरें कृषि योग्य भूमि पर रही हैं। ये किसानों तथा खुद प्रदेश के लिए समस्याओं को दूर करने की जगह नित–नई आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याएँ खड़ी करते हैं। ये बड़ी कम्पनियाँ जनता के सुविधा एंव असुविधा का ख्याल नही रखती। वे आदमी की जरूरतों को लेकर समाज के प्रति संवेदनशील नहीं होती। हर एक आदमी उनके लिये एक कमॉडिटी की तरह होता है । वे केवल अधिक–से–अधिक लाभ लेने का प्रयास करती हैं, प्राकृतिक संसाधनों हवा, जल, मिट्टी इत्यादि को प्रदूषित आस पास के लोगों को बीमार तथा लाचार कर लाभ लेती हैं और कुछ दिनों के बाद अपनी इकाई को बीमार घोषित कर दूसरी जगह चले जाते हैं । जनता अपने हाल पर रोती रहती है क्योंकि उसके हाथ से उसका जमीन, घर तथा रोजगार तीनों छिन जाते हैं। **अगर सरकार कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग धंधों में सफल होती हैं तो हमारे प्रदेश की 60 से 70 प्रतिशत लोगों को, जो खेती पर निर्भर हैं, पूर्ण रोजगार मिलने की संभावना हो जायेगी।** इसी तरह से अन्य क्षेत्रों में संभावनाओं को देखकर Strategies बनाने की जरूरत है –जैसे **लीची और शहद** के उत्पादन में बिहार देश में **प्रथम** है तथा पूरे भारतवर्ष तथा विदेशों में भी इसकी मांग है । अतः प्रदेश सरकार को इसे अपने हाथ में लेकर बाहर बेचने का प्रबंध करना चाहिए। **बिहार जूट उत्पादन में भी दूसरे स्थान पर है।** दिल्ली तथा अन्य शहरों में No plastic compaign के कारण जूट तथा जूट से बने सामानों की मांग बढ़ सकती हैं। इसके लिए बिहार सरकार को खुद पहल करनी चाहिए जिससे किसानों की हालत सुधरें तथा बिहार में भी खेती एक लाभदायी उद्योग बन सके। कृषि तथा कृषकों की स्थिति में सुधार का मतलब है – खेतिहर मजूदरों, दलितों, गरीबों तथा समाज के निचले पायदान पर स्थित व्यक्तियों की स्थिति में सुधार । इसका मतलब होता है – गाँवों की स्थिति में सुधार और गाँवों की स्थिति में सुधार का मतलब ही है – प्रदेश का सुधार। **अतः**

राज्य में विकास को गहराई मिलेगी – कृषि तथा कृषकों की स्थिति में सुधार से ही । इसके बिना किया गया विकास टिकाऊ नही होता। वैसा विकास रेत पर खड़े महल की तरह ही है जो हवा के हल्के झौंके मात्र से ही भरभरा कर गिर जाता है।

शिक्षा – किसी भी विकास को जारी रखने के लिए शिक्षित समुदाय की जरूरत होती है। जानकारी अर्थात् शिक्षा के अभाव में कोई समाज न तो प्रगति कर सकता है और न विकास को ज्यादा समय तक स्थायित्व ही प्रदान कर सकता है । अतः शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है । मुझे हिन्दुस्तान के लगभग सभी प्रदेशों में घूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दिल्ली के विभिन्न इलाकों में रहकर, विभिन्न प्रदेशों के लोगों से मिलकर ऐसा महसूस हुआ कि बिहार में शिक्षा के प्रति एक विशेष ललक है, एक विशेष भूख है। हो सकता है डिग्री नहीं होने के कारण वे निरक्षरों की श्रेणी में आते हों, परंतु राजनैतिक, आर्थिक, कलात्मक तथा सांस्कृतिक समझ एक पढ़े–लिखे व्यक्ति से कम नहीं है। आप बिहार मूल के रिक्शेवाले के रिक्शे पर बैठकर भी किसी भी विषय पर तार्किक बहस कर सकते हैं। बिहार के लोग दो कारणों से बाहर पलायन करते हैं – पहला कारण है – शिक्षा तथा दूसरा है – आजीविका। बाहर शिक्षा पाने के लिए अभिभावक बिहार से बाहर कई सौ करोड़ रूपये भेजते हैं। यह एक दुःखद बात है कि जहाँ पर नालंदा तथा विक्रमशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय रहे हों, राजा जनक, आर्यभट्ट, मंडन मिश्र जैसे धुरंधर विद्वान रहे हों, वहाँ की साक्षरता प्रतिशत मात्र 47 प्रतिशत (2001 की जनगणना के अनुसार) ही है। नीतीश सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल में शिक्षा के मद में 40,000 करोड़ रूपये खर्च किये । इस दौरान, करीब दो लाख शिक्षकों की भर्ती की गई, 10 लाख स्कूली छात्राओं को साइकिलें वितरित की गई; साथ ही बोर्ड परीक्षाओं में 60 फीसद तक अंक पाने वाली लड़कियों को 10 हजार रूपये नकद देने का प्रावधान किया गया। इन प्रयासों से न केवल पढ़ाई छोड़ने वाले छात्राओं की तादाद में कमी हुई बल्कि पढ़ाई को लेकर एक सकारात्मक सोच का भी संचार हुआ। निरक्षरता बिहार के लिए एक कंलक है। **विकास की लड़ाई साक्षरता के रथ पर चढ़कर ही लड़ी जाती है।** अभी नव नालंदा विश्वविद्यालय की तरह कई और विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है जिसमें सभी आधुनिकतम विज्ञान, तकनीकी, कला, वाणिज्य आदि विषयों की विश्वस्तरीय पढ़ाई हो सके तभी शिक्षा प्राप्ति की भूख मिटेगी और आम बिहारवासियों को पढ़ाई के लिए बाहर पलायन करने की मजबूरी नहीं रहेगी । इसके साथ ही यहाँ से रूपयों का बाहर जाना भी रूकेगा। एक बात कई स्तरों पर बातचीत के दौरान उभरकर आयी **वह यह कि बड़े–बड़े औद्योगिक घराने बिहार में Business में Investment करने से तो हिचकते हैं पर शिक्षा के क्षेत्र में Investment करने से उन्हें उतना परहेज नहीं है।** इसमें कई देशों से भी सम्पर्क किया जा सकता है। इसका

अद्यतन प्रमाण नव नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना को लेकर है जिसमें कई देशों से सहयोग मिला है। इसी तरह एक और विश्वविद्यालय नव–विक्रमशीला विश्वविद्यालय की भी स्थापना होनी चाहिये । यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि बिहार की भूमि तथा मानसिकता शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है। यही कारण है कि विद्वानों की ऐतिहासिक पंरपरा तो यहाँ पर रही है पर औद्योगिक घरानों की संख्या यहाँ पर अंगुलियों पर गिनने लायक है। अतः क्यों न हम बिहार को औद्योगिक राज्य के साथ–ही–साथ शिक्षा प्राप्ति खासकर तकनीकी शिक्षा के एक मुख्य केन्द्र के रूप में भी Develop करें और खासकर अब जबकि शिक्षा के क्षेत्र में Foreign Direct Investment लागू हो गया है। यहाँ पर यह सोचने की बात है कि बड़े–बड़े उद्योग, वातावरण को प्रदूषित करते हैं पर शैक्षणिक संस्थान आस–पास शैक्षणिक वातावरण (Academic environment) का निर्माण करते हैं। कानून व्यवस्था से सम्बन्धित समस्या कम होती है तथा इसमें एक बड़े उद्योग की जगह कम पूंजी भी लगती है जिसका हमारे राज्य में अभाव भी है। इससे रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। हरियाणा, यू0पी0, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश इत्यादि राज्यों में इस तरह की पहल भी हुई है पर वहाँ पर विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय नहीं के बराबर हैं। इन राज्यों में यत्र–तत्र कॉलेज खोल दिये गये हैं जिनकी शैक्षणिक गुणवत्ता कतई अच्छी नहीं कही जा सकती है। हमारे प्रदेश में सोच–समझकर इस दिशा में कदम उठाने की आवश्यकता है जिसमें विश्वस्तरीय पठन–पाठन की व्यवस्था हो । एक बात यह भी स्मरणीय है कि **ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना कृषि योग्य भूमि पर नहीं होनी चाहिए। इसकी स्थापना वहाँ होनी चाहिये जो गैर कृषि भूमि हों जिससे इसके आस–पास के क्षेत्रों के शैक्षणिक विकास के साथ–साथ आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास भी हो। शिक्षा के क्षेत्र में भी वैसी शिक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिसमें रोजगार की सम्भावना ज्यादा हो। यथा पूरे हिन्दुस्तान में Nurses और Pharmacists का अभाव है । अतः इससे सम्बन्धित कालेज खोलने की पहल करनी चाहिये जिससे यहाँ के लड़के एंव लड़कियों को 10वीं व 12वीं पास करने के बाद Nurses और Pharmacists बनने के भी अवसर मिलें।** बिहार सरकार की वर्तमान महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा । एक बात और जिसका बिहार सरकार के रिपोर्ट कार्ड में भी उल्लेख नहीं है –वह है **स्पोंटस विद्यालय** की स्थापना का। पहले बिहार से राष्ट्रीय तथा अतंराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी हुए हैं जिसकी यहां पर अभी भी बहुत संभावना है। इस बार कॉमनवेल्थ एंव एशियन गेम्स मे बिहार प्रदेश की भागीदारी नही थी। किसी ने भी इस बार इस स्तर पर पदक नही जीता। **अतः यहाँ पर कम से कम एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का स्पोंट्स विद्यालय स्थापित किया जाए तथा स्पोंट्स मे अच्छे खेलने वाले लड़के और लड़कियों को उचित मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलना चाहिए।** संख्या की जगह गुणवत्ता पर ही ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। अतः बिहार सरकार को भारत सरकार के साथ मिलकर इस पर गंभीर चिंतन करना चाहिए और बिहार राज्य को शिक्षा

प्राप्ति के एक विश्वस्तरीय केन्द्र के रूप में विकसित करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे बिहार की प्राचीन गौरवशाली परम्परा पुनर्स्थापित हो सके। आप हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में स्थित कोंचिग इन्सटियूट में चले जायें वहाँ पर न केवल शिक्षक बल्कि विद्यार्थी भी बिहार प्रदेश के होते हैं। इस सम्बन्ध में हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि ऐसा क्यों होता है ? ऐसा होता है शिक्षा से संबंधित अवसंरचना के अभाव के कारण। सरकार को स्तरीय शिक्षा खासकर तकनीकी शिक्षा देने के लिये वही पर अर्थात प्रदेश में ही आवश्यक प्रंबध करना चाहिए। इस क्षेत्र में सुपर 30, (रहमनी 30 मुस्लिम विद्यार्थियों के लिए) जैसे संस्थान भी विद्यार्थियों को तकनीकी क्षेत्र में प्रवेश के लिए सराहनीय कार्य कर रहे हैं। इसका विस्तार पूरे प्रदेश में होना चाहिए जिससे न केवल स्तरीय शिक्षकों बल्कि छात्रों का भी मजबूरीवश होने वाला पलायन रूके। प्रदेश सरकार को कोशिश करनी चाहिये कि शिक्षा के क्षेत्र में बिहार अपने प्राचीन गौरव को पा सकें। इसके लिए बिहार के मुख्यमंत्री को देश–विदेश में फैले हुए बिहारियों तथा बिहार के प्रति सहानुभूति रखने वालों को अपील कर अपने प्रदेश में बुलाने का उदेश्य बनाना चाहिए – **उसका Theme हो – Back to Bihar (बिहार लौटें)।** यह याद रखें केवल साक्षरता से ही विकास की लड़ाई नही लड़ी जा सकती। हमें चाहिये – शिक्षा, वह भी विश्वस्तरीय शिक्षा जिससे हम हिन्दुस्तान में ही नहीं अपितु विश्व में भी अपना स्थान बना सकें और इस बात की जोरदार सम्भावनायें यहाँ पर हैं भी। **भारत सरकार तथा बिहार सरकार से आग्रह है कि बिहार को उच्च शिक्षा विशेषकर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक बार मौका तो दें।** हमें पूरा विश्वास है कि यहाँ की जनता धोखा नहीं देगी – वह अपने ज्ञान से पूरे विश्व को आलोकित कर देगी ।

स्वास्थ्य क्षेत्र : ऐसा कहा जाता है कि दिल्ली के अस्पतालों में बहुतायत मरीज बिहार से ही आते हैं । अस्पताल के बाहर पगडंडियों, पार्को, धर्मशालाओं इत्यादि में बिहार से आने वाले मरीजों तथा उनके तीमारदारों को आसानी से देखा जा सकता है । ये मरीज अपनी जमीन–जायदाद बेचकर बिहार से बाहर अपना इलाज कराने आते हैं । दिल्ली स्थित सांसदों के यहाँ पर भी इन्हें आसानी से देखा जा सकता है । यहाँ पर आकर सभी बिहारियों को डाक्टरों, नर्सों तथा अन्य कर्मचारियों की डाँट–फटकार भी सुननी पड़ती है । आखिर क्यों ये लोग इतनी जलालत झेलकर यहाँ आते हैं ? अगर उन्हें स्वास्थ्य सुविधायें अपने प्रदेश में मिलतीं तो वे यहाँ क्यों आते ? आखिर इसके लिये दोषी कौन है ? हाँलाकि पिछले पाँच सालों में स्थिति में सुधार होना शुरू हुआ है पर यह अभी बहुत कम हैं । जैसे 2005–2006 में बदहाल चिकित्सा व्यवस्था के चलते प्रतिमाह औसतन 39 रोगी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुँचते थे पर अब 4800 । 2004 में गर्भवती महिलाओं की शिशु मृत्यु दर प्रति हजार 376 थी जो अब 312 हुई है । 2004–2005 में 5.45 लाख प्रसव प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ द्वारा कराये गये जो अब 2009–2010 में यह बढ़कर 14.5 लाख तक हुआ है। इसी तरह शिशु मृत्यु दर में भी 10 फीसदी तक कमी आई है । परन्तु अगर राष्ट्रीय औसत की बात करें तो कई मामलों में बिहार अभी बहुत पीछे है । जैसे यहाँ पर सुपर स्पेशिलिटि अस्पताल नहीं है । ऐम्स जैसा एक हॉस्पीटल यहाँ पर भी होना चाहिए। अभी भारत सरकार ने एम्स जैसा हॉस्पीटल बनाने की घोषणा की है। **जैसा कि पहले कहा जा चुका है Nurses तथा Pharmacists के लिये अलग से कालेज खोलने की आवश्यकता है क्योंकि इनकी कमी प्रदेश स्तर पर ही नहीं बल्कि देश के स्तर पर भी है । इससे महिला सशक्तिकरण को भी प्रदेश में सबल बनाने का मौका मिलेगा। सरकार को इसके लिये प्रयास करना चाहिए।** अभी वर्तमान में जितने हॉस्पीटल हैं सभी को चुस्त – दुरूस्त करने की आवश्यकता है । स्वास्थ्य क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार रोकने की आवश्यकता है । नकली दवाइयों के कारोबार को पूरी तरह रोकने की जरूरत है । यदि सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र में थोड़ा सा ध्यान दे तो यहाँ की औसत आयु जो अभी 61 साल है वह बढ़कर राष्ट्रीय औसत आयु 62.7 साल को भी पार कर सकती है । वह दिन दूर नहीं जब यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति शतायु होने लगे और वेद की उद्घोषणा चरितार्थ होने लगे – **जीवे्म शरदः शतम्।**

उद्योग :– बिहार राज्य में उद्योग नहीं के बराबर हैं । मुजफ्फरपुर और मोकामा में भारत वैगन लिमिटेड का रेलवे वैगन प्लांट है । बरौनी में भारतीय तेल निगम का तेल शोधक कारखाना है । बरौनी का एच पी सी एल और अमझोर का पाइराइट्स फॉस्फेट एवं कैमीकल लिमिटेड (पी पी सी एल) राज्य के उवर्रक संयत्रं हैं । सीवान, भागलपुर, पंडौल, मोकामा और गया में पाँच बड़ी सूत कताई मिलें हैं । उत्तर एवं दक्षिण बिहार में 13 चीनी मिलें निजी क्षेत्र में तथा 15 चीनी मिलें सार्वजनिक क्षेत्र की है जिनकी कुल पेराई क्षमता 45,000 टन है । इसके अलावा पश्चिम चंपारण तथा मुजफ्फरपुर एवं बरौनी में चमड़ा प्रसंस्करण उद्योग हैं । कटिहार एवं समस्तीपुर में तीन बड़े पटसन के कारखाने हैं । हाजीपुर में दवा बनाने का कारखाना, औरंगाबाद और पटना में खाद्य–संस्करण एवं वनस्पति घी बनाने के कारखाने हैं । बंजारी में कल्याणपुर सीमेंट लिमिटेड कम्पनी भी है । इसके अलावा गोपालगंज, पश्चिम चम्पारण, भागलपुर और रीगा (सीतामढ़ी जिला) में शराब बनाने के कारखाने हैं। **बिहार राज्य में भी अन्य कई राज्यों की तरह पूर्ण शराब बंदी लागू हो। सरकार को इस पर अपनी नीति पर पुनः विचार करने की जरूरत है। प्रदेश के मुख्यमंत्री,**

उप–मुख्यमंत्री तथा सरकार के अन्य सभी विधायकों से अपील है कि वे किसी भी शराब पीने वाले के घर जाकर उनके पत्नियों और बच्चों से पूछ कर ही यह निर्णय लें कि पूरे प्रदेश में शराब बंदी हो या नहीं। सरकार को जबाब मिल जायेगा। राज्य निवेश प्रोत्साहन परिषद् द्वारा अब तक 1058 करोड़ रूपये का पूँजी निवेश मुख्यतयः चीनी मिल, इथ्नॉल, पावर, फूड प्रोसेसिंग, स्टील तथा सीमेन्ट क्षेत्रों में ही किया गया है। परन्तु इन सब को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार में उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी बहुत अधिक करने की आवश्यकता है। साथ–ही–साथ इसमें भी सावधानी रखने की आवश्यकता है कि समूचे बिहार का विकास हो । क्षेत्रीय असंतुलन असंतोष को भी जन्म देता है। जीत–हार तो जीवन का खेल है । सरकार समूचे राज्य की प्रतिनिधि होती है अतः विकास भी समूचे राज्य का होना चाहिये । उपर्युक्त अनुमोदित प्रस्तावों से स्पष्ट है कि राज्य का दक्षिणी भाग उद्योगों के लिये पसंदीदा स्थल बना हुआ है। **उद्योग–धंधों के लिये कृषि योग्य भूमि का उपयोग नहीं होना चाहिए । जिससे कृषि उद्योग भी चले और अन्य उद्योग भी । किसी भी शहर में या उसके आस–पास उद्योग क्षेत्र रिहायशी क्षेत्रों से अलग होना चाहिये। वर्तमान उद्योगों को पुनर्जीवित करने के साथ–साथ नये उद्योगों को बढ़ाने की जरूरत है।**

एक बात और, कारपोरेट सेक्टर उस क्षेत्र में ही निवेश करेगा जहाँ पर उसे लाभ की अधिक से अधिक सम्भावना हो। सरकार अभी कितनी ही बार कारपोरेट सेक्टर की खुशामद करे वे अभी बिहार में इनवेस्ट नही करेंगे । यहाँ पर इन्वेस्ट तभी करेंगे जब बिहार की जनता की आय बढ़ेगी । वे जनता के प्रति जिम्मेदार नहीं होते हैं । पूरे प्रदेश के सालाना बजट से कई गुना अधिक पैसे इनके पास होते हैं । अतः एक बार प्रदेश के अन्दर आने के बाद अगर सरकार कभी किसी बात पर कम्पनियों को अनुशासित करने की कोशिश करें तो वे जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार को ही गिराने की कोशिश में जुट जाते हैं । हाल ही में 2 जी स्पैक्ट्रम घोटाले में प्रधानमंत्री तक को कारपोरेट सेक्टरों को खुश करने के लिये बयान देना पड़ा। कोई पैट्रोलियम मंत्री बनाने के लिये लॉबिगं कर रहा होता है तो कोई संचार मंत्री बनवाने के लिये। जनता चुनती है अपने प्रतिनिधि को और कॉरपोरेट सेक्टर अपनी मनमर्जी की सरकार बनाते हैं। अपने पक्ष में बजट

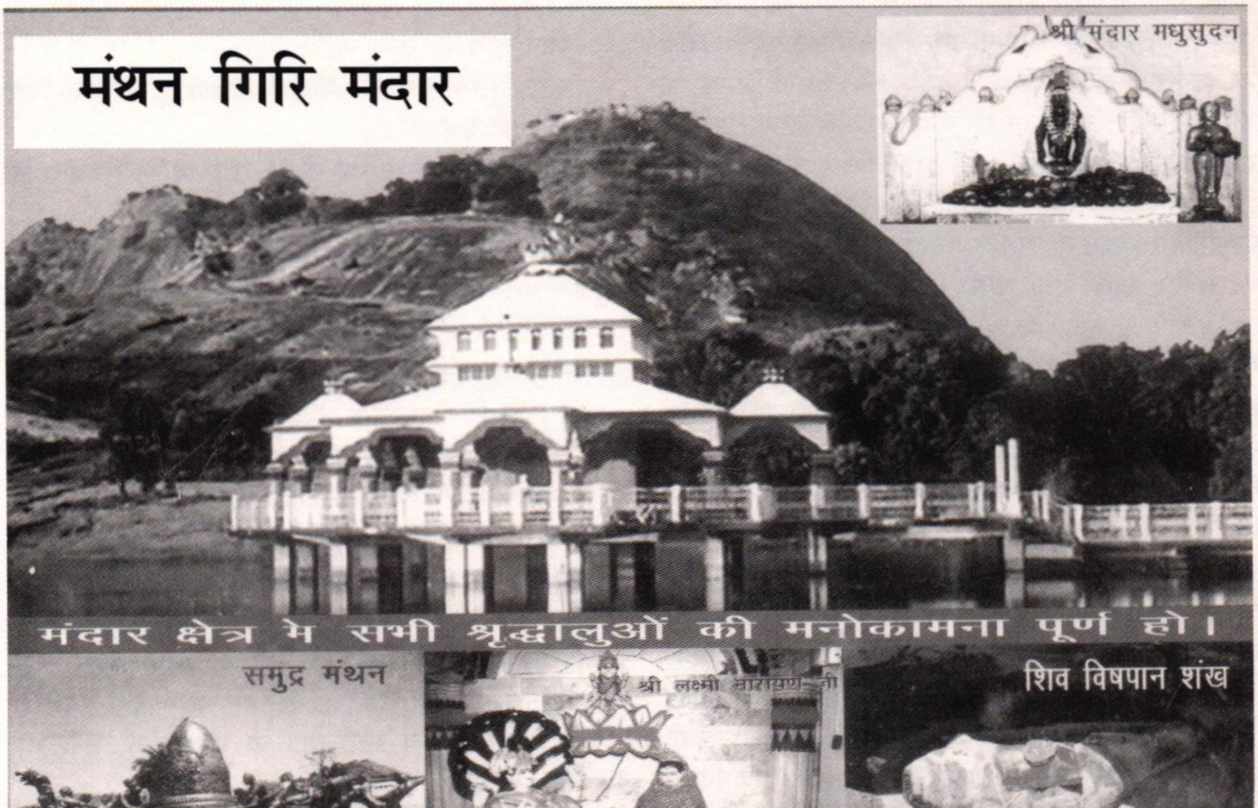

बनवाते हैं । नीतियाँ बनवाते हैं । जनता है सब कुछ देखती है और समय आने पर निर्ममतापूर्वक अपना निर्णय भी सुनाती है। एक–एक से पाई–पाई का हिसाब लेती है । स्थिति तो भयावह है। कॉरपोरेट साम्राज्यवाद का समय है। **राजनीतिज्ञों को निर्णय लेना है कि वे उनके हाथ का खिलौना बनेंगे या जनमत का पक्ष लेंगे । इन स्थितियों को ध्यान में रखते हुये वर्तमान सरकार को अपने प्रदेश में Medium Entreprenuership को Develop करना चाहिये जिससे आर्थिक विकास के साथ–साथ प्रदेश में राजनैतिक स्थिरता भी बनी रहेगी।** आज उद्योगपति बिडला जी की एक चिट्ठी का स्मरण हो आता है जिसमें उन्होंने अपने बेटों के नाम अपने अंतिम पत्र में लिखा था कि मैं तुम्हें धन बढाकर दे रहा हूँ। परंतु ये धन समाज का है तुम ट्रस्टी की तरह इसे रखना और समाज को जब जरूरत हो तो उसे यह धन लौटा देना। यही **गाँधीजी के ट्रस्टीशिप प्रिसिंपल** का भी सार है । गाँधीजी से जब यह बात पूछी गई कि क्या ये सिद्धान्त यूटोपियन नही है तो उन्होंने कहा था जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ तो सेठ जमनालाल बजाज सामने आ जाते हैं जिन्होंने अपना सारा धन स्वतंत्रता संग्राम के लिये कांग्रेस को दे दिया था परंतु वह धन गॉधीजी ने उनके पास ही रखा और वे ट्रस्टी के रूप में कार्य कर रहे थे । क्या वीर शिवा ने अपना सारा राज्य समर्थ गुरू रामदास को दान नहीं कर दिया था ? तत्पश्चात गुरू के आग्रह पर वे उनके प्रतिनिधि के तौर पर कार्य नहीं कर रहे थे? आखिर इन कॉरपोरेट सेक्टरों को अपने लिये कितनी सम्पदा चाहिये?

पर्यटन : झारखंड राज्य के अलग होने के बाद बिहार में प्राकृतिक संसाधन के नाम पर सिर्फ जमीण तथा नदियाँ बची हैं। खनिज संपदा तथा जंगल का तो घनघोर अभाव ही है। उद्योग नाम की कुछ इकाईयाँ ही बची है। इस हालत में पर्यटन के विकास करने की आवश्यकता है। पर्यटन के लिये आवश्यक होता है – यातायात की सुविधा तथा उन्नत कानून व्यवस्था जो काफी हद तक यहाँ पर विकसित हो चुका है। वर्ष 2006 में बिहार में आने वाले देशी पर्यटकों की संख्या 1,06,70,268 एंव विदेशी पर्यटकों की संख्या 94,446 थी। वर्ष 2008 में देशी पर्यटकों की संख्या बढ़कर 1,21,95,590 (114 प्रतिशत) एंव विदेशी पर्यटाकें की संख्या बढ़कर 3,56,446 (377 प्रतिशत) हो गई। केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय के अनुसार 2009 में बिहार में गोवा से भी अधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ। बिहार में 2009 में 4.2 लाख तथा गोवा में 3.7 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ। परंतु दुःख की बात है कि बिहार में केवल दो ही एयरपोर्ट है पटना तथा गया। अतः भारत सरकार को कम–से–कम एक अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट का निर्माण करना चाहिए। बिहार सरकार को इस दिशा मे एक विशेष पहल करनी चाहिए। भारत सरकार से अनुरोध कर बिहार के लिए भी Tourist को Special Concession Package (LTC) इत्यादि के लिये छूट की माँग की जाए। अभी भारत सरकार उत्तर–पूर्व भारत तथा जम्मू–कश्मीर के लिये ऐसा ही प्रावधान किया है। बिहार सरकार भी अपनी तरफ से विशेष अभियान चला सकती है। बिहार के चप्पे–चप्पे का अपना–अपना इतिहास है। आवश्यकता है उसे उभाड़कर दर्शनीय बनाने की। वहाँ स्वतंत्रता सेनानियों, जन्मभूमि सम्पूर्ण क्रांति के योद्धाओं, राजनीतिज्ञों, विद्वानों, समाजसेवियों इत्यादि को दर्शनीय स्थल बनाकर बिहार सरकार द्वारा स्थापित विभिन्न Tourists circuits को नए परिप्रेक्ष्य में संशोधित करना चाहिए।

जहाँ कहीं भी, जब कभी भी वैचारिक उद्दीपन होता है–अपने को कागज पर उतारने की मजबूरी हो जाती है –केवल **'स्वांतः सुखाय'**। किसी को न तो दुःखी करने की भावना होती है और न ही किसी की चापलूसी करने की । कामना है – केवल कवीन्द्र रवीन्द्र के गीतांजली की **'दिव्य स्वातंत्र्य'** की –

जहाँ हृदय में निर्भयता हो और मस्तक अन्याय के सामने नहीं झुकता;

जहां ज्ञान का मूल्य नहीं लगता;

जहां संसार घरों की संकीर्ण दीवारों में खण्डित और विभक्त नहीं हुआ;

जहां शब्दों का उद्भव केवल सत्य के गहरे स्त्रोत से होता है;

जहां अनर्थक उद्यम पूर्णता के आलिंगन के लिए ही भुजाऐं पसारता है;

जहां विवेक की निर्मल जलधारा पुरातन रूढ़ियों के मरूस्थल में सूखकर लुप्त नहीं हो गई;...............

प्रभु उस दिव्य स्वतंत्रता के प्रकाश में, मेरा देश जागृत हो।

आज सारा हिन्दुस्तान भ्रष्टाचार के एक से बढ़कर एक कारनामों से कराह रहा है। जनता भयभीत है और आक्रोश से भर उठी है। अपने जनप्रतिनिधियों से उसे ऐसी आशा नहीं थी । ऐसी स्थिति में बिहार के द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध किया गया शंखनाद तथा गरीबी, नाइंसाफी, अशिक्षा के विरूद्ध छेडे गये जिहाद को सारा हिन्दुस्तान आशा तथा आश्चर्यभरी दृष्टि से देख रहा है। हम भी कामना करते हैं **''प्रभु ! उस 'दिव्य स्वतंत्रता' के प्रकाश में, मेरा भी 'प्रदेश' जागृत हो ! ''**

द्वारका, नई दिल्ली। (चलभाष -9868077345)

बिहार जनादेश – एक आशा

❑ संतोष कुमार

2001 में बिहार की 8.29 करोड़ जनसंख्या का धर्मवार विवरण इस प्रकार था:–

धर्म	जनसंख्या	%
हिन्दू	6,90,76,190	83.2
मुस्लिम	1,37,22,048	16.5
ईसाई	53,137	0.1
सिख	20,780	0.025
बौद्ध	18,818	0.023
जैन	16,085	0.019
अनुसूचित जाति	1,30,48,608	15.72
अनुसूचित जनजाति	7,58,351	0.914
अन्य	52,090	0.1

1981 व 1991 में बिहार की जनसंख्या क्रमशः 5.23 व 6. 45 करोड़ थी जो 2001 में 8.29 करोड़ हो गई। जनसंख्या वृद्वि की इसी दर पर 2011 में बिहार की जनसंख्या अनुमानत 10. 50 करोड़ होगी। सही विवरण 2011 जनगणना की रिपोर्ट से पता चल जायेगा।

चुनाव के समय राजनीतिक दलों की नजर इन्हीं धर्म/जाति की संख्याओं पर होती है जो लोकतंत्र के लिए खतरा है उसकी जड़ को कमजोर करने वाली है। इसके विपरीत पहली बार 2010 में बिहार ने जाति व धर्म से उपर उठकर पूरे राष्ट्र को एक सही दिशा दिखायी है।

2005 विधानसभा चुनाव के समय बिहार में मतदाताओं की संख्या 5,13,85,891 थी जो 2009 लोक सभा चुनाव के समय बढ़कर 5,45,05,248 हो गई थी। विधानसभा चुनाव 2010 में यह और बढकर 5,50,46,093 हो गई। इन मतदाओं की संख्या के आधार पर 2005 व 2010 के लिए विधान सभा चुनावों के कुछ महत्वपूर्ण आंकड़े निम्नवत हैं: –

	2005	02010
कुल सीट	243	243
कुल मतदाता	5,13,85,891	5,50,46,093
कुल मत प्राप्त	2,35,58,640	2,90,17,537
सही मत	2,35,58,640	2,90,17,537
कुल उम्मीदवार	2,135	3523
निर्दलीय	746	1342
भागीदारी प्रतिशतता	45,85:	52,71:

बिहार के अक्टूबर, 2005 तथा 2010 चुनाव में मुख्य 7 पार्टियों के साथ – साथ अन्य दलों को प्राप्त हुए मत का ब्योरा निम्नलिखित है

	2005				2010			
पार्टी	Contested	Won	Actual	Vote %	Contested	Won	Actual	Vote %
आई.एन.सी.	51	9	14,35,449	6.09	243	4	24,30,623	8.38
बीजेपी	102	55	36,86,720	15.65	102	91	47,75,501	16.46
जेडीयू	139	88	48,19,759	20.46	141	115	65,61,903	22.61
सी.पी.आई	35	3	4,91,689	2.09	56	1	4,90,815	1.69
सी.पी.आई(एम)	10	1	1,59,906	0.68	30	0	2,06,601	0.71
एल.जे.पी.	203	10	26,15,901	11.10	75	3	19,57,232	6.75
आर.जे.डी.	175	54	55,25,081	23.45	168	22	54,66,693	18.84
अन्य	.	8	71,28,169	24.56	.	23	48,24,135	20.48

हम देखते हैं कि 2005 में जेडी(यू) – बीजेपी गठबंधन को कुल 85,06,479 मतों के साथ 143 सीटें मिली थी जो डाले गए मतों का 36.11 प्रतिशत व कुल मतों का 16.35 प्रतिशत थी। कुल जनसंख्या के हिसाब से यह मात्र 10.25 प्रतिशत होता है। इस बार 2010 में जेडीयू – बीजेपी गठबंधन को 1,13,37,404 मतों के साथ 206 सीटें मिली है जो डाले गए मतों का 39.07 प्रतिशत व कुल मतों का 20.60 प्रतिशत है। 2001 की जनगणना का यह 13.6 प्रतिशत है। आरजेडी व एलजेपी को 2010 में कुल 74,23,925 मत प्राप्त हुए। जो जेडीयू – बीजेपी गठबन्धन से 39,13,479 कम है। 2005 की तुलना में इस बार जेडीयू – बीजेपी गठबंधन को तीन प्रतिशत मतों (2830925) के इजाफे के साथ 63 सीटों की बढ़ोतरी मिली है जो लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत है और इस बात की ओर इशारा करता है कि तीन प्रतिशत मतदाताओं के समर्थन मात्र से किस तरह किसी राज्य के पुननिर्माण की कितनी ज्यादा संभावना बढ़ जाती है जबकि सामान्यतः लोग कहते रहते हैं– मेरे वोट देने से क्या होने वाला है? 15–20 प्रतिशत लोगों के जागरूक होने से ही तस्वीर बदल सकती है एवं स्वच्छ सरकार व समाज का निर्माण हो सकता है। यदि हम में से प्रत्येक अपने साथ 20–25 अच्छे लोगों, देशभक्तों, समाजसेवियों को जोड़े तो यह 15–20 प्रतिशत प्राप्त करना बहुत ही आसान हो जायेगा। अगर पूरी जनसंख्या के 1 प्रतिशत से कम लोग ही सारी गड़बड़ी फैला रहे हैं तो हम 15–20 प्रतिशत लोग क्यों नही समाज को अच्छा बनाने का साकारात्मक प्रयास करते रहें। ज्यादा लोग नहीं भी आये, तो भी 1 प्रतिशत संकल्पित मतदाताओं से यह बदलाव संभव है। इसके साथ जो 50 से 70 लाख लोगों का वोट अन्य पार्टियों को चला जाता है, जिसका बहुत महत्व नहीं होता है, वे भी समाज निर्माण के लिए जुट जाए तो और बड़ा चमत्कार हो सकता है। अतः अपने मत की कीमत हमें आगे भी समझनी है और समाज निर्माण के सारे घटकों को एक साथ मिलाकर आगे बढ़ते रहना है।

अब सरकार की जिम्मेदारी हो गई है कि इस जनादेश के साथ बिहार के पुनर्निर्माण के कार्य को पूरा करे। रोजगार, स्वास्थ्य, कानून–व्यवस्था, शिक्षा, आवास की जरूरतों को प्राथमिकता दे। इसमें से केवल रोजगार ही बहुत सारी अन्य समस्याओं को स्वतः हल कर देगा। रोजगार के लिए कृषि, कृषि विपणन, कृषि ऋृण व बीमा, खाद्य प्रबंधन, उधोग, शहरी व ग्रामीण अवसंरचना, स्वास्थ्य सेवाओं, स्वास्थ्य बीमा, शिक्षा, आवास क्षेत्रों की क्षमताओं का दोहन करने की जरूरत है। अकेले कृषि विपणन, स्वास्थ सेवाएँ व उद्योग लाखों को रोजगार दे सकते हैं।

कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने और चलाने की जिम्मेददारी प्रारंम्भ में सरकार को ही लेनी पड़ेगी व गैर–सरकारी क्षेत्रों को भी प्रोत्साहन देना पड़ेगा। पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अबुल कलाम की गॉवों में शहरी सुविधा और कनेक्टिवीटी के सपने को पूरा करना पड़ेगा और हर गॉव के दस किलोमीटर के अंदर उपलब्ध प्रखण्डों, व शहरीकरण के संभावित क्षेत्रों में कॉलेज, आई. टी. आई पॉलिटेक्निक, एक बहु–विशेषज्ञता (multi-specialty) हॉस्पीटल बनाना होगा ताकि लोग गॉवों में रहकर ही बच्चों को तकनीकी शिक्षा दिला सके, अपना सही–सही इलाज करा सकें। गॉवों से रोगियों को हॉस्पीटल तक ले जाने के लिए उतराखण्ड की तर्ज पर एम्बुलेंस चलाना बहुत ही राहत प्रदान करेगा।

सरकार से यह भी आशा की जाती है कि सरकारी फंड का प्राइवेट सूझ–बूझ की तरह उपयोग करे और भ्रष्टाचार पर लगाम कसते हुए एक स्वतः निर्भर व्यवस्था (self sustaining system) को स्थापित करे जो भविष्य की जरूरतो को स्वतः पूरा करता रहे।

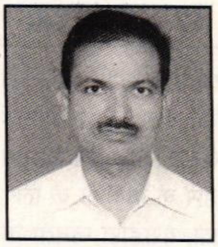

बिहार : ऐतिहासिक चुनाव, चुनौतियाँ एवं सुनहरे सपने

❑ शिव कुमार

आजादी के दशकों बाद तक बिहार के दूर–दराज क्षेत्रों में लगातार बन रही सड़कों,ने लोगों को अपने कार्य,रोजगार बढ़ाने की आशा जगाई ।जहॉ बरसात के दिनों में होने वाली परेशानियों से निजात दिलाने का काम किया वहीं किसानों को सड़कों के अभाव में उनके उत्पाद का सही दाम मिलने की संभावना बढ़ गई ।शहर,दूर देहातों में अस्पतालों की व्यवस्था में सुधार होने तथा आमजन, गरीबों को इसका अधिक लाभ मिलने से सरकार के ऐतिहासिक, कल्याणकारी कार्यो की सराहना हुई। जगह–जगह 'अक्षर आंचल'एवं 'हुनर' योजनाओं का लाभ अधिक लोगों तक पहुँचा जिसका परिणाम कहीं न कही चुनाव परिणामों पर पड़ा। पूर्व में बिहार का चुनाव हिंसा व हत्या के लिए जाना जाता था वहीं इस बार का चुनाव सरल, सामान्य व शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न होने के लिए जाना गया। लम्बी दूरी की गाड़ियॉ बिना बाधा चुनाव क्षेत्रो में चलती रहीं और आम आदमी ने इस चुनाव महापर्व में बढ़कर हिस्सा लिया।

महिलाओं को पचास प्रतिशत आरक्षण मिलने से उनकी भागीदारी बढ़ी ।लगभग 34 लाख महिला मतदाताओं में वृद्धि हुई। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी अधिक देखी गई। गरीबों तक उनके स्कूल जाने वाले बच्चे एवं बच्चियों के लिए साइकिल योजना,से कल्याणकारी योजनाओं के प्रति आम आदमी का विश्वास बढ़ा। पिछड़ा वर्ग,अत्यंत पिछड़ा वर्ग, दलित, महादलितों की इस चुनाव में बढ़ती भागीदारी ने चुनाव परिणाम को अधिक प्रभावित किया जो कभी वोट डालने से बंचित रह जाते थें वे इस महापर्व में खुशी–खुशी उत्साही माहौल में हिस्सा लिया एवं बिहार को नई दिशा देनें में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई।

एक समय था जब लोग बिहार में देर रात अपने घरों को लौटना मुश्किल समझते थे ।जो लड़कियॉ स्कूल, कॉलेज व शाम में परेशानियों का सामना करते थीं वही आज निर्भिक होकर देर रात भी अपने गणतव्य तक पहुॅचने की बात स्वीकारती हैं ।उनके मन में सुरक्षा के भाव ,विश्वास पैदा हुए हैं। आमजन अपने को घर और बाहर पहले से ज्यादा सुरक्षित महशूस करने के साथ ही कार्यस्थलों पर भी ज्यादा महफूज समझतें हैं ।यही सोच कहीं न कहीं इस चुनाव को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित किया।

इन सबों के बाबजूद बिहार के विकास में कई महत्वपूर्ण चुनौतियॉ सामने पड़ी हैं जिसपर गंभीरता पूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। सड़क ,पानी ,स्वास्थ्य एवं शिक्षा में कुछ कार्य हुए हैं, अभी और बहुत कुछ कार्य करना बाकी है ताकि हाशिए पर जीने बाले लोगों को कल्याणकारी योजनों का अधिक से अधिक लाभ मिल सके ।अंतिम पायदान पर जीने बालों को रोटी ,कपड़ा और मकान मिले इसके लिए गंभीरता पूर्वक विचार करना होगा ।समान शिक्षा प्रणाली ,दूर देहात तक सड़क एवं विजली की सुविधा पर कार्य की जरूरत है।

बिहार के ऐतिहासिक चुनाव परिणाम आश्चर्य ,हतप्रभ करनेवाला प्राप्त हुआ। पुरे राज्य में चली लम्बी चुनाव ने विहार को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने का मैाका यहॉ की जनता ने दिया ।बिहार की गौरवमयी इतिहास को फिर से स्थापित करने ,सुनहरे पलों की ओर बढ़ते हुए नये इतिहास गढ़ने की संभावना को जन्म दिया–इस चुनाव ने।

पुराने रिकार्ड के विपरित बिहार में सम्पन्न चुनाव छिटपुट घटनाओं को छोड़कर पुरी तरह से शांति से सम्पन्न हो गया। इस चुनाव के दौरान आम जनता मानो बड़े चुनावी महापर्व में हर्षोल्लास के साथ लम्बी–लम्बी कतारों मे खड़े हों अधिकांश व्यक्तियों की भगीदारी यह इंगित कर रहा था कि वे बिहार के गौरवशाली इतिहास को और गौरवमयी बनाना चहते हैं।

बिहार से बाहर गये अपने जीवकापर्जन में कार्यरत व्यक्तियों ही नहीं बल्कि बिदेशों में भी बिहारी मूल के लोंगों में बिहार में हुए चुनावी परिणाम को बड़े ही जिज्ञासा के साथ अपने राज्य के विकास को आशा की नजरों से देखते हुए इसके सुनहरे भविष्य की चाहत की छटपटाहट विभिन्न सूचना माध्यमों से परिलक्षित हो रही है।

आर्यभट्ट,बुद्ध,महावीर,सम्राट अशोक,चन्द्रगुप्त,चाणक्य,मौलाना मजरूल हक,महम्मद मकविल हुसैन,डॉ.राजेन्द्र प्रसाद,जयप्रकाश नारायन, डॉ.लोहिया, एवं महात्मा गॉधी जैसे महापुरूषों की यह कर्मस्थली को आम लागों ने फिर से अपनी सोंधी मिट्टी की धमक को पहचान कर यहॉ के जनप्रतिनिधियों को भारी बहुमत से मौका देकर बड़ी जबाबदेही सौंप दी है ।लोगों ने इन महापुरूषों के कार्यों,कर्तव्यों को याद करने पर मजबूर कर दिया है कि वे अपने अतित को जाने समझें और बिहार के आम जनता के हित में नयी सुनहरे तकदीर गढ़ें और भारत के सभी राज्यों की तुलना में बिकसित राज्य की श्रेणी में लाने के लिए कार्य करें।

इस बार नीतीश कुमार को तीसरी बार मौका देकर बिहार की जनता ने विकास रथ यात्रा को आगे ले जाने का मौका दिया। पूर्व के पॉच सालों में जो कार्य नीतीश सरकार के द्वारा

विकास की नींव दी गई वहीं नींव भविष्य के माकान बनने की जनाकांक्षा बन गई और लोगों को विश्वास दिलाने में सफल हो हुए। चुनाव पूर्व से उनके द्वारा पुरे बिहार की विकास यात्रा ने वर्तमान चुनाव परिणाम को लाने तक आंतरिक लहर के बहाव के रूप में कार्य करता रहा और आम नेताओं के अंदाज के विपरित परिणाम के आंकड़ों ने देश दुनिया के लोगों को अचंभित कर दिया।हांलाकि राज्य के वर्तमान सर्वमान्य नेता व नई दिशा देने वाले मुखिया अपने द्वारा किये गये कार्यों के कारण अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त तो दिखते थे पर जनता ने उन्हे उम्मीद से ज्यादा अंक देकर उनकी जिम्मेवारी का अहसास करा दिया और उनके द्वाराद 2015ई0 तक विकसित राज्य का सपना को साकार करने के लिए कार्य करने हेतु अपनी मुहर लगा दिया।

हमारे बिहार को प्राकृतिक आपदा यथा बाढ़,सुखाड़,भुकम्प से हमेशा ही सामना करना पड़ता रहा है जिसका स्थायी हल तो संभव नहीं दिखता पर उसके प्रभाव को जरूर कम करने के बारे में सोचा जा सकता है।प्रभावित लोगों तक त्वरित एवं उचित कल्याणकारी लाभ पहुँचाने के बारे सोचा जा सकता है।उत्तरी बिहार के बड़े भूभाग पर कई माह तक जलजमाव का संसाधन के रूप में उपयोग के बारे में वैज्ञानिकों को कार्य करने की जरूरत है।हॉलाकि वर्तमान चुनाव परिणाम ने सरकार द्वारा किए गये सकारात्मक प्रयास पर आम जनता की सहमति व विश्वास दिखती है जिसे अभी और आगे ले जाने की आवश्यकता होगी।

वैश्विक मंदी में भी बिहार का विकास दर 11.03 होना विनर्माण में 0.38 प्रतिशत की भागीदारी बना रहना शुभकारी रहा पर इसे और आगे बढ़ाने हेतु कार्य करने होगें। इसके लिए आंतरिक एवं बाहरी निवेश बढ़ाने हेतु आवश्यक मंथन एवं कार्य को अंजाम तक पहुँचाने के लिए भरपुर मिहनत करने की आवश्यकता होगी।

व्यवसायियों को आए दिन विभिन्न तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शिकायत निवारण हेतु सुदढ़ सुविधा केन्द्र जनता दरबार के तर्ज पर उद्यमी दरबार/उद्यमी पंचायत को सशक्त रूप से कार्यरूप देने की जरूरत है ताकि निवेश की गति बढ़े और व्यवसायी तेजी से वेहिचक अपने व्यवसाय को विहार के विकास में अपना सहयोग दे सकें।हॉलाकि इस चुनाव परिणाम ने बिहार मे अरवो रूपये के निवेश की संभावना को बढ़ाया है।भला षांति व सुदृढ़ कानुन व्यवस्था के माहौल में कौन नहीं सक्षम व्यक्ति या संस्थान निवेश करना चाहेगा अपने व्यवसाय बढ़ाने चाहेगें।यह बिहार कानुन व्यवस्था के मामले में धीरे-धीरे मजबुती से आगे की ओर बढ़ता जा रहा है।इस कारण भविष्य में इसके पुरे हिंदुस्तान में एक मॉडल राज्य के रूप में सामने आने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

इसबार बिहार के चुनाब में सुशासन के मुद्दे ने रंग लाया। आम जनों ने पूर्व के जातिय समिकरणों,गठबंधनों को तोड़ा तो नहीं पर करीब-करीब त्यागने,बचने का काम किया या कहें परहेज किया और विकास की बात करने व कार्य को अंजाम तक पहुँचाने वाले को लाभ दिया।यह बिहार के विकास के लिए श्शुभ सूचक है, यहाँ के आम गरीब ,वेवश, वेसहारा जनता के मन में बढ़ता आत्मविश्वास बिहार के सुनहरे सपनों को अंजाम तक पहुँचने की संभावना को दर्शाता है।नये समीकरण गरीबो ,महिलाओं युवाओं ,छात्रो,पिछड़ों,अति पिछड़ों,दलितों,महादलितों व अकलियतों को नयी संभावना दे रहे हैं,यह नये बिहार को बनाने में अहम भूमिका निभाने की संभावना को मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

इसके बाबजूद भ्रष्टाचार हमारी संस्थाओं व समाज में गहरी जड़ें जमाये हुए है। चुनाव के बाद बिहार सरकार द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाये गए कदम यथा सभी उच्चाधिकारियों ,जनप्रतिनिधियों द्वारा अपने धन की घोषना ,भ्रष्टाचार संबंधी मामलों का त्वरित निपटारा ,दोषी पाए जाने वालों के जब्त मकान में स्कूल खोला जाना,विधायक फंड, बंद करने संबंधी फैसला ,संचिका का पंद्रह दिनो के अंदर निपटारा एवं सेवा का अधिकार संबंधी कानुन सराहनीय होगा ।इस कार्य को यदि अंजाम दिया गया तो निश्चित रूप से बिहार पुरे देश के लिए एक मॉडल राज्य के रूप में बन सामने आएगा जो देश को भी एक नई दिशा देने की संभावना देगा।यदि इसपर ध्यान नहीं दिया गया तो आगे आने बाले सालों में जनता का विश्वास टूटेगा क्योंकि भ्रष्टाचार के कारण आम आदमी तक बहुत सारे कल्याणकारी योजनाओ का लाभ नहीं मिल पाता। 2015 तक बिहार को विकसित राज्य की श्रेणी में खड़ा करने का सपना को साकार करना जरूर मुश्किल होगा और जनआकाक्षाएँ सपना बनकर रह जएगी तब फिर एक बार बिहार की गौरवशाली इतिहास की मोटी-बड़ी रेखा खीचते-खीचते धरी की धरी रह जायेगी।

हमारे पास भौतिक व प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है पर यहाँ विशाल/प्रतिभा, हुनर, योग्यता ,कला संसकृति एवं ज्ञान संपदा का भंडार है जिसका उपयोग बिहार को विकसित राज्य बनाने में मिल का पत्थर सावित हो सकता है। जरूरत है हमसबों को निष्ठा, लगन,निर्भिकता, पारदर्शिता, कुशलता ,ईमानदारी के साथ-साथ पुरे आत्मविश्वास से लक्ष्यों की ओर ध्यान पूर्वक कार्य करने की। इस बीच विभिन्न तरह के झंझाबात ,व्यवधान आते रहेगे पर हमें महाभारत के अर्जून की तरह मछली की ऑख की जगह विकसित राज्यबनाने जैसे लक्ष्य पर ध्यान एकाग्रचित कर लगातार बिना रूके कार्य करते रहने होगें अन्यथा बिहार की जनता इस चूक के लिए जिम्मेबार लोगों को कभी माफ नहीं करेगी।

द्वारा कृष्ण नंदन प्रसाद, रामविलास चौक रोड नं. 4
इंदिरानगर,पोस्टल पार्क,पटना-1
(email-sheokumar@gmail.com)

जीत : विकास, विश्वास और स्वाभिमान की

❑ प्रो. पी.के. झा 'प्रेम'

जीत तो जीत है, खुशी तो होती ही है फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार के चुनाव में एनडीए की जीत मात्र, मतो की जीत नहीं बिहार के विकास की जीत है, यह बिहारियों के विश्वास की भी जीत है, बिहार से बाहर रहने वाले बिहारी के अस्मिता एवं स्वाभिमान की भी जीत है जो पूर्व के सभी चुनाव परिणामों से अलग है। इससे पहले भी अल्पमत, बहुमत एवं असाधारण बहुमत से सरकारे बनी; परंतु ऐसा लगता था कि पहले दल जीतता था लेकिन शाय्द पहली बार दल के स्थान पर दिल जीता है। बिहार एवं बिहार से बाहर रहने वाले बिहारी इस जीत को स्वयं की जीत मानते है। आखिर यह जीत दिल के जीत के रूप में कैसे परिवर्तित हुई? सीधा सा उत्तर है- एनडीए सरकार के द्वारा किये गये भागीरथी प्रयत्न के बाद पहली मर्तबा लोगों को लगा की यह सरकार उनकी अपनी सरकार है। योजनाएँ पहलें भी बनती थीं, खर्चे पहले भी होते थे, केन्द्र सरकार पहले भी मदद देती थी, लेकिन सर-जमीन पर सिवाए खानापूर्ति के कुछ नहीं उतरता था। पिछले पंद्रह वर्षों के कुशासन ने तो सरकार होने का भ्रम ही मिटा दिया था। परिणामस्वरूप लोगों ने बिहार से पलायन करना ही बेहतर समझा। परिणाम स्वरूप कुछ बिहार वासियों का तो भला हुआ, लेकिन बिहार पिछड़ता चला गया। इस बार की जीत यह साबित करती है कि बीता पाँच साल सुशासन का बिहार को विकास के साथ विश्वास एवं स्वाभिमान भी प्रदान कर रहा है फलतः लोगों ने भी परिणाम चौकाने वाला दिया। ऐसे परिणाम की अपेक्षा विपक्ष के साथ सत्ता पक्ष को भी नहीं थी। 2010 का ऐतिहासिक चुनाव परिणाम निश्चय ही खुशी का प्रदर्शन करने वाला है।

साथ ही यह चुनाव परिणाम विश्वास एवं स्वाभिमान को बरकरार रखने वाला है। एनडीए सरकार के लिए चुनौती है कि जनता का भरोसा टूटे नहीं, विकास का पहिया रूके नहीं और बिहार से बाहर रहने वाले बिहारी स्वाभिमान को नहीं पहुँचे/क्योंकि विकास तो मात्र रूटीन प्रक्रिया है असल है बिहारियों में विश्वास की एवं बिहार से बाहर रहने वाले बिहारियों के स्वाभिमान की। वर्षों बाद बिहार से बाहर रहने वाले बिहारियों के स्वाभिमान की रक्षा करने वाले सरकार आई है और इसका इजहार भी किया गया। यही कारण है कि इस जीत को हम न सिर्फ विकास की जीत कहते हैं वरण इस जीत को विश्वास एवं स्वाभिमान की जीत भी कह सकते है। वास्तव में अब समय आ गया है कि हम इस जीत की रक्षा करें- चाहे हम पक्ष में हो या विपक्ष हो-वास्तव में यह ऐतिहासिक जीत समीक्षा करने योग्य है।

इस बार के चुनाव परिणाम को देशी-विदेशी विश्लेषक विकास की जीत मानते है। सत्य भी यही है। काफी दिनों बाद बिहार में विकास की धारा बहती दिखी। हालाँकि सरकार ने वही किया जो उन्हें करना चाहिये। वास्तविकता यही है कि पिछले पंद्रह वर्षों के कुशासन ने विकास की परिभाषा ही बदल दी थीं। विकास तो तब भी हुआ लेकिन सिर्फ कुछ लोगों का जो सत्ता में बैठे लोग थे या फिर अफसरों के बिरादरी में शामिल थे- समाज के भी एक वर्ग विशेष को लाभ मिला जिसने ब्लॉक से लेकर सचिवालय तक को अपने गिरफ्त में कर रखा था। इसीलिए हम उसे विकास नहीं कह सकते। विकास तो अब दिख रहा है। जैसे ही बिहार में प्रवेश करेगे विकास की झलक स्वतः दिखाई देगी।

आज बिहार के प्रत्येक घर में दो से दस हजार नकद किसी न किसी रूप में आने लगा है। खेतों में पानी मिलने लगा है, बच्चे निडरता पूर्वक स्कूल जाने लगे है, शिक्षक ईमानदारी से स्कूल में दिखने लगे हैं। ब्लॉक से लेकर सचिवालय तक में बाबुओं की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। गाँव, कॉलोनी में सड़कें बनने लगी हैं, अस्पतालों में डॉक्टर बैटने लगे हैं, रोगियों को मलहम-पट्टियाँ भी मिलने लगी हैं। बाढ़, सुखाड़ में लोगों को राहत भी मिल रही है। समय पर परीक्षाएँ आयोजित होने लगी हैं और उनका परिणाम सही एवं समय पर प्रकाशित होने लगा है। आमतौर पर अपराध एवं भ्रष्टाचार के कारण चर्चा में रहने वाले बिहार का सकल घरेलू उत्पाद ग्यारह प्वाइंट तीन प्रतिशत तक बढ़ गया है इसलिए इसे हम अर्थव्यवस्था में सकारात्मक बदलाव कह सकते हैं। विकास का परिणाम निर्माण के क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहा है। वर्ष 2004-2009 के दौरान 34.4 प्रतिशत औसत वृद्धि देखने को मिली। बिहार के इसी विकास को देश के ही नहीं, विदेश के मीडिया ने भी सराहा है। बिहार में विकास की बयार जो सबसे ज्यादा शकून दे गयी वह है-बरसों से वित्त रहित शिक्षा की समस्थिति तथा भारी संख्या में प्रत्येक स्तर पर शिक्षकों की बहाली क्योंकि शिक्षा ही लोगों में विकास की जागरूकता से अवगत कराती है। राज्य में तेजी से औद्योगिक विकास बढ़ता गया और मजदूरों को काम मिलता गया। परिणामस्वरूप राज्य से लोगों के पलायन में कमी आई है। बरसो से उपेक्षित संस्कृत शिक्षा बोर्ड विद्यालयों को वित्त सहित प्रस्कृति देना संस्कृत एवं सांस्कृतिक विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। विकास की गाथा यहीं समाप्त नहीं हो सकती। वास्तविक विकास तो अब होगा। बिहार की जनता ने जब विकास को जीत दी है तो विकास के पथ पर बिहार सरकार कैसे और तेजी से दौड़ सकती है इस पर अमल करना होगा। बिहार में विकास की त्वरित प्रगति के लिए जो सर्वाधिक उपयोगी कदम होगा वह है प्रदेश का चौमुखी विकास और उसके लिए रोजगार सृजन, कृषि एवं उद्योगों का समुचित विकास एवं लोगों में आत्मविश्वास अर्थात् सभी को यह विश्वास हो ही जाए कि अब विकास हो के रहेगा।

विकास हेतु अन्य वह सभी प्रयोग जो अन्य राज्य अपने विकास के लिए प्रयोग में लाते है।

जीत विश्वास की :- देश-विदेश की मीडिया हो या बुद्धिजीवी बिहार के चुनाव परिणाम को सभी विकास की जीत मानते है। बात सत्य भी है लेकिन उससे भी बड़ा सत्य यह है कि यह चुनाव परिणाम विश्वास की जीत है क्योंकि बिहार का विकास कभी होगा भी - इसका विश्वास शायद किसी को नहीं हो रहा था इसीलिए इस जीत को विश्वास की जीत कहा जा सकता है। सही मायने में विगत पंद्रह बरसों के घटना कर्म को देखा जाए तो सहज विश्वास ही नहीं होता था कि बिहार में कोई सरकार भी है या कभी ये दिन बदलेंगे भी? लोग अपने आप पर विश्वास करना छोड़ दिए थे कि क्या कभी

1. वित्त रहित शिक्षा नीति समाप्त होगी?

2. खेतों को पानी मिलेगा, खंभों पर टंगी तारों में बिजली आएगी?

3. बच्चे जो स्कूल गए है क्या लौट कर आएंगे?

4. बरसों से चली आ रही सामाजिक परम्परा कायम रहेगी?

5. क्या बिहार से बाहर बिहारी गाली से उबर पाएंगे?

और न जाने कितने प्रश्नों पर विश्वास ही नहीं होता था लेकिन एनडीए की सरकार महज अपने पाँच बरसों के शासनकाल में मुश्किल से भरे कारनामे को न केवल अंजाम तक पहुँचाने में सफल रही बल्कि लोगों को विश्वास दिलाने में भी कामयाब रही कि आपकी इज्जत-अस्मत एवं बच्चों के भविष्य सुरक्षित हैं। एनडीए की जीत इसलिए भी विश्वास की जीत कहलाएगी कि बिहार से बाहर रहने वाले बिहारी अब बिहार आने पर विचार करेंगे क्योंकि उन्हें अब रात्री में स्टेशनों पर रूकना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्टेशन से ही बिहार के किसी भी कोने में 24 घण्टे निर्विघ्न यात्रा कर सकते हैं। बाहर से कमाए गए पैसों का निवेश बिहार में ही कर सकते हैं। वरना लोग तो बिहार को भुलाने लगे थे लेकिन एनडीए की सरकार ने बीते पाँच बरसों में यह विश्वास दिला दिया की आप सुरक्षित भी हैं और सम्मानित भी। बरसों से वित्त रहित शिक्षा की कुंठा में गलते जा रहे हजारों-हजार नौजवान या तो समय से पहले बूढ़े हो गए या 'प्रोफेसर' एवं 'मास्टरजी' बनने का सपने लिए ऊपर सिधार गए। उन्हें भी एनडीए सरकार ने आंशिक ही सही लेकिन डबूते को तिनका का सहारा देकर विश्वास दिला दिया कि उनका भी ख्याल रखा जाएगा और इसका ही परिणाम है कि राज्य से बाहर रहने वाले बिहारी इस वर्ष के चुनाव में अपने विश्वास पर मोहर लगाने बॉम्बे, दिल्ली एवं देश के अन्य हिस्सों से आए और अपना कीमती मत एनडीए सरकार को दिया और यह जीत विश्वास की जीत में बदल गयी। आशा है एनडीए की सरकार इस विश्वास की जीत को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बातों पर गौर फरमाएगी :-

1. राज्य में अमन चैन बना रहे

2. राज्य के सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग (सवर्ण) के विश्वास को बनाए रखना होगा क्योंकि विगत कुशासन ने सर्वाधिक नुकसान इन्हें ही पहुंचाया ऐसा लगता था।

3. राज्य के सबसे उपेक्षित, पीड़ित एवं प्रताड़ित वित्त रहित शिक्षकों के विश्वास को धक्का न लगे अर्थात् उन्हें भी नौकरी का सम्मान व मेहनताना मिले, क्योंकि अंततः वही नौनिहालों के भाग्य निर्माता हैं और फिर कहा भी तो गया है- भूखे भजन न होए गोपाला'।

4. राज्य के तमाम नागरिकों खासकर दलित, महिला एवं अल्पसंख्यक के विश्वास को बनाए रखना होगा।

5. राज्य के बाहर निवास करने वाले बिहार वासियों के सम्मान व विश्वास को बनाए रखना होगा, अगर वह टूटा तो बिहारी का विश्वास कहीं न कहीं प्रभावित होगा।

जीत स्वाभिमान की :- यह जीत निश्चित रूप से विकास एवं विश्वास की जीत है, लेकिन कहीं न कहीं यह जीत बिहार एवं बिहार वासियों के स्वाभिमान की भी जीत है। विकास के बिना लोगों ने जीना सीख लिया था, विश्वास के बगैर भी लोग जी रहे थे, लेकिन स्वाभिमान के बगैर जीना तो मरने के समान था। वास्तविकता भी यही थी कि लोगों ने बिहार से बाहर जाकर अपना विकास किया, लेकिन कहीं न कहीं उन्हें अपने स्वाभिमान से भी समझौता करना पड़ा। वहाँ उन्हें भारी सुख-सुविधाएं प्राप्त तो है, लेकिन दिल के किसी कोने में उन्हें यह सालता रहता है, अपने माटी की संस्कृति जो चैन से जीने नहीं देता। लेकिन करे तो क्या करे? यह एनडीए की सरकार उन्हें वापस अपने माटी से जुड़ने की सहज रास्ता उपलब्ध करा दी और इसी का परिणाम है कि वह सभी अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए 2010 के चुनाव में बढ़-चढ़कर भागीदाड़ी निभाई और परिणाम में चुनाव में भारी सफलता मिली। हालांकि सरकार ने अपने पहले ही महिना में उनके स्वाभिमान के रक्षा के लिए कई सारी घोषानाएं की है। भरोसा है अमल भी होगा फिर भी कुछएक बातों पर तो ध्यान देना ही होगाः-

1. सभी विभागों में व्यापक पैमाने पर रोजगार सृजन किया जाए।

2. प्रदेश में उद्योगों का जाल बिछाया जाए कृषि को उद्योग का दर्जा दिया जाए।

3. बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने के लिए केन्द्र सरकार पर सर्वदलीय दवाब बनाया जाए।

4. राज्य के सांस्कृतिक विरासत को पुर्नजीवित करने के लिए व्यापक पैमाने पर ध्यान दिया जाए।

5. राज्य और राज्य से बाहर बिहार के स्वाभिमान की रक्षा के लिए हर संभव प्रयासरत रहा जाए।

अंततः यह जीत एनडीए सरकार के लिए चुनौती भरा है, लेकिन अदम्य साहस एवं संकल्प शक्ति के धनी व्यक्तित्व नीतीश कुमार एवं उनके सहयोगी इसे पहुंचाएंगे ऐसा दिखाई पड़ने लगा है।

◗ संपादक 'बिहार संदेश
डी-86/ए (भूतल), गणेश नगर कंप्लेक्स,
पांडव नगर, दिल्ली-92
(मो. 9213102432)

एन.डी.ए. की जीत में महिलाओं की भूमिका

❑ प्रो. अंजना चौबे

वर्ष 2010 का बिहार विधानसभा का चुनाव कई मायने में अभूतपूर्व रहा है। इस चुनाव परिणाम की संभावनाएं शायद किसी को भी था। एन.डी.ए. को लोग जिताएंगे ऐसा सभी मानते हैं, लेकिन जीत इतनी ऐतिहासिक होगी, यह शायद विपक्ष के साथ-साथ सरकारी पक्ष को भी नहीं था। चुनाव परिणाम एक तरफा एन.डी.ए. के पक्ष में 85 प्रतिशत के रूप में आया इसका विश्लेषण कई तरह से लोग करते है। ऑक्सन सही भी है कई इसे विकास का परिणाम मानते हैं, तो कई भ्रष्टाचार की समाप्ति, तो कोई सड़क पानी आदि मूलभूत समस्या के समाधान का परिणाम मानते हैं। लेकिन चुनाव परिणाम में जो एक अहम भूमिका है वह है महिलाओं की भागीदारी। शायद आजादी के बाद यह पहला मौका है। जब बिहार की महिलाएं इतनी बड़ी तादात में मतदान में भाग लिया। वह मतदान भी एन.डी.ए. सरकार के पक्ष किया गया।

इतना ही नहीं महिलाएं अपने परिवार के पुरुषों के इच्छा के खिलाफ एकजुट होकर एन.डी.ए. सरकार के पक्ष में मतदान किया। इसके पीछे जो सबसे बड़ा कारण है कि इस सरकार ने महिलाओं को वो आत्म-सम्मान दिया जो आज से पूर्व किसी सरकार न नहीं दी थी। जबकि इस सरकार से पूर्व की सरकार में नेतृत्व भी महिला मुख्यमंत्री के हाथों में था, लेकिन महिला अगर अपने सबसे ज्यादा असुरक्षित महसूस कर रही थी वे भी महिला मुख्यमंत्री के राज्य में ही। बिहार के महिलाओं को पहली बार उनके होने का अहसास दिलाया एन.डी.ए. की सरकारने।

भले ही केन्द्र की सरकार आज तक महिला आरक्षण विधेयक पास नहीं करवा पायी जबकी उस सरकार को दिशा-निर्देश देने वाली भी एक महिला ही है, इतना ही नहीं, देश की सबसे बड़ी पंचायत का चलाने वाली सरकार की अध्यक्ष भी एक महिला ही है। बावजूद आज तक महिला आरक्षण विधेयक; किन्तु, परंतु में उलझा हुआ है। उस काम को अंजाम दिया बिहार में एन.डी.ए. सरकार ने पंचायत के चुनाव में 50% आरक्षण महिलाओं को देकर, इतनी ही नहीं सरकार के मुखिया नीतीश कुमार ने महिला आरक्षण विधेयक पर अपनी मंशा स्वीकृति में जाहिर और कहा कि- भले ही पार्टी के अध्यक्ष की राय मेरी राय से मिला हो, लेकिन मेरा मानना है कि-''सर्व प्रथम महिला आरक्षण विधेयक पारित होना चाहिए। आरक्षण के अंदर आरक्षण का मुद्दा बाद में उठाया जाएगा।'' इसके साथ ही नीतीश कुमार ने बिहार में महिला शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली परेशानी को महसूस किया कि अक्सर प्राइमरी स्कूल के बाद गरीब मां-बाप अपनी लड़कियों को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं होते, क्योंकि छठी कक्षा के बाद लड़कियों के शारीरिक विकास के साथ ही तन-ढकने के लिए कपड़े की आवश्यकता होती है। जो वो जुटा नहीं पाती। इसलिए उन्होंने लड़की को प्रति वर्ष 700/- रु. देना शुरू किया। इ

सके लिए राज्य में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में इस आशय का विज्ञापन प्रकाशित करवाया ताकि राज्य में एकरूपता बना रहे और राज्य में निवास करने वाली सभी लड़कियां इसका लाभ उठा सके। इसके साथ हाई स्कूल में पढ़ने वाली सभी लड़कियों को साइकिल खरीदने के लिए दो हजार देना निर्धारित किया। परिणाम यह हुआ कि आज गांव से लेकर शहर तक की लड़कियां अपनी पढ़ाई के लिए सड़कों पर निकल पड़ी है और उन्हें अब डर भी नहीं है साथ में उन्होंने शुरू की बाहर हजार मुस्लिम लड़कियों में हुनर विकसित करने के लिए व्यवस्था सुनिश्चित की जिसे आगे और बढ़ाना है।

अनुसूचित जाति, जनजाति की लड़कियों के लिए भी कई सकारात्मक योजनाएँ शुरू की गयीं जिनका प्रभाव देखा भी जा रहा है। इसके अलावे भी विकास ने महिलाओं की बेहतरी के लिए आंगनवाड़ी योजना, आशा बहु जैसी ग्रामीण योजना ने ग्रामीण महिलाओं के बेहतरी के लिए मील का पत्थर साबित हुआ और कहीं न कहीं महिलाओं के आत्मविश्वास की बढ़ोत्तरी में मददगार साबित हुआ। परिणाम स्वरूप उन्होंने भी इसका मेहनताना के रूप में एन.डी.ए. सरकार को अपनी आर्शीवाद के रूप व्यापक स्तर पर मतदान कर ऐतिहासिक जीत दिला दी । इसलिए हम यह सकते हैं कि एन.डी.ए. की इस ऐतिहासिक जीत में महिलाओं की अहम भूमिका रही है।

इस ऐतिहासिक जीत के मायने

❑ संजय कुमार

सत्ताधारी जदयू-भाजपा गठबंधन ने बिहार विधानसभा चुनाव में दो तिहाई से अधिक बहुमत हासिल कर इतिहास रच डाला है। जदयू-भाजपा ने 206 सीटें हासिल कीं, जो पिछले चुनाव से भी 63 ज्यादा है। जबकि उसका निकटतम प्रतिद्वंबी राजद-लोजपा गठबंधन अपने आँकड़े को 25 तक ही पहुँचा पाया जो 2005 के चुनाव से 29 कम है। काँग्रेस तो 9 से घट कर चार सीटों तक ही सिमट गयी। सीपीआई एक मात्र सीट के साथ केवल खाता खोलने में सफल रही। झारखंड मोर्चा के खाते में एक, जबकि अन्य के खाते में भी मात्र छह सीटें गयीं। पिछले कुछ दशकों के विधानसभा चुनावों में किसी पार्टी या गठबंधन की ऐसी बड़ी जीत नहीं हुई थी।

बिहार में केवल पहले दो विधानसभा चुनाव (1952 और 1957) ऐसे रहे, जिसमें काँग्रेस 200 का आँकड़ा पार करने में सफल रही थी। तब विधानसभा में सीटों की संख्या 324 थी। तब काँग्रेसके खाते में 40 फीसदी से अधिक मत पड़े थे। इस चुनाव में सत्ताधारी गठबंधन के पक्ष में करीब 39.5 फीसदी मत पड़ और उसने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी राजद गठबंधन को 14 फीसदी मतों से पीछे छोड़ दिया, जिसे सिर्फ 25.5 फीसदी मत मिले। यदि हम राजद गठबंध न की सबसे बड़ी जीत को याद करें तो 1995 के विध ानसभा चुनाव में उसे करीब 35.5 फीसदी मत मिले थे। तब राजद को नाम जनता दल था। जदयू-भाजपा गठबंधन को जब पिछली बात सत्ता मिली थी तब उसके खाते में 36. 2 फीसदी वोट पड़े थे।

वामपंथी पार्टियों का बिहार के कई इलाकों में जनाधार रहा है। पिछले चुनावों में रुझान चाहे राजद गठबंधन के पक्ष में रहा हो या जदयू-भाजपा, कुछ सीटों पर जी के साथ वामपंथी पार्टियों का भी लगभग सफाया हो गया। प्रमुख वामपंथी पार्टियों का भी लगभग सफाया हो गया। प्रमुख वामपंथी पार्टियों सीपीआइ, सीपीएक और सीपीआइ के बीच गठबंधन के बावजूद केवल सीपीआइ एक सीट जीत सकी। ऐसे में बसपा के उभरने की तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी, क्योंकि राज्य के किसी इलाके में पार्टी की दमदार उपस्थिति नहीं है।

इस बार का नतीजा भले ही पिछले चुनावों से काफी अलग है, लेकिन कुछ मामलों में इसकी तुलना 1995 के विधानसभा चुनाव के नतीजे से की जा सकती है। 1995 के चुनाव ने बिहार की राजनीति का सामाजिक एजेंडा बदल दिया था। तब पहली बार राज्य की सत्ता की चाभी अगड़ी कही जाने वाली जातियों के हाथ से फिसल कर पिछड़ी जाति के नेता के हाथ में आयी। इस बार के विधानसभा चुनाव ने भी राजनीतिक के एजेंडे को बदला है। इसने सामाजिक और राजनीतिक गठबंधनों को नया एजेंडा दिया है विकास का संदेश साफ है, वोटर उस सरकार को दोबारा मौका देंगे, जो विकास करेगी। लालू-राबड़ी के 15 वर्षो के शासनकाल में राजद सुप्रीमों लालू प्रसाद वोट बैंक के गणित में ही उलझे रहे। उनका एम-वाई(मुसलिम-यादव) का नारा इतना सफल हुआ कि उन्हें राज्य के विकास की कभी जरूरत ही महसूस नहीं हुई।

भारी बहुतम से दोबारा चुने जाने पर नीतीश ने कहा भी इस नतीजे ने साबित किया है कि चुनावी जीत केवल सामाजिक जोड़-तोड़ से ही नहीं, विकास के दम पर भी हो सकती है। पिछले पाँच वर्षो के कार्यकाल में उन्होंने पूरे राज्य में सड़कों के निर्माण और जीर्णोद्धार पर ध्यान दिया। कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार के पीछे कहीं से भी उनका मकसद किसी एक जाति या समुदाय को लाभ

पहुँचाना नहीं था। उनके इन कामों से जाति या समुदाय की सीता से परे राज्य की आम जनता को फायदा हुआ। मतदान बाद सर्वेक्षण के नतीजे साफ बता रहे थे कि राज्य की आम जनता का बहुत बड़ा वर्ग उनके इन दोनों कामों से खुश था। जनता की यह खुशी मतदान में भी झलकी विकास कार्यो के दम पर नीतीश कमोबेश सभी प्रमुख जातियों क`मत पाने में सफल रहे। स्कूली छात्राओं को साइकिल देने और पंचायतों महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण जैसे कदमों ने भी उन्हें जाति और समुदाय की सीमा से परे अभी वर्गो खासकर महिलाओं में लोकप्रिय बनाया। आँकड़ बताते है कि इस चुनाव में महिलाओं की भागीदारी ऐतिहासिक रही है। राज्य में 54 फीसदी महिला मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जबकि पुरुष मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जबकि पुरुष मतदाताओं में मतदान करने वालों का प्रतिशत सिर्फ 50 था। यह बिहार का पहला चुनाव था, जिसमें मतदान करने वाली महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से अधिक रहा। नतीजे गवाह है कि महिलाओं की इस ऐतिहासिक भागीदारी का लाभ भी सत्ताधारी गठबंधन को मिला।

यह सही है कि इस चुनाव में विकास का मुद्दा कारगर रहा, लेकिन यह कहना गलत होगा कि एकसी जीत सिर्फ विकास के दम पर मिली है और बिहार की राजनीति से जाति का मुद्दा खत्म हो गया है। अपने विकास कार्यो के दम पर नीतीश 2009 के लोकसभा चुनाव में अति पिछड़ी जातियों का मत पाने में सफल रहे थे। पर केवल अगड़ी, कुर्मी, कोयरी और अति पिछड़ी जातियों के मतों से ही वे ऐसी बड़ी जीत हासिल नहीं कर सकते थे। विकास के दम पर भी वे अपनी दोबारा जीत पक्की मानकर नहीं चल सकते थे। इसलिए नीतीश ने राजद-लोजपा के पारंपारिक वोट बैंक में भी सेंध लगाने की कोशिश की। दलित जहाँ लोजपा प्रमुख रामविलास पासवान के पारंपरिक वोट बैंक माने जाते थे, वहीं मुसलिम मतों को राजद के वोट बैंक के रूप में देखा जाता था। नीतीश ने अति पिछड़े दलितों को महादलित का नाम दिया और उनके कल्याण की कई योजनाएँ शुरू कीं। इससे से दुसाध जाति, जिससे राम विलास पासवान भी आते हैं, को छोड़कर सभी अति पिछड़ी जातियों का मत पाने में सफल रहे। इसी तरह मुसलमानों की पिछड़ी जातियों के लिए भी उन्होंने कई योजनाओं की घोषणा की और उन्हें 'पसमांदा मुसलमान' का नाम दिया। उनके इन दोनों कदमों का अच्दा-खासा असर हुआ। इससे यहाँ वे पिछड़ी जातियों के लोगों को लाभ पहुँचाने में सफल रहे, वहीं अपने विरोधियों के इस वोट बैंक में सेंध लगाने में भी कामयाब हुए।

सीएसडीएस, दिल्ली के सर्वेक्षणों के नतीजे बताते है कि दुषाध जाति के मतदाताओं का रूझान भले ही राजद-लोजपा गठबंधन के पक्ष में रहा हो, दूसरी सभी दलित जातियों का झुकाव सत्ताधारी गठबंधन की ओर रहा। इसी तरह मुसलिम वोट का भी जदयू-भाजपा, राजद-लोजपा और काँग्रेस के बीच विभाजन हुआ। राजद उन्हीं इलाकों में मुसलिम वोट पाने में सफल रहा, जहाँ उसके खिलाफ भाजपा के उम्मीदवार थे। जिन इलाकों में उसका मुकाबला जदयू से था, वहाँ राजद अपना सहयोगी लोजपा को मुसलिम मत दिला पाने में सफल नहीं रहे। जिन इलाकों में मुसलिम मतदाताओं को भाजपा या लोजपा में से किसी एक को चुनने का विकल्प था, वहाँ उन्होंने काँग्रेस या निर्दलीय उम्मीदवार का साथ दिया। कुल मिलाकर राजद गठबंधन को सबसे ज्यादा नुकसान मुसलिम मतों के खिसकने से ही हुआ और इसने नीतीश को बड़ी जीत दिलाने में खास भूमिका निभायी।

नीतीश की इस जीत में जहाँ उनके कामों के प्रति जनता की खुशी का इजहार है, वहीं यह संकेत भी कि लोगों को उनकी सरकार से काफी अधिक उम्मीदें है। अब नयी सरकार के सामने असली चुनौती जन उम्मीदों पर खरा उतरने की होगी।

बिहार में लोकतंत्र ने अपनी तान भरी

❑ सिद्धेश्वर

बिहार उन महत्त्वपूर्ण राज्यों में से एक है जिसने समय-समय पर भारतीय राजनीति को प्रभावित किया है। चाहे स्वतंत्रता संग्राम का समय हो या जे०पी० के संपूर्ण क्रांति का आंदोलन सबों से देश को एक रोशनी मिली है। यही नहीं आपको याद होगा ढाई हजार वर्ष पूर्व भी छठी शताब्दी ई०पू० में बुद्धकालीन गणराज्यों में अधिकांशतः बिहार के मगध एवं वैशाली में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम हुई थी। आज पुनः इस राज्य में लोकतंत्र ने पुनः अपनी तान भरी है। आजादी के बाद से ही लगातार शोषित हो रही बिहार की जनता ने पिछड़ों की राजनीति करने वालों को आत्मसात करने के लिए सर्वप्रथम कदम बढ़ाया। आज से दो दशक पहले काँग्रेस की सरकारों से उबकर यहाँ की जनता ने लालू व रामविलास जी को सत्ता की चाबी सौंपी थी। उस वक्त जनता के फैसले को सराहा गया था और यह समझा गया था कि इससे गरीबों का भला होगा, किंतु सत्ता पर विराजमान होने के बाद परिवारवाद, जातिवाद और माफियावाद का वर्चस्व कायम हो गया। सत्ता के मद में चूर उनके नेताओं ने भ्रष्टाचार की सारी हदें पार कर दीं और राजनीति का अपराधीकरण हो गया। इस स्थिति को देखते हुए राजनीति के विश्लेषकों ने यह कहना प्रारंभ कर दिया था कि बिहार में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला है। जातिवाद व संप्रदायवाद की वजह से यहाँ विकास नहीं हो सकता, लेकिन इतिहास स्वयं को दोहराता है।

वर्ष 2010 में बिहार विधानसभा के लिए जो चुनाव हुए उसमें नीतीश कुमार के नेतृत्ववाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को स्पष्ट जनादेश मिला। इस चुनाव ने स्पष्ट संदेश दिया कि भ्रष्टाचार और अपराध से मुँह मोड़कर लोकतंत्र को मजबूत नहीं किया जा सकता। बिहार की जनता ने उन शक्तियों को केवल पराजित ही नहीं किया, बल्कि जड़ से उखाड़ फेंका, जो लोकतंत्र की जड़ें खोद रहे थे। नीतीश कुमार ने वर्ष 2005 में जब बिहार की सत्ता संभाली थी, तब उन्होंने विकास को मुख्य मुद्दा बनाया था और अपराधियों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने का संकल्प लिया था। इसी के अनुरूप बिहार में उनके कार्यकाल में 52 हजार अपराधियों को अदालत से सजा मिली। पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा करने के पश्चात् उन्होंने अपने कार्यकलापों से यह साबित कर दिया कि जनता विकास और सुरक्षा चाहती है, मजहबी और जातीय नारे नहीं। इस चुनाव में नीतीश कुमार ने कभी भी जाति या संप्रदाय की बात नहीं की। नीतीश कुमार की ऐतिहासिक जीत का निहितार्थ इतिहास के आईने में देखा जाना चाहिए। बिहार की लोकशक्ति ने लोकतंत्र की शक्ति का जो प्रदर्शन किया है उससे असली लोकतंत्र का अहसास होता है। लोकतंत्र में निष्ठा और ईमानदारी अपने आप में सच्चरित्रता का सबसे बड़ा प्रमाण पत्र होता है, लेकिन यदि आप सार्वजनिक जीवन के अनुभव से गुजर रहे हों, तो आपकी बेदाग छवि दिखनी भी चाहिए। नीतीश जी की विकास के प्रति और काम के प्रति ईमानदारी बरतने में इनकी बेदाग छवि दिख गई।

जिन सिद्धांतों और आदर्शों पर देश की आजादी की नींव रखी गई थी, जिसके लिए देश के महान नेताओं की पूरी पीढ़ी ने संघर्ष किया, अपना सब कुछ न्योछाबर कर दिया, वही सिद्धांत खतरे में पड़ गया था। इसी के मद्देनजर नीतीश कुमार और उनकी राजग सरकार ने बिहार में विकास और सुरक्षा के कई स्तरों पर सेवाओं के कुशल निष्पादन के लिए अपनी क्षमता और दूरदर्शिता का परिचय दिया। उन्होंने अंधकार में न जाकर आगे बढ़ने का फैसला किया और जाति समीकरण की जंजीर को तोड़ा। हम सब इस बात से अवगत हैं कि नीतीश कुमार लोकनायक जय प्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की उपज हैं और एक कुशल अभियंता होने के साथ-साथ गंभीर स्वभाववाले राजनीति के सामाजिक अभियंता (ैवबपंस म्दहपदममत) भी । वह अपने ऊपर सौंपी गई जिम्मेदारी को भलिभाँति समझते हुए उसका निर्वहन करना भी जानते हैं। वह काम में विश्वास करते हैं, बात में नहीं। आखिर तभी तो उनके पाँच वर्षों के कार्यकाल में तकरीबन दस हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण हुआ, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार के साथ अपराधियों एवं रंगदारों पर अंकुश लगा। पंचायती राज में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई तथा अति पिछड़ों को 20 प्रतिशत आरक्षण प्रदान कर उन्होंने सामाजिक न्याय को विकास के साथ जोड़ा। यही नहीं, लूट, हत्या, अपहरण, चोरी-डकैती तथा बलात्कार की घटनाओं में काफी कमी आई।

नाउम्मीदी के वक्त बिहार में संपन्न चुनाव के नतीजे एक सुखद झोके की तरह आए और उसने राजनीति को झकझोरा ही नहीं, नए सिरे से सोचने को मजबूर किया है। इस चुनाव ने लालू पासवान का राजनीतिक कद एक झटके में छोटा कर दिया और दोनों के दंभ और बड़बोलेपन ने उन्हें अर्श से फर्श पर ला खड़ा कर दिया। यही नहीं, देश के भावी प्रधानमंत्री को भी चुनाव ने उनकी हैसियत बता दी। दरअसल, राजनीति में भरोसे और विश्वास को खोकर जीवित नहीं रहा जा सकता। कोई भी राजनीतिक दल परिवार, वंश और जाति के संकीर्ण घेरे में एक लंबे अरसे तक नहीं रह सकता, यह एक-दो को छोड़कर नेताओं के बेटे, भाई-भतीजे, दामाद-बहू की करारी हार ने साबित कर दिया है।

यों तो पहले से भी यह कयास लगाया जा रहा था कि इस बार नीतीश कुमार की हुकूमत वापस लौटेगी, किंतु इतना भारी

समर्थन मिलेगा इसकी कल्पना नहीं की गई थी। पूरे बिहार में विकास की ऐसी आँधी चली कि किसी भी दल को विपक्षी दल बनने का मौका तक नहीं मिला। यह तो कहिए कि सत्ता पक्ष की सदाशयता कि 25 की जगह मात्र 22 सीटें हासिल करने के बाद भी राजद के विधायक अब्दुल बारी सिद्धिकी को प्रतिपक्ष का नेता मान लिया गया। नीतीश जी के चेहरे को देखकर मुसलमानों ने भाजपा को भी वोट दिया। यही नहीं, बल्कि भाजपा से भी मुसलमान समाज के एक विधायक जीतकर आए इसे नीतीश जी की शख्सियत की कामयाबी कहना लाजिमी होगा। इस जीत से इतना तो अब साफ हो गया है कि जो काम करेगा उसे वोट मिलेगा। इस पर योग गुरु बाबा रामदेव ने भी अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि वक्त रहते जो राजनेता इसे समझ लेगा वो 'तर' जाएगा, नहीं तो सत्ता से 'उर' जाऐगा। निश्चित रूप से बिहार विधान सभा के लिए हुए इस चुनाव में राजग को मिले अपार जनादेश के बाद देश सबसे पिछड़ा हुआ बिहार राज्य राजनीतिक तौर पर रोल मॉडेल बनेगा। इस प्रकार नेताओं को यह चिंता सताने लगी है कि यदि विकास ही मुख्य राजनीतिक मुद्दा होता है, तो कितने ही राजनीतिक दलों का बोरिया-बिस्तर बंध जाएगा। जिन राजनीतिक दलों का अस्तित्व ही छद्म और दंभ उम्मीदों के भरोसे टिका है, उनके लिए बिहार का यह चुनाव परिणाम एक खतरा का संकेत है।

नीतीश सरकार की पुनर्वापसी और उसे इस चुनाव में मिले अपार जनादेश जाहिर तौर पर सरकार के लिए बड़ी चुनौती है। जनता के बेहिसाब अरमानों और उम्मीदों को पूरा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी से नई सरकार भाग नहीं सकती है। उम्मीद की जानी चाहिए कि अपनी दूसरी पारी में मुख्य मंत्री नीतीश कुमार राज्य की तमाम विसंगतियों का निपटारा करीने से करेंगे, जो नए बिहार के निर्माण का वाहक बनेगा। सत्ता संभालते ही जनता की उम्मीदों और अपेक्षाओं के प्रति नई सरकार इस मायने में गंभीर दिखती है क्यों कि मुख्य मंत्री नीतीश कुमार ने जहाँ अधिकारियों को साफ-साफ संदेश दिया कि जनता को छोटी-छोटी चीजों के लिए कतई परेशान न किया जाए जिसके लिए जहाँ उन्होंने सेवा का अधिकार विधेयक लाने की बात कही, वहीं उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए तथा मुख्यि से लेकर ऊपर तक के अधिकारियों की कारगुजारियों पर नजर रखने के लिए लोकपाल गठन करने का फैसला किया। लोकपाल की नियुक्ति मार्च, 2011 तक कर लेने की बात कही गई और सभी विभागों के मंत्रियों ने अपने-अपने विभाग के कार्यों में मुस्तैदी और पारदर्शिता लाने का दावा किया। यह तो समय बताएगा कि उनके दावे कितने सही उतरते हैं, पर इतना जरूर है कि यह चुनाव वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल देने की प्रक्रिया की शुरुआत है और इस चुनाव परिणाम ने जनता की प्राथमिकता में निर्णायक बदलाव लाया है और जनता की जागरूकता को देखते हुए सत्ता पर काबिज मंत्री भी **अपने** काम में शिथिलता से बचना चाहेंगे। राजनीतिक फैसले भी अब **जनता के बीच** से होने वाले हैं। मुख्यमंत्री ने सरकारी कार्यालयों की **कार्य संस्कृति में सु**धार की कवायद शुरू कर दी है। बैठकों के सिल**सिले में इस**को मूलमंत्र माना गया है, तो 'पुरस्कार' और 'दंडनीति' को प्रमुख हथियार। निःसंदेह पिछड़े प्रदेश के कलंक को मिटा देने और अपने गौरवशाली अतीत को याद कर नया इतिहास लिखने का ज़ज्बा व जोश बिहारवासियों में जगा देने की रणनीति में नीतीश कुमार काफी हद तक सफल रहे हैं। जाहिर है अपनी स्वच्छ छवि को न केवल बरकरार रखने, बल्कि उसमें चार चाँद लगाने के लिए न तो वे अपने मंत्रियों को चैन की नींद सोने देंगे और न राज्य का न्याय के साथ समावेशी विकास करने से बाज आएँगे। हमारी शुभकामना सदैव उनके साथ है।

बिहार में बहती विकास की बयार की हवा उत्तर प्रदेश में भी बहने लगी है और बदलाव की आग सुलग रही है। जो समाज मायावती के सिद्धांतों से उद्वेलित हुआ था वहाँ उसके विरोध की चिनगारी अब शोला बन चुकी है। बिहार में आ गए बदलाव से आजादी के 63 साल बाद भारत में लोकतंत्र के भीतर सामाजिक अभियंत्रण (ैवबपंस म्दहपदममतपदह) का यह सिलसिला शुरू हुआ है। जाति में से हीनता का पुराना अहसास समाप्त होने लगा है और जाति की सियासत अपनी चमक खोने लगी है। आखिर तभी तो तमाम पिछड़े और उपेक्षित-पीड़ित लोग खुलकरी मतदान करने लगे हैं और उनके दम पर सरकारें बन रही हैं। लेकिन उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में ऐसा अबतक क्यों नहीं हुआ यह बड़ा सवाल है। इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि बिहार का तो संयोग से नीतीश जैसा निशपक्ष और स्पष्ट तथा स्वार्थ से पुरे नेता मिल गया। उत्तर प्रदेश का कौन मिलेगा।

सच कहा जाए, तो बिहार से निकला संदेश राष्ट्रीय स्तर पर भी एक नए मतदाता मनोभाव के उभरने की आहट दी है। बिहार ने ह मेशा की तरह परिवर्तन का शंखनाद किया है। जनता अब प्रतीकों की नहीं, बल्कि विकास आधारित राजनीति चाहती है।

बिहार विधान सभा चुनाव में नीतीश जी के नेतृत्व में हुई जीत की चर्चा अब अमेरिका में भी होने लगी है। यूनिसेफ के कार्यकारी निदेशक एंथोनीलेक ने पिछले 7 दिसंबर 2010 को बिहार के मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान कहा कि विश्व समुदाय में यह संदेश गया है बिहार जेसा विकास हर जगह हो। बिहार अब एक ऐसा राज्य हो गया है जिसमें लोगों की आकांक्षाएँ बहुत बढ़ाने के लिए अधिक-से-अधिक निवेश की जरूरत होगी, इसके लिए यूनिसेफ सरकार के साथ कदम मिलाकर कार्य करेगा, निदेशक ने कहा।

▶ अध्यक्ष, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना।

राजनीति की नयी दिशा

❑ संजीव पांडेय

लालू का जिन्न गायब हो गया। राहुल गाँधी का करिश्मा फेल हो गया। नीतीश की आँधी में सब उड़ गये। एक बार फिर भगवान बुद्ध और जयप्रकाश नारायण की धरती ने देश को संदेश दिया है। संदेश स्पष्ट है। बिहार में ढाई प्रतिशत की आबादी वाले कुर्मी जाति के नीतीश कुमार सवजाति के नेता बन गए। जिला का जिला साफ हो गया। विरोधी दलों को सीट नहीं मिली। हर जाति के लोगों ने नीतीश को वोट दिया। महिला सशक्तीकरण ने बिहार की ही नहीं देश की राजनीति बदल दी हैं। चुनावों से ठीक पहले हंग असेंबली की बात की जा रही थी। पटना में खद्दरधारी नेता, नीतीश को गाली देते थे। बटाई बिल का बहाना लेकर। लेकिन बटाई बिल से पीड़ित लोगों ने भी वोट दिया। कहा बटाई बिल पता नहीं, पर रात को गाँव में सो तो रहे हैं। खेती तो आराम से कर रहे हैं। चुनाव से ठीक पहले कुछ काँग्रेसी खुश थे, हंग असेंबली होगा। चलो इसी बहाने राष्ट्रपति शासन लागू होगा। ये वही लोग थे जिनके व्यक्तिगत हितों को नीतीश कुमार ने पूरा नहीं किया था। इनका जिला या ब्लॉक स्तर पर उनकी दलाली नहीं चली थी। लेकिन इससे अलग आम जनता की सोच थी। उन्हें सुरक्षित जीवन चाहिए था। गाँवों तक बढ़िया सड़क की जरूरत थी। बढ़िया स्वास्थ्य सेवा चाहिए था। नीतीश ने इसे कर दिखाया। अस्पतालों में दवाइयाँ मिलनी शुरू हो गई थी। डॉक्टर हास्पीटल में बैठने लगे थे। गाँव तक सड़क बन गई थी। लोगों को गुंडागर्दी टैक्स से मुक्ति मिल गई थी। व्यापारी बिन भय के देर रात तक दुकान खोल सकता था। ट्रेन से उतर कर देर रात अपने घर जा सकता था। यह नीतीश कुमार के पहले पांच साल की उपलब्धि थी। बिहार का चुनाव परिणाम देश की राजनीति बदलेगा। राज्य की अस्मिता से अलग, जाति की अस्मिता से अलग विशुद्ध चुनाव था विकास की राजनीति पर। भ्रष्टाचार मुद्दा था, पर 2 जी स्पेक्ट्रम, कॉमनवेल्थ ने बिहार के भ्रष्टाचार को पीछे ढकेल दिया था। आजादी के पचास साल बाद लोगों को गाँवों में सड़क देखने को मिली थी। गाँव की महिलाएँ सुरक्षित घर से बार शौच के लिए निकल पा रही थी। ये महिलाएँ हर जाति की थी। क्या भूमिहार, क्या राजपूत, क्या कहार, क्या कोयरी, क्या कुर्मी, क्या दलित, क्या यादव। हर जाति की महिला की इज्जत आबरू बची। अब अगला लक्ष्य बिहार की जनता ने नीतीश को दे दिया है। बिहार की जनता पिछले पचास सालों से बिजली से मरहूम है। अगले पांच सालों में बेहतर बिजली, बेहतर शिक्षा और बेहतर रोजगार का प्रबंध नीतीश करेंगे। यह जनता की उम्मीद है। बिहार के चुनाव परिणाम ने क्षेत्रीय दलों की प्रासंगिकता को बरकरार रखा है। भाजपा को बेशक बेहतर सीट मिली है। पर जद यू ने अपने प्रदर्शन को पहले से काफी बेहतर कर बता दिया है कि काँग्रेस का विकल्प के तौर पर अभी भी गैर काँग्रेसवादी राजनीति जिंदा है। दो दलीय प्रणाली से अलग क्षेत्रीय दल अभी जिंदा रहेंगे। नीतीश की मायावती और मुलायम सिंह के लिए सीख है। यह शिवसेना के लिए भी एक सीख है। ये उन सारे राजनीतिक दलों के लिए सीख है जो वंशवाद, गुंडाराज, पैसे के खेल से ग्रसित हैं। नीतीश की जीत

बताती है कि उतरप्रदेश जैसे राज्य में अभी भी मायावती और मुलायम सिंह प्रसांगिक हो सकते हैं। बशर्ते वे सिर्फ विकास और जनता की बेहतरी के लिए बात करें। मायावती के लिए जबरदस्त सीख है। ढाई प्रतिशत की आबादीवाले कुमी नीतीश सबजात के नेता हो गए बिहार में। फिर मायावती क्यों नही सबजात की नेता हो सकती है। मायावती भी सबजात की नेता हो सकती है विकास की बात कर। मुलायम सिंह भी सवर्जात के नेता हो सकते है विकास की बात कर। पैसे के मोह और वंश का मोह ये नेता छोड़े। जनता के मोह की बात करेंगे तो जनता इन्हें हाथों हाथ उठाएगी।

बिहार चुनाव ने राहुल गाँधी की औकात बता दी। जिन विधानसभा हल्कों में राहुल की मीटिंग हुई वहाँ काँग्रेस चुनाव हार गई। बिहार चुनाव में काँग्रेस के पास कोई एजेंडा देती तो जनता एक बार विचार करती। बिना सोचे समझे बिहार की जनता को सोनिया और राहुल समझाते रहे। जैसे की उनकी नजर में बिहारी एकदम बेवकूफ है। उनकी सारी बातों को आँख मूंद कर मान लेंगे। काँग्रेस ने बिहार चुनावों में आंध्र प्रदेश के विकास का उदाहरण दिया। कहा बिहार का कुछ विकास नहीं हुआ आंध्र के मुकाबले। पांच साल में नीतीश ने कुछ नहीं किया। लेकिन ये कहते हुए वे भूल गए कि पहले चालीस साल तक काँग्रेस का ही राज बिहार में रहा, जिसमें जातिवाद समेत कई खामियाँ बिहार की राजनीति को प्रभावित करती रही। उस चालीस साल में बिजली और सड़क जैसे बुनियादी कामों पर काँग्रेस ने कोई ध्यान नहीं दिया। बिहार की जनता को भय था कि कहीं लालू का जंगल राज न लौट जाए। साथ ही भय यह भी था कि काँग्रेस दुबारा जंगल राज को सहयोग देगी। अगर तीस से चालीस सीट आएगा तो काँग्रेस लालू से मिलेगी। पहले भी लालू यादव से काँग्रेस सहयोग करती रही है। यूपीए-1 की सरकार पांच साल तक लालू ने चलायी। कांग्रेस ने खुद कहा कि वे सरकार नहीं बनाने जा रहे हैं। फिर आखिर जब वे सरकार ही नही बना रहे हैं तो काँग्रेस को जनता क्यों वोट दे। काँग्रेस ने चुनावों की रैलियों में संकेत दिया कि वे चुनाव सिर्फ वोटकटवा बनने के लिए लड़ रहे थे। हर पार्टी के गुंडा बदमाश कांग्रेस में जाकर टिकट पा गए। उन्हें जनता ने नकार दिया। कई लोग काँग्रेस से टिकट इसलिए लेकर चुनाव लड़े कि काँग्रेस चुनाव लड़ने के लिए पैसे दे रही थी। पप्पू यादव और क्या आनंद मोहन जैसे अपराधियों की पत्नियों को टिकट दिया गया।

अखिलेश सिंह और ललन सिंह जैसे भूमिहार नेताओं को भूमिहारों ने ही धूल चटा दिया। नीतीश की चुनौती समय के साथ बढ़ेगी। नीतीश को हर जाति को वोट मिला है। बिहार की जनता ने बता दिया कि बिहार में जातीय राजनीति के दिन लद गए। नीतीश अब उन जातीय मुद्दों को नहीं छेड़ेंगे जिससे जातीय तनाव बढ़े। बिहार फिलहाल उस स्थिति में नहीं है, जहाँ पर जातीय तनाव को पैदा कर सामाजिक क्रांति लाया। बिहार को आगे लाना है, तो आर्थिक विकास करना होगा। इससे खुद जातिविहीन समाज बिहार में बनेगा। बिहार में जातीए बंधन टूटे है। इसका मुख्य कारण विकास ही रहा है। पांच सालों में बनी सड़कों ने जमीन की कीमतों को बढ़ाया। अच्छे कानून व्यवस्था ने जमीन की कीमतें बढ़ायीं। इससे जातीय बंधन टूटा। महिला सशिक्तीकरण ने भी जातीय बंधन को तोड़ा। हर जाति की महिला को पंचायतों में आरक्षण मिला।

वापसी हुई नये युग की

❑ संजय तिवारी

इलाहाबाद के आनंद भवन में काँग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कृपलानी के साथ गाँधी जी (1940) कहते है कि महात्मा गाँधी ने काँग्रेस में लोकतांत्रिक स्वरूप बनाये रखने के लिए जिस वर्किंग कमेटी को सर्वशक्तिमान बनाया था वही आगे चलकर आलाकमान के रूप में स्थापित हो गया, निर्णय करने की क्षमता किसी एक व्यक्ति के हाथ में होने की बजाय जब तक समूह के हाथ में पहुँच जाता है तो वह आलाकमान का निर्णय हो जाता है यह फार्मूला मूलतः तो काँग्रेस का है, लेकिन जब भारतीय जनता पार्टी ने राजनीतिक पहुँच की लिहाज से काँग्रेस की शक्ल अख्तियार किया तो उसने भी अपने यहाँ एक आलाकमान विकसित कर लिया, जैसे काँग्रेस में वर्किंग कमेटी बतौर आलाकमान निर्णय लेती है उसी तरह भाजपा में संसदीय समिति (पालिर्यामेन्ट्री बोर्ड) बतौर आलाकमान फरमान जारी करती है, काँग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्लूसी) और भाजपा पालिर्यामेन्ट्री बोर्ड ऐसे समूह हैं जिन्हें आलाकमान के रूप में परिभाषित किया जाता है उनके निर्णय को ही पार्टी का आखिरी रानीतिक निर्णय मान लिया जाता है। काँग्रेस आलाकमान के इस वक्त कुल 38 सदस्य है जिसकी अध्यक्ष सोनिया गाँधी है भाजपा आलाकमान (पालिर्यामेन्ट्री बोर्ड) में इस वक्त कुल 12 सदस्य हैं जिसके अध्यक्ष बतौर पाटी अध्यक्ष नितिन गडकरी है। काँग्रेस और भाजपा दोनों ही शीर्षस्थ दलों में आलाकमान के शीर्ष पर पाटी अध्यक्ष को रखा गया है। तकनीकि रूप से यह सही भी है लेकिन व्यावहारिक रूप से कांग्रेस और भाजपा दोनों ही स्थानों पर इसकी कार्यपद्धति अलग अगल है। काँग्रेस आलाकमान में अमेरिकी राष्ट्रपति की तर्ज पर उसकी सारी शक्तियाँ सोनिया गाँधी में निहित है लेकिन सोनिया गाँधी की बागडोर काँग्रेस आलाकमान के हाथ में है, बाहरी तौर पर हम यह देखते है कि समस्त निर्णय सोनिया गाँधी के नाम पर लिये जाते है लेकिन असल में बाजी वही मारता है जिसके पक्ष में आलाकमान जा बैठता है। निश्चित रूप से काँग्रेस की सवोच्च सत्ता के रूप में सोनिया गाँधी की इच्छा ही सर्वोपरि होती है, लेकिन खुद सोनिया गाँधी आलामान की मंशा से अलग हटकर कोई निर्णय ले यह असंभव है। भाजपा में स्थिति थोड़ी अलग है। भाजपा में आलाकमान की ताकत अध्यक्ष में न होकर किसी ताकतवर नेता या समूह में होती है, इसलिए भाजपा आलाकमान का स्वरूप भले ही बना दिया गया हो लेकिन उसकी व्यावहारिक स्थिति अक्सर हास्यास्पद हो जाती है। काँग्रेस के साथ ऐसा नहीं है। अब सवाल यह है कि यह आलाकमान करता क्या है और इसका होना किसी राजनीतिक दल के लिए जरूरी क्यों? आजादी के पहले महात्मा गाँधी ने काँग्रेस वकिग कमेटी के रूप में जिस आलाकमान की की रचना की थी उसका स्वरूप पाटी के निर्णयों में पारदर्शिता रखना था। पार्टी के हर वर्ग का उस आलाकमान के निर्णय में पारदर्शिता रखना था पार्टी के हर वर्ग का उस आलाकमान के निर्णय में सहमति होती थी ताकि आजादी के आंदोलन में काँग्रेस की भूमिका में कोई मतभेद दिखाई न दें। आजादी के बाद गाँधी की सलाह नहीं मानी गयी और काँग्रेस को एक राजनीतिक दल के रूप में बने रहने दिया गया। क्योंकि काँग्रेस में ज्यादातर ऐसे ही लोग शीर्ष पर थे जो आजादी की लड़ाई के अगुआ थे इसलिए स्वतंत्र हो चुके देश में राजनीतिक दल और आजादी के आंदोलन में शामिल रह किसी दल में भेद विकसित नहीं कर पाये। आजादी के बाद इस आलाकमान ने सत्ता तंत्र पा पार्टी के नियंत्रण का स्वरूप ले लिया। क्योंकि आजादी के बाद नेहरू सत्ता और काँग्रेस दोनों के शीर्षस्थ पदाधिकारी थे इसलिए आलाकमान भी वही कहलाए। पहली बार 1967 में कामराज और मोरारजीभाई देसाई ने इस आलाकमान को चुनौती दी और काँग्रेस को महसूस हुआ कि अब वह आजादी के आंदोलन की आलाकमान संचालित नहीं कर रही है बल्कि एक स्वतंत्र देश के राजनीतिक दल के आलाकमान के बतौर काम कर रही है। 1971 में इंदिरा गाँधी की मजबूत उपस्थिति में एक बड़ा परिवर्तन किया। इंदिरा गाँधी की मजबूत उपस्थिति में एक बड़ा परिवर्तन किया। इंदिरा गाँध ी की पहल पर एक बार फिर आलाकमान आला दर्जे की डिसीजन मेकिंग बॉडी बन गयी और राज्य के क्षत्रपों को निर्णय प्रक्रिया का हिस्सेदार बनाने की बजाय उनके बारे में बतौर ज्यूरी काँग्रेस वर्किंग कमेटी निर्णय कर सकती थी। ऐसा करने से जाहिर तौर पर इंदिरा गाँधी के हाथ में पार्टी तंत्र की कमान अपने आप आ गयी और वे पार्टी के अंदर सर्वशक्तिमान हो गयी। पार्टी का तंत्र अस्तव्यस्त न हो, देशभर में उस दल के राजनीतिक निर्णय उसके सांगठनिक स्वरूप को मजबूत करते रहें इसलिए इस तरह के आलाकमान की जरूरत किसी भी बड़े राजनीतिक दल को महसूस हो सकती है। जब वह दल सत्ता में हो तो आलाकमान की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि सत्तातंत्र पर पाटी की पकड़ बनाये रखने के लिए यही आलाकमान अपना आंकलन करता है। इंदिरा गांधी ने कांग्रेस आलाकमान

में जो पहला परिवर्तन किया थ उसके पीछे उनका मकसद पार्टी पर अपनी पकड़ मजबूत करना रहा होगा लेकिन इंदिरा गाँधी के बाद से ही पार्टी में यह परंपरा बन गयी कि नेहरू गाँधी परिवार का शीर्षस्थ व्यक्ति ही काँग्रेस का अध्यक्ष होगा और बतौर काँग्रेस अध्यक्ष वही वर्किंग कमेटी का भी अध्यक्ष होगा। इसलिए आखिरकार पाटी के सभी शीर्ष राजनीतिक निर्णयो में आखिरकार नेहरू गाँधी परिवार की मंशा का ही पालन किया जाएगा। हालांकि भीतरी तौर पर इस परिस्थिति में शह मात का खेल भी चलता रहता है और अक्सर ऐसा भी होता है जब वर्किंग कमेटी का निर्णय सोनिया गाँधी का निर्णय बताकर उसे लागू करवा लिया जाता है। लेकिन यह व्यवस्था नहीं बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है कि वह वर्किंग कमेटी को कैसे संचालित करता है। कांग्रेस के जिन क्षेत्रीय श्रत्रपों को काबू में करने के लिए इंदिरा गाँधी ने वर्किंग कमेटी को ताकतवर बनाया था उसी का परिणाम है कि जब जब काँग्रेस में कहीं भी विद्रोह हुए हैं उन्हें वर्किंग कमेटी के जरिए समाप्त कर दिया गया है। भाजपा ने भी इसी रास्ते पर चलने की कोशिश की है। भाजपा संसदीय दल ने क्षेत्रीय क्षत्रपों के बारे में अब तक जो भी निर्णय लिए हैं वे उसके लिए अच्छे परिणामकारी साबित नहीं हुए हैं वे उसके लिए अच्छे परिणामकारी साबित नहीं हुए हैं। आलाकमान का उपयोग पार्टी तंत्र ने अपने लिए किस प्रकार से किया है इसे हाल की घटनाओं को देखकर समझा जा सकता है। महाराष्ट्र में पिछले कुछ सालों से लगातार मुख्यमंत्री परिवर्तन का जो प्रयोग चल रहा है उसे काँग्रेस आलाकमान अंजाम दे रहा है लेकिन आज तक विद्रोह का कोई स्वर सुनाई नहीं दिया। अगर क्षेत्रीय क्षत्रप विद्रोह नहीं करते हैं तो केन्द्रीय नेतृत्व भी उन्हें किनारे लगाने की बजाय उन्हें केन्द्र में समायोजित करता है। लेकिन भाजपा में स्थिति उलटा है। मध्य प्रदेश में उमा भारती को सत्ता से बाहर का रास्ता आलाकमान ही दिखाता है, लेकिन उन्हें पार्टी में समायोजित करने की बजाय ऐसी परिस्थितियां पैदा कर देता है कि उमा भारती सदा सर्वदा के लिए पार्टी से बाहर होने के लिए मजबूर हो जाती है। अब कुछ वैसे ही हालात कर्नाटक में हैं जहां येद्दियुरप्पा के साथ भाजपा आलाकमान का प्रयोग कर रही है लेकिन यदि अपनी क्षत्रप क्षमता को चुनौती बर्दाश्त नहीं कर रहे हैं। निश्चित रूप से आज अगर काँग्रेस आलाकमान का उपयोग संगठन तंत्र को मजबूत करने और पाटी में क्षत्रपों को उभरने से रोकने के लिए करती है तो भारतीय जनता पार्टी का आलाकमान क्षत्रप पैदा करने का काम कर रही है। राजनीति में आलाकमान बनाम क्षेत्रीय क्षत्रपों की लड़ाई शायद ही कभी खत्म हो लेकिन दोनों ही शीर्ष दलों को कम से कम इतना ध्यान तो रखना ही होगा कि आलाकमान का प्रयोग वे पार्टी को बचाने के लिए चाहते हैं या बर्बाद करने के लिए?

ज्ञान का केंद्र बनेगा नालंदा : नीतीश

मुख्यमंत्री ने किया तीन दिवसीय राजगीर महोत्सव का उद्घाटन

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि बिहारियों के आपसी भाईचारे के बूते बिहार के विकास की रफ्तार इतनी तेज की जाएगी कि देश के विकास की गाड़ी भी इससे खिंचेगी। बिहार की जनता ने सूबे के विकास की गाड़ी में इतना ईंधन डाल दिया है कि इससे राष्ट्रीय विकास की गाड़ी भी प्रभावित होगी।

शनिवार को प्राचीन किला मैदान में दीप जलाकर तीन दिवसीय राजगीर महोत्सव की शुरुआत करते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि नालंदा प्राचीनकाल से ही ज्ञान का संदेश देता आया है। एक बार फिर इसे इस तरह विकसित किया जाएगा ताकि यह स्थल फिर से ज्ञान के केंद्र के रूप में स्थापित हो। इतना ही नहीं, हमारी तो सोच यह भी है कि यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा को सेंटर ऑफ कंफ्लिक्ट के रूप में विकसित किया जाए। अभी विश्व के कई क्षेत्रों में आपसी वैमनस्यता इस कदर बढ़ गयी है कि नालंदा को फिर से पुनर्जागृत करने की आवश्यकता आ गयी है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि आपसी प्रेम और मोहब्बत की भावना इस कदर पैदा करें कि विकास के पथ पर निर्बाध रूप से बिहार के विकास की गाड़ी रफ्तार पकड़े। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा की कुलपति गोपा संभरवाल की ओर इशारा करते हुए कहा कि इस यूनिवर्सिटी की सभी गतिविधियाँ नालंदा से ही संचालित होंगी।

कुछ दिनों पूर्व दिल्ली में बैठे कुछ लोग यूनिवर्सिटी ऑफ नालंदा की कुछ गतिविधियाँ दिल्ली से ही संचालित करने की इच्छा व्यक्त करने लगे थे।

उस वक्त कुलपति श्रीमती संभरवाल ने स्पष्ट रूप से कहा था कि मैं नालंदा में रहकर इसकी सभी गतिविधियों को संचालित करने की पक्षधर हूँ। उन्होंने कहा कि पहली से आठवीं कक्षाओं के सभी छात्र-छात्राओं को और नौवीं से बारहवीं की सभी लड़कियों को पोशाक दी जाएगी। उन्होंने मंचासीन मंत्रियों व विधायकों से कहा कि विकास के क्षेत्र में नये साल में नयी इबारत लिखने का प्रयत्न करें। स्थानीय विधायक व खान और भूतत्व मंत्री डॉ॰ एस.एन. आर्य द्वारा राजगीर को शीतकालीन राजधानी बनाने की माँग पर सीएम ने कहा कि बिहार अब इतना बड़ा नहीं रह गया है कि दूसरी राजधानी की कल्पना की जा सके।

अब मिसाल बन सकता है बिहार

❑ शैबाल गुप्ता

-बिहार चुनाव में जीत के बाद नीतीश कुमार की राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान बन गयी है.
-नीतीश कुमार के लिए अब विकास कार्यो को और तेज करने में परेशानी नहीं होनी चाहिए.
-इस कार्यकाल में नीतीश के सामने सबसे बड़ी चुनौती होगी बिजली उत्पादन में बढ़ोतरी की.

बिहार विधानसभा चुनावों में भाजपा-जदयू गठबंधन को मिली ऐतिहासिक सफलता से स्पष्ट हो जाता है कि बिहार की जनता ने राजनीतिक स्थायित्व के पक्ष में मत दिया है। शुरुआत में ऐसी उम्मीद थी कि चुनाव त्रिकोणीय होग्रे, लेकिन काँग्रेस की असफलता से चुनाव त्रिकोणीय होगें, लेकिन कांग्रेस की असफलता से चुनाव राज्य के दो दिग्गजों के बीच सिमट कर रह गया। हालांकि चुनाव परिणाम से जाहिर होता है कि यह एकपक्षीय था। कांग्रेस की हार समझ में आती हैै, क्योंकि राहुल गाँधी के प्रयासों कि बावजूद बिहार में राज्य स्तर का कोई नेता उभर कर सामने नहीं आ पाया। राज्य में किसी भी कांग्रेसी नेता की छवि ऐसी नहीं है कि पार्टी उसके नाम पर जनाधार खड़ी कर सके साथ ही पार्टी ने कई ऐसे लोगों को अपना उम्मीदवार घोषित किया जिनकी छवि अच्छी नहीं थी और वे दूसरे दलों से छिटक कर कांग्रेस के पाले में आए थे। कांग्रेस की तुलना में राजद-लोजपा गठबंधन से उम्मीद थी कि वे एक नया एजेंडा लोगों के सामने पेश करेंगे। लेकिन ऐसा करने की बजाय वे बटाइदारी बिल का विरोध करते दिखे। इससे समाज का सबसे गरीब तबका जो कि इस गठजोड़ का बड़ा आधार था। व राजद-लोजपा से दूर हो गया और यह तबका पूरी तरह नीतीश कुमार के साथ हो गया। इन दलों की लापरवाही इस बात से भी नजर आती है कि चुनाव में मिली हार पर आत्ममंथन करने की बजाय दोनों दल दूसरी चीजों पर ध्यान देने की बात करने लगे।

रामविलास पासवान को पार्टी की हार से अधिक चिंता अपने भाई पशुपतिनाथ पारस के हार की थी। अभी भी दोनों बिहार के बदले सामाजिक माहौल को जानने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। बिहार में एनडीए की जीत देश के लिए भी एक सबक है। सबसे खास बात यह है कि नीतीश की जीत किसी समुदाय विशेष का आकर्षित करने की छद्म नीतियों या लुभावने नारों के आधार पर नहीं हुयी है। यह चुनाव नीतीश कुमार के लिए एकतरफा जनादेश लेकर आया है। इस जीत के बाद नीतीश कुमार की राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान बन गयी है। अब इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि 2014 में होनेवाले आम चुनाव में एनडीए बिहार के विकास मॉडल के आधार पर चुनाव लड़े।

किसी प्रांत के चुनाव में ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी एक मजबूत गठबंधन के लिए मुसलिम समुदाय का समर्थन आवश्यक है। बिहार के चुनाव परिणाम से स्पष्ट हो गया है कि अब मुसलमानों के लिए भाजपा अछूत नहीं रही। यह संदेश देश में एक नये गठबंधन का आधार तैयार करने वाला हो सकता है। कई पार्टियां जो पहले एनडीए गठबंधन का हिस्सा थीं और बाद में अलग हो गयीं वे फिर से इस गंठबधन का हिस्सा बन सकती है। नीतीश कुमार ने यह साबित कर दिया है कि भाजपा के साथ सरकार चलाकर भी मुसलिमों के लिए योजनाएं के साथ सरकार चलाकर भी मुसलिमों कि लिए योजनाएँ चलायी जा सकती है। यह परिणाम भाजपा के लिए भी एक संदेश है।

दूसरी सबसे अचंभित करने वाली बात रही महिला

मतदाताओं की संख्या में 10 फीसदी का इजाफा आजादी के बाद यह पहला चुनाव रहा जहां पुरुषों के मुकाबले महिला मतदाताओं की संख्या पांच फीसदी अधिक रही। यह आश्यर्चजनक बदलाव सिर्फ मुख्यमंत्री द्वारा पंचायत में दिय गये आरक्षण, साइकिल योजना या अक्षर आंचल योजना के कारण संभव हो पाया है। इसके पीछे राज्य की संस्थाओं का बेहतर ढंग से काम करना रहा है। संस्थाओं के काम करने से पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को अधि क फायदा होता है। सक्रिय राज्य संस्थ से महिलाओं में सुरक्षा बोध की भावना होती है और वे बिना भय के कहीं भी जा सकती है। महिलाओं का बढ़ा हुआ मत प्रतिशत ध र्म के बंधनों से मुक्त रहा। मुसलिम बहुल इलाकों में महिलाओंका मत प्रतिशत इस चुनाव में काफी अधिक रहा है। पिछली सदी में हुए सामाजिक सुधारों से बिहार अछूता रहा है, लेकिन अब निचले स्तर से बदलाव की गूंज सुनाई देने लगी है। बेहतर कानून-व्यवस्था से लिंग और धर्म आध ारित योजनाओं का क्रियान्वयन बेहतर तरीके से होता है। सत्ता संभालते ही नीतीश कुमार ने पहला काम किया जिसमें राज्य की मृतप्राय हो गयी संस्थाओं को काम करने लायक बनाया । इस बदलाव में तकनीक के साथ ही समाज के वंचित तबको को ध्यान में रखकर नीति बनायी गयी और सबसे बेहतर तो यह रहा कि छोटे-मोटे मनमुटावों को अगर नजरअंदाज कर दिया जाए तो गंठबंधन के सहयोगियों के साथ हमेशा ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को मिला। सुशील कुमार मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने नीतीश कुमार को पूरा सहयोग दिया। अब नीतीश कुमार को राज्य संस्थाओं को और भी मजबूत बनाना होगा ताकि बिहार एक काम करने वाले राज्य से गतिशील राज्य में बदल जाए। साथ ही सामाजिक क्षेत्र और विकास की योजनाओं का अमल बेहतर तरीके से करना होगा।

इस जीत के मायने काफी गहरे है पहली बार जनता ने विकास के आधार पर वोट दिया है। नीतीश सरकार की दोबारा वापसी से लोगों की उम्मीदें काफी बढ़ गयी है। 2005 में जब नीतीश कुमार ने सत्ता संभाली थी तब राज्य की स्थिति काफी खराब थी, लेकिन पिछले पांच सालों में स्थितियों में जो सुधार आया है वह इस बात का गवाह है कि इन पांच सालों में बदलाव हुए हैं। ऐसे में नीतीश कुमार के लिए अब विकास कार्यो को तेज करने में परेशानी नहीं होना चाहिए।

इस कार्यकाल में उनके सामने जो सबसे बड़ी चुनौती होगी वह है राज्य में बिजली के उत्पादन में बढ़ोतरी की। बिना बिजली के राज्य में पूंजी निवेश नहीं होगा। बिजली क्षेत्र के विकास के लिए निजी कंपनियों को आमंत्रित करना होगा। रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए औद्योगिक इकाइयां स्थापित करने की पहल करनी होगी। बिहार में कृषि क्षेत्र की स्थिति अच्छी नहीं है। कई इलाके बाढ़ग्रस्त तो कई इलाके सूखाग्रस्त हैं। राज्य में सिंचाई की सुविधा का विकास करना सबसे बड़ी चुनौती होगी। बिहार में कृषि आधारित उद्योगों के विकास की काफी संभावना है। कृषि आधारित उद्योगों के विकास से ग्रामीण स्तर पर काफी लोगों को रोजगार मिलेगा।

बिना कृषि क्षेत्र के विकास के राज्य में पलायन करने वाले मजदूरों की संख्या में कमी नहीं होने वाली है। लेकिन इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए नीतीश कुमार को विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच बेहतर समन्वय बनाने की कोशिश करनी होगी। हालांकि पिछले कार्यकाल में यह सामजस्य बेहतर दिखा भी था। कार्यपालिका और न्यापालिक के बीच बेहतर समन्वय के कारण ही राज्य में 50 हजार अपराधियों को सजा हुयी। इससे राज्य फिर से विकास के रास्ते पर चला है। कार्यपालिका और न्यापालिका के बीच समन्वय में अब

विधायिका को भी शामिल करने की कोशि करनी चाहिए। तभी बिहार में व्यापक बदलाव संभव होगा, जो पूरे देश के लिए उदाहरण बन जाएगा।

विकास का बिहार-मॉडल

❑ देविंदर शर्मा

बिहार में नीतीश कुमार दोबारा सत्ता में वापसी करने में सफल रहे। इससे आम लोगों को अपनी बेहतरी के लिए उम्मीद की किरण दिख रही है। पाकिस्तान के पूर्व वित्त मंत्री और जाने-माने अर्थशास्त्री महबूब उल हक ने एक बार मुझसे कहा था कि 1960 में वित्त मंत्री रहते समय वह पाकिस्तान की आर्थिक विकास दर सात प्रतिशत पहुंचाने में समर्थ थे, बावजूद इसके लोगों ने उन्हें हराने के लिए मतदान किया। यह मेरे लिए एक बहुत ही कठोर सबक था। इससे मैंने महसूस किया कि उच्च आर्थिक विकास दर मानव विकास का बेहतर संकेतक नहीं माना जा सकता। महबूब उल हक ने इस रूप में मुझे एक यादगार चीज दी। हमारा यह कहना गलत है कि यदि हम जीडीपी पर ध्यान देंगे तो इससे खुद-ब-खुद हमारी गरीबी भी कम होगी। सच्चाई यह है कि यदि हम गरीबी कम करने पर ध्यान देंगे तो इससे खुद-ब-खुद हमारा आर्थिक विकास भी तेज होगा। नीतीश कुमार ने भी ठीक यही किया। यहां महबूब उल हक की भविष्यवाणी सही साबित हुई और बिहार की जनता ने दोबारा नीतीश को सत्ता में लौटने के लिए मतदान किया। नीतीश ने लोगों पर निवेश किया और लोगों ने उन्हें मतदान के रूप में इसका पुनर्भुगतान किया।

नीतीश कुमार की सत्ता में वापसी का वास्तविक कारण 2004 से 2009 के दौरान 11.5 प्रतिशत की विकास दर नहीं थी। अपहरण उद्योग को खत्म कर लोगों के स्वतंत्रता के अधिकार की बहाली इस दिशा में पहला कदम था। इसके साथ-साथ नीतीश ने कई तरह के विकास कार्यों की शुरूआत की। स्कूल जाने वाली लड़कियों को साइकिल बांटने और पंचायतों व स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत सीटों का आरक्षण जैसे सोशल इंजीनियरिग के कामों को उन्होंने पूरा किया। इस तरह बिहार में एक अच्छी नींव रखने के बाद नीतीश कुमार के सामने उनके दूसरे कार्यकाल में नई चुनौतियां है, लेकिन यदि और अधिक यथार्थवादी और समग्रता से इन कामों को पूरा करते हैं तो वह देश के लिए एक नया भविष्य गढ़ सकते हैं।

निश्चित रूप से बिहार देश के लिए विकास का नया मॉडल बन सकता है। शाइनिंग इंडिया मॉडल के बजाय बिहार के पास एक बड़ा अवसर है, जिससे बिहार के पास एक बड़ा अवसर है, जिससे वह देश को सतत, स्थिर, समतापूर्ण विकास का नया रास्ता दिखा सकता है। दूसरे राजनेताओं से अलग गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों की जरूरतों के प्रति मैं नीतीश कुमार को अधिक विचारवान और संवेदनशील पाता हूँ। बिहार चुनाव में बड़ी संख्या में लोगों के समर्थन और जनादेश द्वारा उनकी इसी इच्छा का इजहार दिखता है। एक बार एक संक्षिप्त मुलाकत के दौरान नीतीश कुमार ने वर्षो पहले मुझसे पूछा थ कि बिहार में किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या के पीछे मेरी नजर में मुख्य कारण क्या है? मेरी उनसे यह बातचीत 2000-01 के दौरान हुई थी, जब वह केंद्रीय कृषि मंत्री थे। यह वह समय थ जब किसान बैंक और साहूकारों से लिए गए पैसे न चुका पाने के कारण परेशान थे। उस समय ऋणदाताओं द्वारा पैसे बसूलने के लिए किए जा रहे अपमान के कारण हताश होकर

हजारों की संख्या में किसान आत्महत्या करने को विवश हो रहे थे। रिकवरी एजेंट अकसर किसानों के साथ गाली-गलौज करते थे, उनके खेत लिखा लेते थे और ट्रैक्टर आदि सामान उठा ले जाते थे, जिससे किसान पूरे गांव में बेइज्जती के कारण आत्मसम्मान को ठेस पहुंचने से बेहतर मर जाना समझते थे। जब मैंने नीतीश कुमार को इसकी वजह ब्रिटिश राज से चले आ रहे कानूनों का होना बताया तो वह चौंक गए। मैंने उन्हें बताया कि 1904 से 1912 के दौरान ब्रिटिश शासकों ने पब्लिक डिमांड रिकवरी ऐक्ट बनाया था, जिसके तहत सरकार का पैसा न चुका पाने पर किसानों को जेल भेजा जा सकता था। इसके अगले ही दिन सुबह नीतीश ने राज्यों के मुख्यमंत्रियों को इस कानून को खत्म करने की अपील की, क्योंकि तब कृषि राज्य का विषय था। हालांकि राज्य सरकारों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

बिहार का भविष्य भी कृषि पर निर्भर करता है, क्योंकि यहाँ तकरीबन 81 प्रतिशत उत्पादकता में बिहार अब आत्मनिर्भर है और दुग्ध का अतिरिक्त उत्पादनकर्ता है। इसके बावजूद बीमारू राज्य में एक बड़ी आबादी भूखी रहती है और गरीबी व कुपोषण से त्रस्त है। कृषि और खाद्य सुरक्षा के बीच आज तालमेल बिठाने की आवश्यकता है। कृषि को आर्थिक रूप से लाभप्रद, पारिस्थितिकीय रूप से निर्वहीय और खाद्य व पोषण की उपलब्धता बनाए बिना किसानों को आत्महत्या से नहीं रोका जा सकता। कृषि क्षेत्र का विकास नक्सलवाद की समस्या को खत्म करने में भी अग्रणी भूमिका निभा सकता है। बिहार में उस हरित क्रांति की धारणा में भी बदलाव लाना होगा, जो मिट्टी को जहरीला बना रही है, पानी को प्रदूषित और वातावरण को दूषित कर रहा है। बिहार में पशुपालन उद्योग के लिए बेहतर संभावनाएं हैं। यहां डेयरी और सूती उद्योग को बढ़ावा दिए जाने से किसानों की समस्याओं को कम किया जा सकता है। इससे लोगों को बड़ी तादाद में यही रोजगार मिल सकेगा। बिहार को कृषि विकास का औद्योगिक मॉडल त्यागकर भविष्य को ध्यान में रखते हुए पारिस्थितिक आधार पर कृषि तंत्र अपनाना चाहिए। कृषि क्षेत्र का पुनर्गठन होना चाहिए और समय की कसौटी पर खरी उतरी परंपरागत गोला वितरण प्रणाली लागू करनी चाहिए। इस पद्धति में कृषक समुदाय ही गांव की खाद्यान्न वितरण का नियंत्रण और प्रबंधन करता है। गिर और कंकरेज जैसी उन्नत प्रजातियों के पशुओं के साथ स्थानीय प्रजातियों को क्रॉस ब्रीड करके बिहार पशुपालन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर सकता है। डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने से निश्चित तौर पर किसानों को कृषि संकट से निकालने में मदद मिलेगी।

रासायनिक खादों के बजाय देसी खाद को बढ़ावा देकर इसे कुटीर उद्योग के रूप में प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ेगी और ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम होगा। रासायनिक कीटनाशकों को इस्तेमाल पूरी तरह बंद होना चाहिए। बिहार, आंध्र प्रदेश के कीटनाशकरहित प्रबंधन से सीख ले सकता है। आंध्र प्रदेश में 20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में किसी भी प्रकार के रासायनिक कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है और फिर भी वहां पैदावर की दर उच्च है। उत्साहित आंध्र प्रदेश अब करीब एक करोड़ हेक्टेयर में इस प्रयोग को बढ़ाना चाहता है। नीतीश कुमार के पास इतिहास बनाने और दुनिया को विकास का सही अर्थ समझाने का अवसर है।

यह जनादेश बिहार के लिए ही नहीं है

❑ के. विक्रम राव

जरा शुष्क सियासत में साहित्यिक रस घोल दें। नीतीश कुमार का भौगोलिक संयोग काफी कारगर रहा है। मुख्यमंत्री के प्रचारात्मक दोहे कवि बिहारी के सतसैया टाइप के थे। जदयू के चुनाव निशान(तीर) की भाँति इस बिहारी जननेता के वाक तीर हरीफाइयों पर घाव करते रहे। गहराई को अब लालू प्रसाद माप रहे हैं।

हालांकि जन्म से नीतीश बिहारी हैं, यह रीतिकालीन कवि केवल नाम से चार सदियों पूर्व पंडित बिहारी लाल चौबे उर्फ बिहारी पंडित अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मभूमि ग्वालियर (गोविंदपुर) में विप्र पिता और राजपूतानी के आत्मज थे। शाहजहाँ के दरबारी कवि थे, जिनके पितामे हुमायूं को बिहारी शेरशाह ने भारत से खदेड़ा था। कवि की मिठासभरी ब्रजभाषा की शब्दावली को नीतीश कुमार की ठेठ भोजपुरी ने धार दे दी। लालू चित हो गये। अत: बिहार के जनादेश को भी इतिहास और भूगोल के परिवेश में परखें। मीडियाकर्मी को अपनी रूढिगत सोच के खांचे से बार निकल कर गौर करना होगा कि आखिर इन बिहारियों को हो क्या गया? कुछ मीडियाकर्मी तो मतगणना की बेला तक राग अलाप रहे थे कि करिश्माई लालू प्रसाद की लालटेन अब अलादीन का चिराग बन जायेगी। न शेखी रही, न सूरमाई।

इन चुन्रिदा मीडिया महारथियों (वे लालू को हीरो बनाते रहते थे), में आमजन वाली नजर एक नहीं थी, जो तीन चौथाई रूप से नीतीश कुमार के साथ हो ली। हाँ लालू प्रसाद ने एक अनुमान सही लगाया था कि विधानसभा में दो तिहाई बहुमत मिलेगा। मिला, पर उन्हें नहीं। गमनीय बात यह है कि बुनियादी तौर पर बिहार का जनादेश निर्मित हुआ था पिछले पाँच महीनों के दौरान, नीतीश कुमार का विकास वाला मुद्दा और लालू प्रसाद की जातिगत लतरानियाँ तो अपनी जगह थी, मगर बिहार के करोड़ों मतदाताओं की चिंतन प्रक्रिया कभी कुंद या निस्तब्ध नहीं थी। चौपालों में, कस्बो में, बस्तियों में और शहरी आवासों में टीवी और अखबारों के माध्यम से देशभर के घोटालों का प्रसारण उनकी चुनावी बहस का क्रमश: आधार बन रहा था।

बिहार की जनता को लगा होगा कि पाँच वर्ष पूर्व घोटालों द्वारा हुए राजकोषीय लूट से भुगती हानि पीड़ादायिनी थी। यही सोच कर उन्होंने डेढ़ दशक की पति-पत्नीवाली युगलबंदी का स्विच 2005 के चुनाव में बंद किया था। इस बार उन्हें लगा कि ऐसे ही घोटाले बिहार के बाहर फैल रहे हैं। राष्ट्र को लील रहे हैं। लालू के कई संस्करण और आवृतियाँ आ गयीं। चाहे व दिल्ली के खेलों का खेल हो, मुंबई की आवासीय जालसाजी हो, आमजन के टेलिफोन से दस खरब रुपये का गबन किया गया हो। रिश्तों में ये सब परदादा है चारा घोटाला, अलकतरा घोटाला, बाढ़पीडितों की राहत राशि का निगल जाना आदि के उनका आकार बड़ा विकराल है। बिहार के मतदाताओं के सपनों में बुद्ध और महावीर जरूर नैतिकता जगाने आये होंगे। कौटिल्य की चेतावनी याद आयी होगी कि यह पता पाना कि राजपुरुष कब उत्कोच ले उतना ही दुश्वारीभरा है, जितना यह भाँपना कि मछली ने किस क्षण पानी गठक लिया। बिहार वोटर कृतसंकल्प हो गये। घोटाले को पाँच वर्ष पूर्व बिहार में बाँधा था, अब इसे भारत में रोकना है ये बिहारी भूले नहीं थे कि साबरमती के संत ने चंपारण से परिवर्तन हेतु बगावत शुरू की थी। लोकनायक जयप्रकाश ने गाँधी मैदान से संपूर्ण क्रांति चलायी थी। अत: बिहारवासियों का नैतिक अपराध होगा यदि वे फिर बिहार को भ्रष्टाचार की राष्ट्रीय मुख्यधारा में लौटा लाये तय हुआ कि देश को चेताना होगा कि भारत को अब बिहार की ध ारा को अपनाना होगा। बिहार ने ली अंगडाई है। आगे देश की लडाई है। मगर त्रासदी थी कि संपूर्ण क्रांति के चार पुरोधाजन ही कुरुवंशियों की भाँति भिड़ गये। नीतीश कुमार युधिष्ठिर का स्तर पाने का दम अब भर सकते है। पर वे महानंद को हरानेवाले अपने सजातीय चंद्रागुप्त मौर्य से समता में ज्यादा फिट होंगे।

वैद्यराज के आत्मज नीतीश कुमार को पाँच वर्ष लगे थे बिहार के रोग निवारण में अब मरीजों ने पाँच वर्ष और दे दिए इलाज हेतु। जंगलराज से मंगलराज के लिए अब लालू-नीतीश की चुनावी अदाकरी देखें। पाँच याल हुए लालू पत्नी के उत्तराधिकारी बनने पर नीतीश ने देखा था कि भारत का यह तीसरा बड़ा प्रदेश विकास के सोपान पर चौदहवें पायदान तक फिसल चुका था। तब नीतीश ने टीका की थी कि लालू बिहार को चबा गये। एक ने इसे परिमार्जित किया था कि लालू राज्य को हजम कर गये। चुनाव अभियान में नीतीश ने पराजित लालू को फ्यूज बल्ब कहा। इसे नकारते हुए लालू ने कहा - वे टांसफार्मर हैं रंगही दुअन्नी की भांति नीतीश फेल कर गये, कहा लालू ने मगर नीतीश ने जवाब में अपनी हरीफ को खोटा सिक्का नहीं कहा। शालीनता बनायी रखी। बिहार में ज्ञान की दुनिया की संरचना करते हुए नीतीश ने कहा अब लाठी को तेल पिलाने (कभी लालू ने सुझाया था) के बजाय, कलम में स्याही भरना चाहिए। दोनों की वैचारिक विषमता भी लाठी और कलम जैसी है। दो विशेषताएँ जरूर उल्लिखित हो जाएँ। दशकों से बिहार के चुनावों में महिलाओं के वोट पड़ते थे। इस चुनाव में खुद वोट डालने वे सब आयी थी। अब तुसलमान समझ गये कि वे वोटर हैं, झुंड नहीं। समीक्षा की नजर से नीतीशवाले बिहार की आर्थिक हालत में तब और अब में हुए परिवर्तन को देखें।

यों तो प्रगति ही परिवर्तन का रूप है, मगर हर परिवर्तन प्रगति नहीं कहलाता। नीतीश कुमार ने 24 नवंबर, 2005 को सत्ता संभालते समय घोषणा की थी कि वे न्याय के साथ विकास करेंगे। जहाँ अपहरण उद्योग बन गया था और रंगदारी व्यवसाय था, विकास की चुनौती भयावह बन गयी थी। आज पटना की सड़कों पर कार्मिक नारे बुलंद करते है कि वेतन बढ़ाओ लालू-राबड़ी राज में अरसे से बकाया वेतन के लिए प्रदर्शन करते थे। अभाव सालता है। बिना डॉक्टरों और नर्सो के बीमार पड़े अस्पतालों को संजीवनी देने के लिए राशि जुटानी पड़ी थी। राजस्व की चोरी और खजाने की अनवरत लूट बंद कराना दुष्कर कार्य रहा। मतदाताओं ने बस इन्हीं बिंदुओं पर गौर किया। थेथरई और जोकरी को नकार दिया। मगर राजग सरकार को अब गत पाँच वर्षो की कछुआ चाल को छोड़ कर ,खरगोश बनना होगा, बिना आराम किये, बिना भ्रम पाले। झाड़ी से लालू झांक रहे हैं।

विगत दो वर्षों की भाँति दिनांक 29 दिसम्बर 2010 को भी पटना के तारामंडल सभागार में संस्कृत के उन्नयन एवं अधिकाधिक प्रयोग हेतु राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय स्तर के विद्वानों ने भाग लिया। प्रस्तुत है उक्त संगोष्ठी के कार्यकलापों का एक विहंगावलोकन।

– उपसंपादक

तृतीय राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी संपन्न

कक्षा एक से स्नातक तक हो संस्कृत अनिवार्य

संस्कृत के उन्नयन हेतु बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड,पटना द्वारा विगत 29 दिसंबर 2010 को पटना के तारामण्डल सभागार में आयोजित तृतीय राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर सरकार से माँग की गई कि कक्षा एक से स्नातक स्तर तक संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य की जाए, क्योंकि लोकतंत्र में लोक के संपूर्ण विकास, भ्रष्टाचार के निवारण और सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण को रोकने के लिए संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों, उपनिषदों एवं स्मृतियों आदि का अध्ययन आवश्यक है। यही नहीं संस्कृत में विवेचित साधारण एवं नैतिक मूल्य के अनुपालन के लिए भी संस्कृत ,पालि एवं हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ विद्धानों ने यह भी सुझाव दिया कि आज के सामाजिक संदर्भ एवं बदलते परिवेश में नए धर्मशास्त्र के निर्माण की भी आवश्यकता है जिसके लिए संस्कृत बोर्ड जैसी संस्थाओं को पहल करनी चाहिए, हालांकि यह काम धर्मशास्त्रियों, ऋषि-महर्षियों के लिए आवश्यक है, मगर यह सब सोचने की उन्हें फुर्सत कहाँ? सुझाव यह भी आया कि संस्कृत भाषा के व्यावहारिक प्रयोग हेतु पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन किया जाए।

उद्घाटन सत्र

पूर्वाह्ण 10 बजे से प्रारंभ उद्घाटन सत्र में पं0 विनायक दत्त त्रिपाठी एवं पं0 दिवाकर उपाध्याय के मंगलाचरण के बाद वाराणसी से पधारे डॉ0 शंकर कुमार मिश्र ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की जिसके पश्चात् सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात् बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री तथा ललित नारायण मिश्र आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ॰ जगन्नाथ मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में भारतीय समाज की वास्तविक एकता के लिए संस्कृत के अध्ययन को उन्होंने लाभकारी बताते हुए संस्कृत भाषा को आज की सूचना प्रौद्योगिकी के लिए विश्व की सबसे उपयुक्त भाषा करार दिया। उन्होंने पुनः कहा कि वेद, पुराण, दर्शन, ज्योतिष और साहित्य हमारी संस्कृति के स्मृति-चिह्न हैं जिन्हें भुलाकर हम स्वयं को

ही भुला बैठेंगे। संस्कृत में देश के भिन्न-भिन्न जनसमुदायों को एक सूत्र में बाँधकर रखने वाली शक्ति है। संस्कृत को इसलिए भी प्रोत्साहन की आवश्यकता है कि यह भारतीय संविधान की अष्टम सूची में सम्मिलित भाषाओं में एक है। डॉ0 मिश्र ने यह भी सुझाव दिया कि मनुस्मृति को आज के संदर्भ में संशोधित करने की पहल होनी चाहिए। उन्होंने अपने उद्गार के अंत में संस्कृत के उन्नयन के लिए संस्कृत बोर्ड के वर्तमान अध्यक्ष द्वारा किए जा रहे कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की।

इस सत्र के मुख्य अतिथि तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के संस्थापक डॉ0 रामकरण शर्मा ने कहा कि संस्कृत हमें देश की एकता व अखण्डता की शिक्षा देती है इसलिए लोगों को संस्कृत को बढ़ावा देने के मकसद से इसे अपनाने की जरूरत है। कुरू क्षेत्र विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ0 रामभक्त लांगायन ने अपने संबोधन में कहा कि संस्कृत के लुप्त होते जाने से समाज रसातल में जा रहा है। बिना संस्कृत पढ़े संस्कृत की आलोचना व्यर्थ है। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि जियालाल आर्य ने वर्ष 2009 की मध्यमा परीक्षा में अव्वल आए छात्र-छात्राओं को बोर्ड द्वारा पुरस्कृत किए जाने की योजना को श्रेयष्कर बताया। संस्कृत के सरलीकरण की वकालत करते हुए इस बात पर श्री आर्य ने संतोष व्यक्त किया कि इधर हाल के वर्षों में संस्कृत बोर्ड को लोग जानने लगे हैं।

उल्लेख्य है कि संस्कृत बोर्ड ने प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी के अवसर पर मध्यमा की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया है। इसी निर्णय के अनुपालन में वर्ष 2009 की मध्यमा परीक्षा में अव्वल आए सामान्य वर्ग के 10 तथा अल्पसंख्यक समुदाय के चार छात्र-छात्राओं को दो-दो हजार रुपये की राशि, प्रमाण-पत्र तथा पुस्तकें एवं प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि बाजार बाद की वजह से तेजी से नष्ट हो रही भारतीय संस्कृति का सबसे अधिक शिकार युवा पीढ़ी हो रही है। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर वे अपने लक्ष्य से भटकते जा रहे हैं। ऐसी विषम परीस्थिति में संस्कृत भाषा, उसके साहित्य और संस्कृत शिक्षा पर विचार करना इसलिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि संस्कृत

में ही संस्कार और संस्कृति निहित हैं। संस्कृत में वह ताकत है जो तमाम बीमारियों को दूर कर सकती है। अध्यक्ष ने संस्कृत शिक्षा की खराब स्थिति पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्कृत विद्यालयों में दी जा रही शिक्षा और पठन-पाठन भी संतोषजनक नहीं है। इसके लिए संस्कृत विद्यालयों के शिक्षकों को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। बिहार मानवाधिकार आयोग, के सदस्य न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि संस्कृत के उन्नयन के लिए समाज को ही आगे आना होगा तथा बुद्धिजीवियों को इसमें अह्म भूमिका अदा करनी होगी। प्रारंभ में सभी मान्य अतिथियों को शॉल, बैज तथा प्रतीक चिह्न भेंटकर बोर्ड के अध्यक्ष ने सम्मानित किया । स्वागताध्यक्ष डॉ0 ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार ने अतिथियों एवं सुधीजनों का स्वागत करते हुए कहा कि संगोष्ठी के विषयवस्तु का निर्धारण वर्तमान भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक क्षरण के चिंतनीय परिवेश में संस्कृत भाषा एवं संस्कृत लेखन की भूमिका को रेखांकित करने के लिए किया गया है। आज के भारत में सांस्कृतिक-सामाजिक संक्रमण की स्थिति है। सामाजिक-सांस्कृतिक गत्वरता एवं परिवर्तन की अपरिहार्यता के होते हुए भी भारतीयता की अनिवार्यता बनी हुई है। व्यक्तिवाद की सीमाहीन स्वीकृति ने जिस प्रकार पाश्चात्य समाज को पूर्णतया भोगवादी एवं विघटनकारी बना दिया है उससे सामाजिक संवेदनशीलता को नष्ट सा कर दिया है। पुरुषार्थ के त्रिवर्ग में अर्थ की ही प्रधानता को प्राथमिकता दे दी है, जो अब भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को ही निगलने को कटिबद्ध है। ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृत साहित्य और संस्कृत लेखन की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। अतएव संस्कृत भाषा साहित्य के शिक्षकों - लेखकों का कर्त्तव्य है कि वे भारतीयता के ऐसे पक्षों के उद्‌घाटन में अग्रसर हों, जो शाश्वत मूल्यों का विधान करते हैं। तो आइए,भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के मूलभूत विधान के संरक्षण-यज्ञ में हम अपनी आहुति डालें, तभी इस संगोष्ठी की सार्थकता सिद्ध होगी। अंत में एक बार पुन: अध्यक्ष ने सभी का अभिनंदन किया।

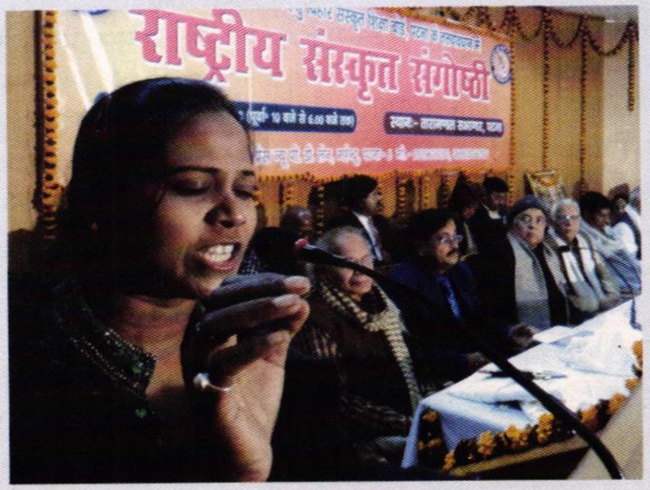

उद्‌घाटन सत्र के दौरान ही संगोष्ठी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका 'संस्कृत-संजीवनी' के साथ-साथ बोर्ड की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना की वैचारिक पत्रिका_'वाग्वन्दना' के चतुर्थ अंक-अक्टूबर-दिसंबर 2010 का लोकार्पण डॉ0 जगन्नाथ मिश्र तथा डॉ0 रामकरण शर्मा के हाथों किया गया। यही नहीं बोर्ड के द्वारा प्रकाशित दैनंदिनी 2011 का भी लोकार्पण बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा किया गया। बोर्ड के सचिव ओम प्रकाश शुक्ल ने इस अवसर पर एक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर वर्ष 2010 में बोर्ड द्वारा किए गए कार्यकलापों को रेखांकित करते हुए वर्ष 2010 के साल को बोर्ड के लिए रचनात्मक काल बताया।

सत्र के मान्य अतिथियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए 'वाग्वन्दना' के उपसंपादक सुरेश कुमार सिन्हा ने कहा कि देश के कोने-कोने से पधारे विद्धत्‌जनों की उपस्थिति तथा उनके द्वारा व्यक्त विचारों से न केवल संगोष्ठी की गरिमा बढ़ी है, बल्कि बोर्ड के अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ संस्कृत शिक्षकों को भी प्रोत्साहन मिला है।

द्वितीय अकादमिक सत्र

द्वितीय अकादमिक सत्र के लिए निर्धारित 'स्वस्थ समाज के निर्माण में संस्कृत की भूमिका' विषय का प्रवर्तन करते हुए संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने कहा कि आज हमारे भारतीय समाज में खीझवाली निषेधात्मक बात के अधिक और रीझवाली सकारात्मक बातें कम होते जाने की वजह से समाज निरंतर अस्वस्थ होता जा रहा है। आपाधापी और भागदौड़ की जिंदगी में लोगों में गलत सोच व विचार के पनपते जाने के कारण उनके आचरण और व्यवहार भी गलत होते जा रहे हैं। नदी व नहर के पेट में भरे सिल्ट की वजह से जिस प्रकार वह छिछली हो जाती है और जिसे साफ करने के लिए यंत्रों का सहारा लिया जाता है, ठीक उसी प्रकार समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, हिंसा और व्यभिचार रूपी जो गंदगी भरी हुई है उसे साफ करने के लिए संस्कृत रूपी यंत्र का उपयोग जरूरी हो गया है।

इस सत्र का उद्‌घाटन करते हुए डॉ0 रामकरण शर्मा ने कहा कि संस्कृत में सर्वांगीणकता है, क्योंकि मात्र यही वह भाषा है जिसमें सैकड़ों काव्य-महाकाव्य की सर्वव्यापकता है। उन्होंने पुन:

कहा कि संस्कृत आदान-प्रदान की भाषा है। डॉ0 शर्मा ने अपने संबोधन में संस्कृत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसके उन्नयन के लिए विद्यालयों से संस्कृत बहिष्कार को बंद करना होगा। जो बातें अनर्गल लगती हैं उसका बहिष्कार करना चाहिए। शिक्षा का अधिकार कानून की बातें तभी सफल होगी जब सभी विद्यालयों के शिक्षकों का वेतन समान होगा। अपने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए बिहार एवं झारखण्ड के पूर्व मुख्य सचिव तथा नालंदा खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति विजय शंकर दुबे ने कहा कि संस्कृत ही हमारा धर्म, कर्म और पहचान है और यही वह भाषा है जो जोड़ने का कार्य करती है। संस्कृत के शब्दों को करीब अस्सी देशों की विभिन्न भाषाओं में लिए गए हैं। उनका मानना है कि पाणिनी ने दुरूह व्याकरण बनाकर संस्कृत के विकास को अवरूद्ध किया । उन्होंने पुनः कहा कि जाति व्यवस्था और व्याकरण से मुक्त रखकर संस्कृत को आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने संस्कृत में दूसरी भाषाओं के शब्दों को समाहित करने की आवश्यकता जताई।

इस सत्र के विशिष्ट अतिथि तथा आजमगढ़, उत्तरप्रदेश के अपर आयुक्त राजकुमार सचान 'होरी' ने संस्कृत की विशालता का उल्लेख करते हुए कहा कि संस्कृत से पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति पर विराम लग सकता है। इसके साहित्य के द्वारा सामाजिक कुरीतियों का निवारण संभव है। बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने दोनों अकादमिक सत्रों के निर्धारित विषयों पर सभागार में पधारे सभी श्रोताओं से संवाद स्थापित कर इस सेमिनार में चार चाँद लगाया। उल्लेखनीय है कि दोनों अकादमिक सत्रों में आधे-आधे घंटे का प्रश्नोत्तर काल था जिसमें निर्धारित विषयों से संबंधित सुधीजनों से प्रश्न और उसके उत्तर की अपेक्षा की जाती थी और उस पर बहस की जाती थी। इसी क्रम में पटना उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री गोपाल प्रसाद से जब समाज के अस्वस्थ होने की वजह बताने को कहा गया, तो इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए आज आदमी कुछ भी करने को तैयार है जिसके परिणामस्वरूप समाज में मूल्यों की कमी होती जा रही है, इन मूल्यों को सुधारने के लिए हमारी संस्कृति जरूरी है और जब संस्कृति की बात आती है, तो संस्कृत की आवश्यकता महसूस होने लगती है। इसी प्रकार बिहार सरकार के पूर्व अपर सचिव अखिलेश पाठक ने भी मुक्ताहार विहारस्य..............' एक श्लोक प्रस्तुत करते हुए संस्कृत की शक्ति जगाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा समन्वय स्थापित करने की बात कही।

देहरादून से पधारे सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ0 बुद्धिनाथ मिश्र ने अँग्रेजी शिक्षा के पूर्व संस्कृत शिक्षा का जिक्र करते हए संस्कृत को भाषा न कहकर विद्या की संज्ञा दी और वर्तमान स्मृतियों के संशोधन के लिए धर्माचार्यों के निर्देशन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की कि उनके राज्य उत्तराखण्ड की पोखरियाल सरकार ने संस्कृत भाषा को द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्रदान कर संस्कृत को सम्मानित किया है।

वाराणसी से पधारे डॉ॰ कामेश्वर उपाध्याय ने संस्कृत की उपादेयता पर धारा प्रवाह अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि संपूर्ण वसुन्धरा में संस्कृत के अतिरिक्त सभ्यता का कोई दूसरा साधन नहीं है। हिंदू जीवन पद्धति का निर्माण इसके द्वारा हुआ है। इस अवसर पर कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के डॉ॰ उमेश शर्मा ने संस्कृत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पश्चिमी संस्कृति के अँधानुकरण एवं बढ़ते भौतिकवाद के कारण तेजी से धन अर्जित करने की होड़ से लोगों में भोग विलास की पनपती संस्कृति पर चिंता जाहिर की और इससे बचने के लिए संस्कृत के संरक्षण की बात कही। लखनऊ से पधारी कावयित्री मंजू श्रीवास्तव ने भी प्रश्नोत्तर काल में हिस्सा लेकर इसे जीवंत बनाया। बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष निशा झा ने भी वाद-विवाद में हिस्सा लिया। उन्होंने संस्कृत का ज्ञान अर्जित करने की आवश्यकता जताते हुए कहा कि संस्कृत वाङ्‌मय समग्र एवं

समस्या' विषय का प्रवर्तन करते हुए डॉ0 ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि प्रारंभ में इस सत्र का सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर उद्घाटन किया पटना उच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश श्री गोपाल जी प्रसाद ने। सत्र के मुख्य अतिथि डॉ0 रामभक्त लांगायन ने कहा कि संस्कृत भाषा को व्यावहारिक बनाने के लिए संस्कृत लेखन को बढ़ावा देने की जरूरत है। आध्यात्मिक परंपरा को समझाने के लिए संस्कृत साहित्य का चिंतन - मनन आवश्यक है। यदि उपनिषदों की प्रज्ञा का थोड़ा सा भी ज्ञान हमारे जीवन में आ सके तो पूरा देश एक नवीन शक्ति, नवीन संकल्प ,साधना तथा नवीन अनुशासन से अनुप्राणित हो उठेगा। इस सत्र के विषय पर चर्चा में भाग लेते हुए पटना विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ0 रामविलास चौधरी ने कहा कि वर्तमान काल में संस्कृत लेखन की समस्या है जिसमें अनेक बिंदु विचारणीय हैं, यथा योग्य अध्यापकों का अभाव, संस्कृत में मेधावी छात्र-छात्राओं की कमी, संस्कृत प्रकाशकों का अभाव आदि। जो विद्वान संस्कृत लेखन में प्रखर हैं वे अपनी रचनाओं का प्रकाशन अपनी राशि से करने को मजबूर हैं, मगर उन पुस्तकों की खरीदगी नहीं हो पाती है जिससे वे अभावग्रस्त हो जाते हैं और आगे लिखने का उत्साह भी जाता रहता है। संस्कृत साहित्य व लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से संस्कृत में समाचार एवं वार्ता की शुरुआत की जानी चाहिए।

औरंगाबाद से पधारे आचार्य पुरुषोत्तम उपाध्याय ने कहा कि संस्कृत साहित्य में एक से एक बढ़कर कभी विद्वान लेखक हुए, किंतु इधर पिछले कई दशकों से संस्कृत लेखन की प्रवृत्ति में गिरावट है। कभी एक जमाना था जब इस देश के कवि कालिदास की

पूर्ण ज्ञान का अक्षर भंडार है। बिहार श्रमिक आयोग के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद ने भी अपनी उपस्थिति से संगोष्ठी को गौरवान्वित किया। भाई पंकज जी की बातों से सहमति जाहिर की गई कि संस्कृत व हिंदी की रोटी खाने वालों ने ही संस्कृत व हिंदी भाषा और उसके साहित्य का सबसे ज्यादा अहित किया है। प्रारंभ में बोर्ड के अध्यक्ष ने इस सत्र में उपस्थित सभी मान्य अतिथियों को शॉल व प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

सत्र के अंत में बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के परीक्षा नियंत्रक डॉ0 परमानंद मिश्र ने मान्य अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मौजूदा दौर के भौतिकवादी युग में एक ऐसी आध्यात्मिक व वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है जो मनुष्य को अँधकार से प्रकाश की ओर ले जा सके जिसके लिए संस्कृत का प्रचार-प्रसार करना होगा, क्योंकि उसमें ज्ञान-विज्ञान की गहराई छिपी है।

तृतीय अकादमिक सत्र

तृतीय अकादामिक सत्र के निर्धारित 'संस्कृत साहित्य-लेखन की

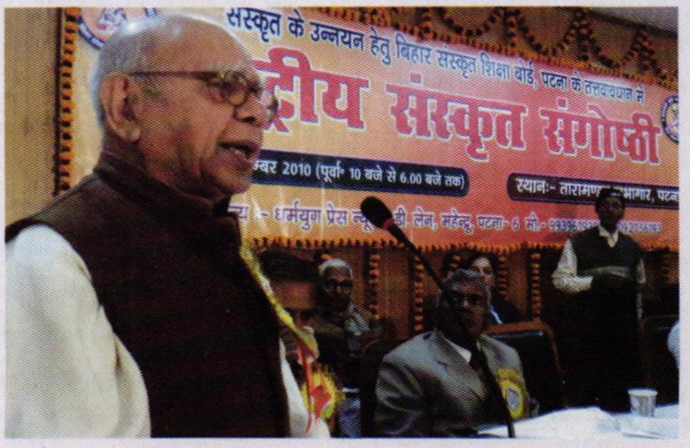

तुलना शेक्सपियर से की जाती रही, किंतु अब कोई कालिदास क्यों नहीं निकल पा रहा है,यह चिंतनीय है। वर्डसवर्थ की नायिका लूसी ग्रे प्राकृतिक प्रागंण में नेत्र संचालन की विद्या सीख रही थी जिसके बारे में कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक में शकुंतला को नेत्र संचालन भ्रमर से सीखने की बात कही है। वाराणसी के डॉ0 शंकर कुमार मिश्र ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि यह अर्थ का युग है और ऐसे में जहाँ संस्कृत शिक्षा अर्जन करने पर रोजगार के अवसर नहीं मिलने का है, तो शिक्षार्थियों की उदासीनता स्वाभाविक है। इस दृष्टि से संस्कृत के पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर साइन्स, सूचना तकनीकी जैसे विषयों का समावेश समय की माँग है।

वाद-विवाद में भाग लेने वाले रोसड़ा के डॉ0 राम विलास राय से आधुनिकता पर अपने विचार प्रस्तुत करने को जब कहा गया, तो उन्होंने बताया कि अच्छा तो तब होता जब हम भारत की पारंपरिक छवियों को संभाल कर आगे बढ़ते, तब हम दुनिया के रंग में नहीं, बल्कि दुनिया हमारे रंग में रंगती।

इस अवसर पर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ॰ प्रभा किरण ने साहित्य को समाज का दर्पण बताते हुए कहा कि समाज को दिशा देने का काम भी संस्कृत साहित्य के लेखक अपने साहित्य के माध्यम से करें।

तृतीय अकादमिक सत्र के प्रश्नोत्तर काल के दौरान बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर जी ने निर्धारित विषय से संबंधित तथ्यों को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत कर उनके विचार जानने की कोशिश की जो अत्यंत रोचक और दिलचस्प रहे। अध्यात्म और दर्शन के संदर्भ में श्रोताओं ने बताया कि अध्यात्म और दर्शन के कारण भी हमारे देश को पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा प्रतिष्ठा हासिल हुई है, मगर आज की चकाचौंध में हमने सबको भुला दिया है। दरअसल, भारत विकास और समृद्धि की जिस लीक पर अभी चल रहा है, वह उसकी आधुनिकता से तो जरूर मेल खाता है, पर उसकी बुनियादी प्रकृति के खिलाफ है। बोर्ड के अध्यक्ष ने संचालन के क्रम में इस पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दूसरी स्थिति यह है कि इस दुविधा को लेकर संसद एवं समाज में कहीं कोई मंथन या बहस नहीं दिखती। उन्होंने पुन: कहा कि आगे बढ़कर पलटना खतरनाक है, पर खतरनाक रास्ते पर आँख मूँदकर चलना भी बुद्धिमानी नहीं। हालांकि यह भी सही है कि 21 वीं सदी में आते-आते सदियों के बदलाव के हिसाब से हममें और समाज में काफी परिवर्तन आए हैं, काफी कुछ परिवर्तन नई-नई तकनीकी पर निर्भर रहने लगा है, मगर सामाजिक बदलाव का असर यह हुआ है कि अब कुनबों में या संयुक्त परिवार में रहने की परम्परा खत्म हो चुकी है और दूसरे स्थान पर एकल परिवार की धारणा

हमारे इर्द-गिर्द बहुत तेजी से विकसित होती जा रही है। बर्दाश्त करने का जज्बा हमारे भीतर से जाता रहा है, हम दबंगई पर यकीन करने लगे हैं, किंतु यह भी सच है कि बावजूद इन सब धारणाओं- अवधारणाओं के हमारे समाज का ताना-बाना अब भी उतना नहीं बदल सका है जितना कि बदलने का हम अक्सर दिखावा करते हैं। फिर श्रोताओं की ओर से कहा गया कि यह दिखावा सिर्फ इसलिए है, क्योंकि हम भी पश्चिमी समाजों की तरह खुद को खुले रूप से बदलने की होड़ में लगे हैं। इस पर दूसरे श्रोताओं ने कहा कि दिलचस्प ब्रात यह है कि जब हम पश्चिमी समाजों के साथ खुद को बदलने की होड़ कर रहे होते हैं, तब यह भूल जाते हैं कि उनका समाज हमारे समाज से दूर हर मामले में काफी जुदा है। वे बेहद स्वतंत्र हैं, बेहद जवान हैं,बेहद उन्मुक्त हैं। वहाँ के समाज पर लड़कियों के तन पर कपड़े होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता, किंतु हमारे यहाँ पड़ता है।

इस पर संचालक सिद्धेश्वर जी ने स्पष्ट किया कि समाज के लोगों में यह होड़ सामाजिक सोच के दायरों को कुंठित स्थापनाओं से बाहर निकालने से कहीं ज्यादा 'मेरी कमीज उसकी कमीज से सफेद कैसे' तक ही सिमटकर रह गई है। श्रोताओं ने यह भी कहा कि भारत-भूमि एक ऐसी दिव्य भूमि है जहाँ धन से अधिक धर्म, भोग से अधिक योग तथा सद्‌विचार और सदव्यवहार के मूल आधार संस्कार और संस्कृति को महत्त्व दिया जाता है और आध्यात्मिक चेतना व्यक्ति को देवत्व प्रदान करते हुए सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करती है। बाबूबरही से पधारी जिला पार्षद तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर डॉ0 भारती मेहता ने इस चर्चा में भाग

लेती हुई कहीं कि एक तरफ जहाँ नारी स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण का नारा जोरों पर है, ठीक वहीं समाज में दहेज लेने वालों की संख्या और उसकी राशि में लगातार वृद्धि होती जा रही है यह कैसी विडंबना और संस्कृति है। इस पर संचालक ने कहा कि सच कड़वा होता है, आज भारती की स्थिति ठीक उसी कड़वे सच की तरह है, जिसे वह गले के नीचे उतार नहीं पा रही है। इस तरह यह सेमिनार वाकई कई माने में जीवंत और सार्थक साबित हुआ।

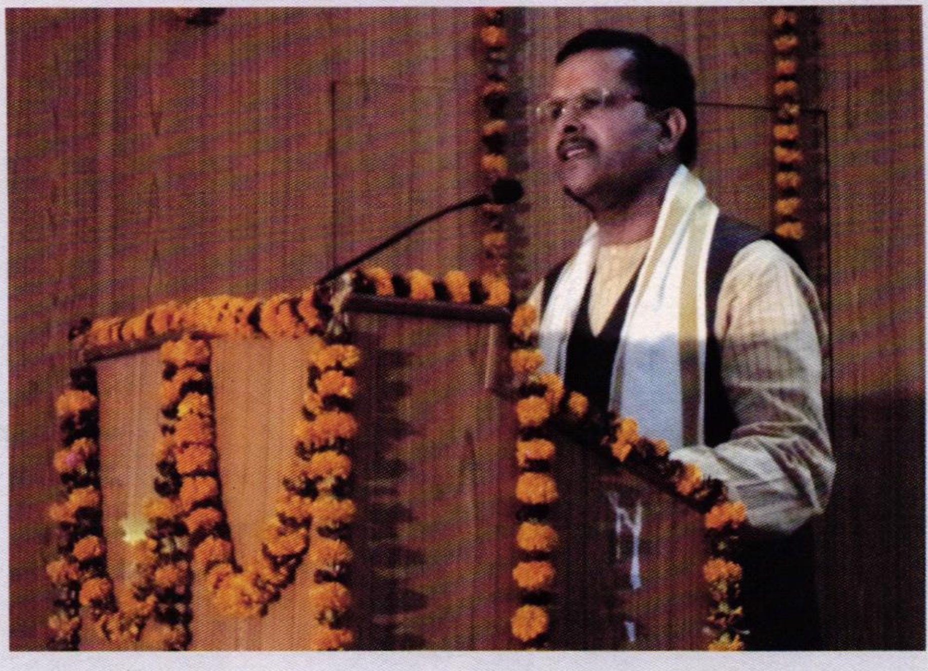

चतुर्थ सत्रः अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में आयोजित अखिल भारतीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन की अध्यक्षता जहाँ देहरादून से पधारे अंतरराष्ट्रीय स्तर के कवि डॉ0 बुद्धिनाथ मिश्र ने की, वहीं आजमगढ़ उत्तरप्रदेश के अपर आयुक्त तथा सुप्रसिद्ध साहित्कार व कवि राजकुमार सचान 'होरी' ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और बोर्ड के सचिव ओम प्रकाश शुक्ल के स्वागत के पश्चात् बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर जी ने सभी कवि बन्धुओं को शॉल व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

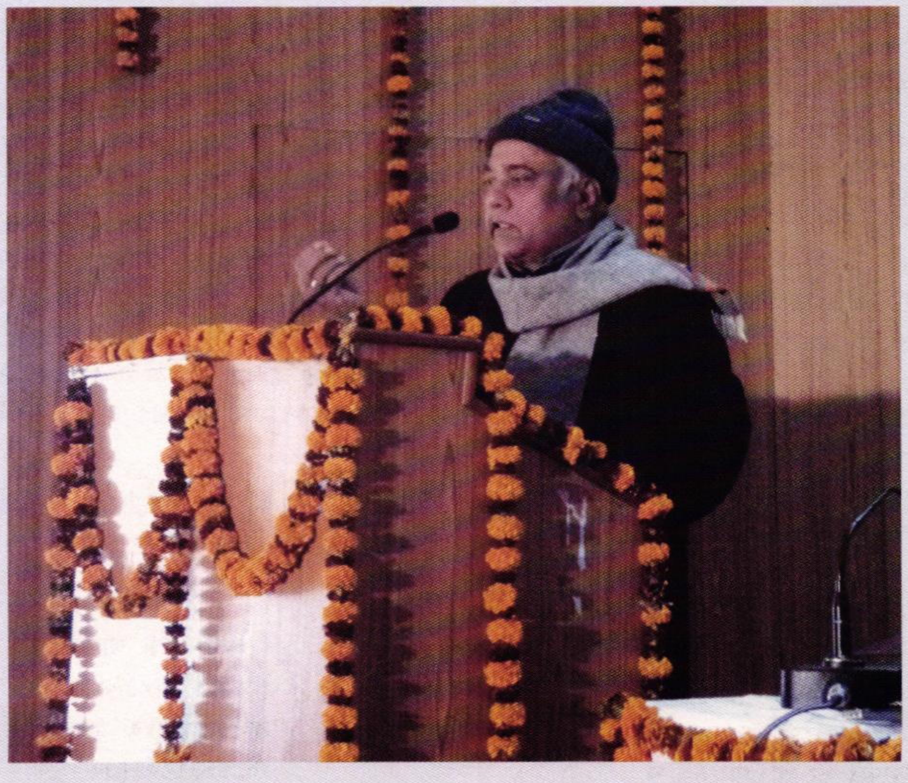

कवि सम्मेलन में जिन कवि बन्धुओं ने अपने काव्य-पाठ-सुधा-रस का

पानरसिक श्रोताओं को कराया उनमें प्रमुख नाम इस प्रकार हैं-

(1) कविवर प्रो0 कामेश्वर उपाध्याय (वाराणसी) संस्कृत,(2) कविवर प्रो0 मृत्युंजय 'करुणेश' (पटना) ग़ज़ल,(3) कविवर प्रो0 मनमोहन मिश्र (वाराणसी) हिंदी, (4) कविवर प्रो0 उदय शंकर शर्मा (पटना) मगही, (5) कविवर प्रो0 दिवाकर उपाध्याय (पूर्वीचंपारण) संस्कृत

(6) कविवर प्रो0 विशुद्धानंद (पटना) भोजपुरी, (7) कविवर आजाद कानपुरी (कानपुर) ग़ज़ल, (8)कविवर प्रो0 राम विलास

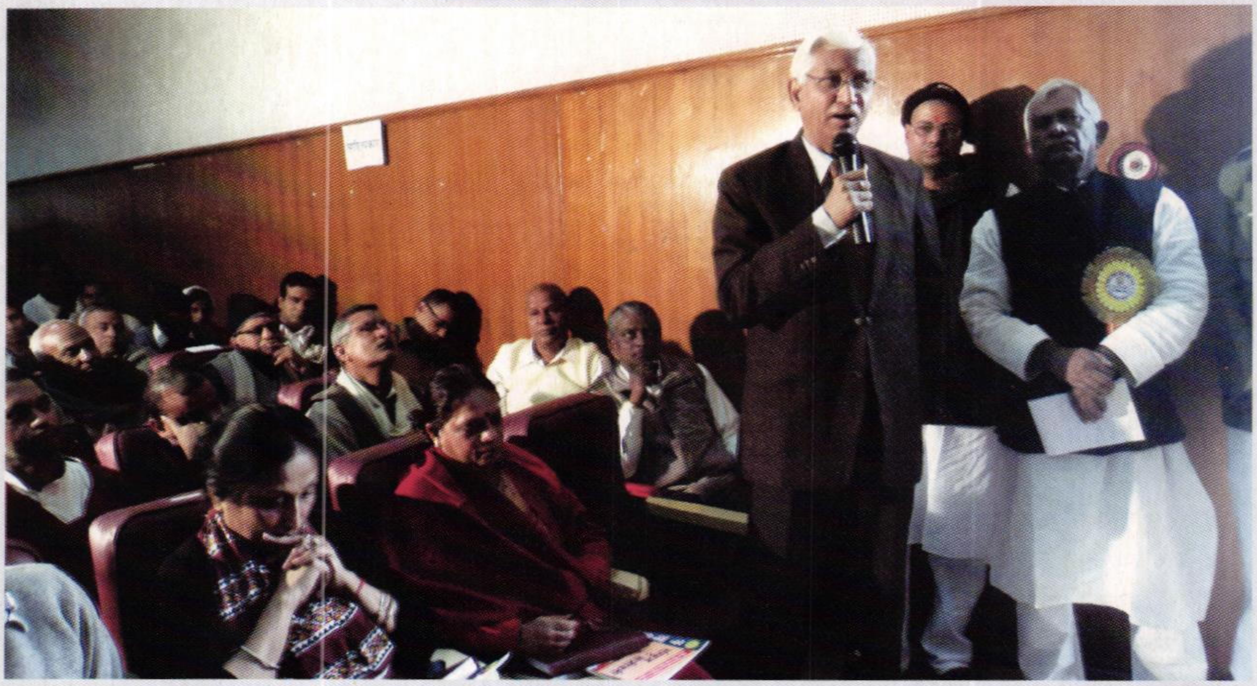

चौधरी (पटना) संस्कृत, (9)कविवर प्रो0 उमेश प्रसाद (नालंदा) मगही, (10)कविवर डॉ0 उमाशंकर वत्स (दरभंगा) मैथिली, (11)कविवर डॉ0 अमलेश वर्मा (पटना) संस्कृत, (12)कविवर डॉ0 मिथिलेश कुमारी मिश्र (पटना) संस्कृत

(13)कविवर कुमारी शैलजा (गोरखपुर) हिंदी, (14)कविवर उमेश्वर सिंह (खगड़िया) हिंदी

(15)कविवर मंजू श्रीवास्तव (लखनऊ) हिंदी, (16) कविवर राजकुमार सचान 'होरी' (आजमगढ़) दोहे, (17)कविवर डॉ0 बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून) हिंदी

यों तो प्राय: सभी कवियों को लोगों ने सराहा, मगर गोरखपुर से पधारी कुमारी शैलजा, ने जहाँ अपने गीतों का सस्वर पाठकर सभी श्रोताओं को सराबोर किया, वहीं वाराणसी के मनमोहन मिश्र उदय शंकर, डॉ0 बुद्धिनाथ मिश्र के गीतों ने लोगों को झुमाया और इन लोगों ने खूब तालियाँ बटोरीं। कविवर राजकुमार संचान 'होरी' ने मंच संचालन कर पूरे कवि सम्मेलन को जीवंत बनाया। शिक्षक संघ के महासचिव तथा संस्कृत विद्यालय, मुजफ्फरपुर के दयाशंकर पाण्डेय ने सभी कवि बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए यह आशा जताई कि भविष्य में भी वे पटना के सभी श्रोताओं को अपने काव्य-पाठ से संस्कृत व हिंदी के प्रति रुझान उत्पन्न करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

समयाभाव की वजह से चतुर्थ सत्र के दौरान ही बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा संस्कृत की महत्ता और उपादेयता के मदेनजर कक्षा एक से स्नातक स्तर तक के पाठ्यक्रमों में संस्कृत को अनिवार्य रूप से शामिल करने की माँग सरकार से करते हुए इस आशय का एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसका अनुमोदन मानवाधिकार आयोग, बिहार के माननीय सदस्य न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद ने किया। अनुमोदन के क्रम में उन्होंने प्रस्ताव की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए विस्तार से संस्कृत के अवदान को लोगों के समक्ष रखा और संस्कृत शिक्षा को प्रथम वर्ग से स्नातक स्तर तक की पढ़ाई में शामिल नहीं करना मानवाधिकार का हनन बताया।

चारों सत्रों में बोर्ड तथा बोर्ड से बाहर के जिन लोगों ने हर स्तर पर सहयोग किया उनमें प्रमुख हैं- रिंकू, स्मिता, अमिता, राजेन्द्र झा, भवनाथ झा, संगीता, सुधा, राजू, सुरेश महतो, बिनेश, अविनाश, चन्द्रभूषण, लखन, राजेश कुमार, सुबोध कुमार निराला, शिवकुमार, दिलीप पाण्डेय , सूर्यदेव, उपेन्द्र आदि। दिल्ली के मास्टर समीर ने पियानो पर सरस्वती वंदना का गायन और वादन कर सभागार में उपस्थित सभी लोगों का दिल जीता। इन सभी कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त इस संगोष्ठी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सफल बनाने में जिन लोगों ने सहयोग किया, उन सभी को बोर्ड के अध्यक्ष ने तहेदिल से धन्यवाद देते हुए

भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा की, ताकि संस्कृत के उन्नयन के साथ-साथ संस्कृत बोर्ड भी अपनी खोई प्रतिष्ठा को वापस ला सके।

संपर्क :

उपसंपादक 'वाग्वन्दना'

'घरौंदा', ए/364, ए.जी. कॉलोनी, पटना-800025,

मो. 9835642504

संस्कृत भारतीय संस्कृति की धरोहर है

सारण प्रमंडल संस्कृत सम्मेलन सपंन्न

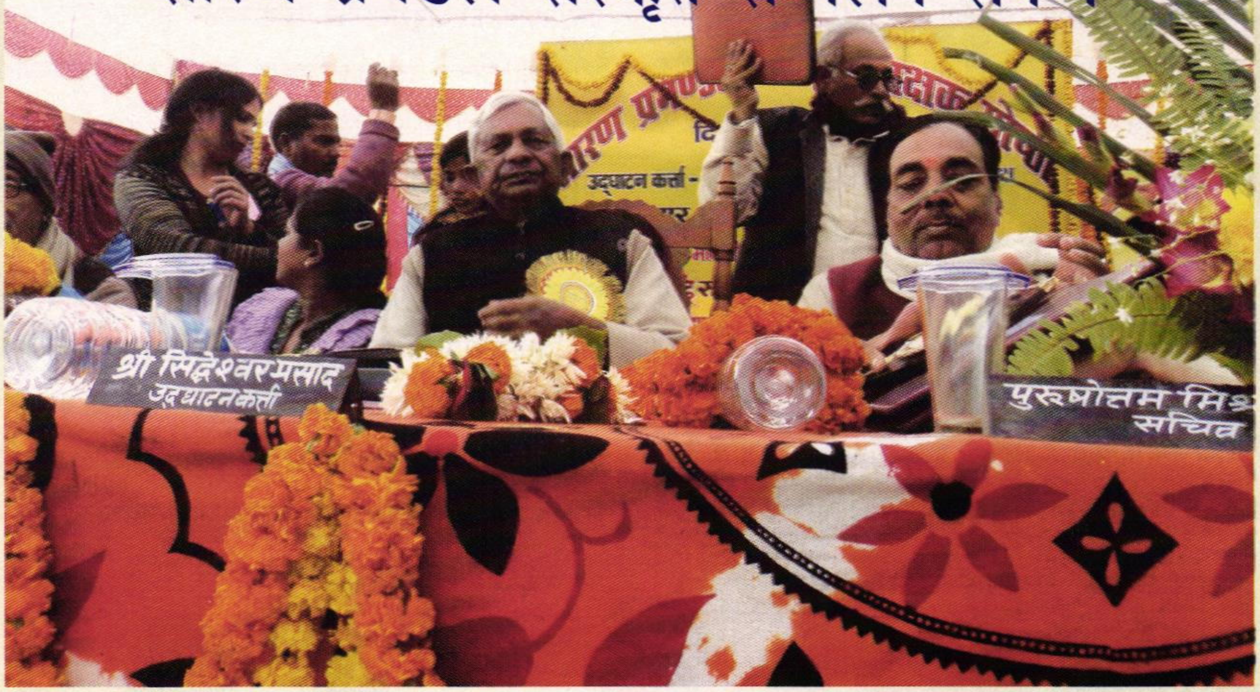

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना के द्वारा सभी भाषाओं की जननी संस्कृत के उन्नयन के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। यों तो इस अभियान की शुरुआत बोर्ड के वर्तमान अध्यक्ष सिद्धेश्वर प्रसाद के द्वारा विगत 15 सितंबर 2008 को दायित्त्व संभालने के तुरंत बाद बिहार की राजधानी पटना में राष्ट्रीय स्तर पर तारामण्डल सभागार में संस्कृत के विभिन्न पहलुओं पर आयोजित संस्कृत संगोष्ठी से कर दी गई थी और फिर दूसरे वर्ष 2009 के 28 एवं 29 दिसंबर को पुनः पटना के श्री कृष्ण स्मारक भवन में संस्कृत शिक्षा को लेकर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन के आयोजन से संस्कृत बोर्ड ने संस्कृत जगत के मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज की, किंतु संस्कृत उन्नयन की यह यात्रा अभी-अभी वर्ष 2010 के जाते-जाते 29 दिसंबर को पुनः पटना के तारामण्डल में स्वस्थ समाज के निर्माण में संस्कृत की भूमिका और संस्कृत साहित्य-लेखन की समस्या को लेकर आयोजित हुई जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर के संस्कृत के उद्भट विद्वान डॉ0 रामकरण शर्मा, डॉ0 रामभक्त लांगायन तथा डॉ0 कामेश्वर उपाध्याय एवं डॉ0 ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार जैसे संस्कृत से जुड़े लोगों का ध्यान खींचा। इस संगोष्ठी से संस्कृत बोर्ड को प्रेरणा मिली और उसने यह महसूस किया कि मात्र राजधानी में संस्कृत सम्मेलन करने से संस्कृत को पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता, इसे गाँवों तक ले जाना होगा।

इसी भाव से प्रेरित होकर बोर्ड के अध्यक्ष ने अपने प्रथम चरण में संस्कृत उन्नयन यात्रा की शुरुआत भोजपुरी क्षेत्र सीवान प्रमण्डल से 19 जनवरी, 2011 को सीवान के लगभग बीस किलोमीटर दूर बिल्कुल देहाती इलाके में स्थित

राम नारायण संस्कृत उच्च विद्यालय, चुपचपवा के प्रांगण में सारण प्रमण्डल संस्कृत सम्मेलन आयोजित कर की गई।

संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर प्रसाद ने उक्त सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि संस्कृत भारतीय संस्कृति की धरोहर है जिसके विलुप्त होते जाने तथा इसकी उपेक्षा की वजह से हमारे संस्कार और संस्कृति खत्म होती जा रही है। संस्कृति ही किसी राष्ट्र की आत्मा होती है जिससे राष्ट्रीय मूल्यों का बोध होता है, मगर जिन संस्कृत विद्यालयों में संस्कृत का पठन-पाठन ही नहीं होता हो, तो संस्कार और संस्कृति का समाज से लुप्त होते जाना स्वाभाविक है जिसके दुष्परिणाम हैं समाज में तेजी से पनपती विसंगतियाँ, दुष्प्रवृतियाँ और विद्रपताएँ। संस्कृत विद्यालयों के संचालक और शिक्षक पठन-पाठन को ठप्पकर समाज का कितना अहित कर रहे हैं यह इसी बात से समझा जा सकता है। इसलिए बोर्ड ने संस्कृत शिक्षा में सुधार के लिए इसके पठन-पाठन को लेकर यह सम्मेलन आयोजित किया है। पिछले 32 वर्षों में 3776 एवं 711 कोटि के लगभग 4500 प्रस्तावित संस्कृत विद्यालयों की प्रस्वीकृति नहीं किए जाने पर उन्होंने क्षोभ और आश्चर्य व्यक्त करते हुए इन विद्यालयों की प्रस्वीकृति के लिए कदम बढ़ाये हैं, और अब तक कुल 1659 संस्कृत विद्यालयों से प्राप्त दस्तावेजों का संबंधित जिलाधिकारियों से भौतिक सत्यापन कराने के पश्चात् बोर्ड के स्तर पर समीक्षा कराई तथा प्रत्येक प्रतिवेदन को उन्होंने स्वयं देखा और अब तक एक हजार संस्कृत विद्यालयों की प्रस्वीकृति की अनुशंसा की गई है जिनमें से 914 विद्यालयों की सूची मानव संसाधान विकास विभाग को अनुमोदनार्थ भेजी जा चुकी है। उल्लेख्य है कि इनमें से 300 विद्यालयों की प्रस्वीकृति को बिहार सरकार की मंत्रिपरिषद् ने हरी झंडी देते हुए संस्कृत शिक्षकों के वेतनादि के लिए साढ़े दस करोड़ रुपये की स्वीकृति भी दे रखी है, किंतु संस्कृत बोर्ड को विभाग से प्रस्वीकृत विद्यालयों के अनुमोदन संबंधी पत्र अभी तक नहीं प्राप्त हो सका है जिसकी वजह से आगामी 1 मार्च से 4 मार्च 2011 तक वर्ष 2010 और 2011 की संयुक्त रूप से बोर्ड द्वारा आयोजित मध्यमा परीक्षाओं में उन

विद्यालयों को शामिल करने में मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार केवल प्रस्वीकृत विद्यालयों के ही विद्यालयों को मध्यमा की परीक्षा में शामिल किए जाने का प्रावधान है।

बोर्ड के अध्यक्ष ने रामनारायण संस्कृत उच्च विद्यालय, चुपचपवा में एक कंप्यूटर कक्ष का उद्घाटन करते हुए प्रसन्नता व्यक्त कि अब संस्कृत विद्यालयों के नए पाठ्यक्रम में कंप्यूटर विज्ञान को भी एक विषय के रूप में शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि

संस्कृत के विद्यार्थियों को भी रोजगार के अवसर मिल सके। इसी बीच बिहार उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे गाँव में स्थित नर्मदेश्वर संस्कृत उच्च विद्यालय सीवान में भी कंप्यूटर कक्ष का शुभारंभ सिद्धेश्वर ने किया और सैकड़ों की संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए विद्यालय के सचिव कौशल किशोर तिवारी तथा विद्यालय के प्रधानाध्यापक अविनाश के द्वारा संस्कृत के उन्नयन के लिए किये जा रहे प्रयासों की मुक्त कंठ से सराहना की और विद्यालय को हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

मैरवा के चुपचपवा स्थित रामनारायण संस्कृत उच्च विद्यालय में संस्कृत विद्यालयों में पठन-पाठन की समस्याएँ और समाधान विषय पर आयोजित संगोष्ठी तब जीवंत हो गई जब बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने स्वयं उसके संचालन का दायित्व संभालते हुए संगोष्ठी में पधारे सुधी श्रोताओं को भी विचारों के आदान-प्रदान में शामिल किया। प्रारंभ में विद्यालय के प्रधानाध्यापक चंद्रभूषण मिश्र के द्वारा मान्य अतिथियों के स्वागत और सम्मान किए जाने के पश्चात् वाग्देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का विधिवत् उद्घाटन किया गया। संगोष्ठी में कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के धार्मशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. श्रीपति त्रिपाठी ने विस्तार से बोर्ड द्वारा संस्कृत में जान डालने के प्रयासों पर प्रकाश डाला। संस्कृत शिक्षक संघ के प्रतिनिधि दयाशंकर पाण्डेय, नागेन्द्र शुक्ल, रामाधार सिंह, प्रद्योत कुमार, कोमल पाण्डेय, गोपालजी त्रिपाठी आदि ने तो विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए ही, श्रोताओं में प्रो॰ पुरुषोत्तम, श्रीमती ममता, अविनाश, मनोज सिंह, चतुभुर्ज तिवारी, अशोक कुमार आदि ने भी विचारों के आदान-प्रदान में हिस्सा लेकर संगोष्ठी को जीवंत बनाया।

दिल्ली से पधारी गोररखपुर की सुप्रसिद्ध गीतकार कुमारी शैलजा ने अपने गीतों का सुधा-रस-पान कराकर श्रोताओं को झुमा दिया। भाषा, साहित्य ओर संस्कृत से संदर्भित गीत 'जाने किसकी नजर लग गई, हमरी सोन चिरैया को' से अंत इस संगोष्ठी में पधारे श्रोता गीत के इस मुखड़े को गुनगुनाते विदा हुए और उसे अपने सपनों में संजाया। हम बताते चलें कि बोर्ड के अध्यक्ष ने अपनी इस संस्कृत यात्रा के क्रम में केवल संस्कृत विद्यालयों का औचक निरीक्षण कर उसकी अद्यतन स्थिति को संतोषप्रद ही नहीं बताया, बल्कि कई स्थलों पर बने तोरणद्वार स्थल पर पधारें संस्कृत शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए यह प्रसन्नता जताई कि

एक लंबे अरसे के बाद संस्कृत शिक्षक संस्कृत के उन्नयन के लिए उठाए गए कदमों के साथ कदम मिलाकर चल रहे हैं जिससे एक आशा बनती है।

जिन संस्कृत विद्यालयों का औचक निरीक्षण किया गया और जिन विद्यालयों के शिक्षकों को संबोधित कर अधयक्ष ने उनका हौसला बढ़ाया उनके नाम इस प्रकार है- श्री ढ़ोढ़नाथ संस्कृत प्राथमिक सह उच्च विद्यालय,

दन्दासंपुर, लहलादपुर, रामनगीना लक्ष्मीनारायण संस्कृत प्रा. सह मा. विद्यालय, चांदपुर, बनियापुर, लाला भागवत संस्कृत मधय विद्यालय, परमानंदपुर, फिरंगी राय संस्कृत प्रा.सह उच्च विद्यालय, पंचभीड़िया, गारखा, देवमुनी सुदामा प्रा. सह कन्या सं. उच्च विद्यालय, श्रीपालनगनर, प.रामनाथ पांडेय प्रा. सह सं. उ. वि. तेलछा, शंकर प्रा. सह सं.मधय विद्यालय, दन्दासपुर, स्वामी विवेकानंद सं. प्रा. सह म. विद्यालय मटियार, छपरा, इंद्रदेव सं. प्रा. सह उ. विद्यालय, राजीवनगर, साधापुर, छपरा, संस्कृत उन्नयन यात्र का समापन हुआ छपरा के गरखा स्थित गाँव पचभिरिया की हरियाली से लहलहाते खेतों के प्रांगण में फिरंगी राय संस्कृत प्रा. सह उच्च विद्यालय द्वारा आयोजित एक समारोह मे अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, डॉ॰ ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार ने । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्कृत शिक्षा के पठन-पाठन में सुधार और संस्कृत शिक्षा की गुणवत्ता को और अधिक बढ़ाने पर बल प्रदान किया। 18 जनवरी 2011 को अपनी संस्कृत उन्नयन यात्रा के प्रथम चरण समापन में बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने पुनः सेमिनार के पुराने तौर-तरीकों में परिवर्तन करते हुए निर्धारित विषय पर श्रोताओं से भी उनके विचार सुने तथा सेमिनार में उठाए गए प्रायः प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर दिए। अध्यक्ष ने संस्कृत के पाठ्यक्रमों में सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किए जाने की वकालत की, क्योंकि आज की युवा पीढ़ी को पता ही नहीं कि उन्हें समाज को क्यों देना है। यही कारण है कि उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता जहाँ एक ओर समाप्त होती जा रही है, वहीं दूसरी ओर रिश्ते-नाते में टूटन और दरार तेजी से बढ़ते जा रहे हैं जिसकी ओर प्रबृद्धजनों के साथ-साथ संस्कृत से जुड़े लोगों का ध्यान विशेष तौर पर इसलिए जाना जरूरी है, क्योंकि संस्कृत से ही लोगों में संस्कार उत्पन्न होगा और अपनी संस्कृति की भी रक्षा हो सकेगी।

समापन समारोह के मुख्य कर्णधार उपेन्द्र प्रसाद राय के हृदय में संस्कृत के प्रति रूझान देख-सुनकर यह आशा निश्चित रूप से बँधाती है कि संस्कृत का उन्नयन तो होगा ही, संस्कृत बोर्ड भी अपनी खोई प्रतिष्ठा वापस ला सकेगा।

उपसंपादक,
बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड पटना

श्री वृशिण पटेल
सूचना एवं जन–संपर्क एवं परिवहन

श्री रमई राम
राजस्व एंव भूमि सुधार

श्री चन्द्र मोहन राय
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण

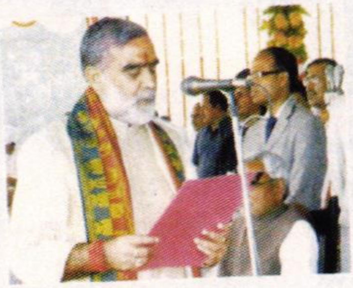

श्री अश्विनी कुमार चौबे
स्वास्थ्य

श्री हरी प्रसाद साह
पंचायती राज, पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग कल्याण

श्री भीम सिंह
ग्रामीण कार्य

श्रीमती रेणु कुमारी
उद्योग एवं आपदा प्रबंधन

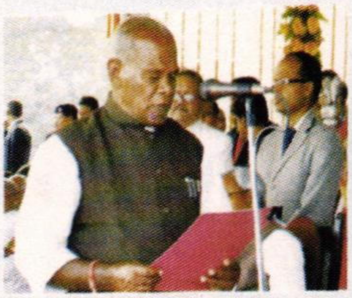

श्री जीतन राम मांझी
अनुसूचित जाति / जनजाति कल्याण

श्री दामोदर रावत
भवन निर्माण

डॉ0 प्रेम कुमार
नगर विकास एवं आवास

श्री नरेन्द्र नारायण यादव
विधि, योजना एवं विकास

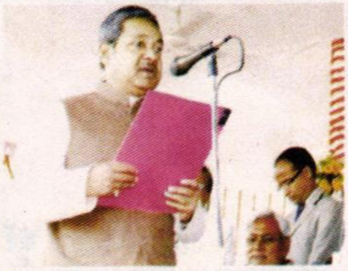

श्री प्रशांत कुमार शाही
मानव संसाधन विकास

राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यगण

26 नवम्बर, 2010 से

श्री नीतीश कुमार (मुख्यमंत्री)
गृह, सामान्य प्रशासन, मंत्रिमंडल सचिवालय, निगरानी, निर्वाचन एवं ऐसे सभी विभाग जो किसी को आवंटित नहीं हैं।

श्री सुशील कुमार मोदी
(उपमुख्यमंत्री)
वित्त, वाणिज्य कर, पर्यावरण एवं वन

श्री विजय कुमार चौधरी
जल संसाधन

श्री बिजेंद्र प्रसाद यादव
ऊर्जा, उत्पाद एवं मद्यनिषेध, निबंधन एवं संसदीय कार्य

श्री नन्द किशोर यादव
पथ निर्माण

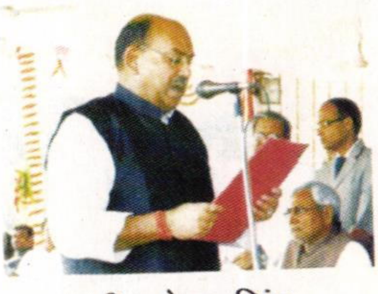

श्री नरेन्द्र सिंह
कृषि

श्री शाहिद अली खां
अल्पसंख्यक कल्याण एवं सूचना प्रावैधिकी

श्री श्याम रजक
खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण

श्रीमती परवीन अमानुल्लाह
समाज कल्याण

श्री नीतीश मिश्रा
ग्रामीण विकास

श्री अवधेश प्रसाद कुशवाहा
गन्ना एवं लघु जल संसाधन

श्री गौतम सिंह
विज्ञान एवं प्रावैधिकी

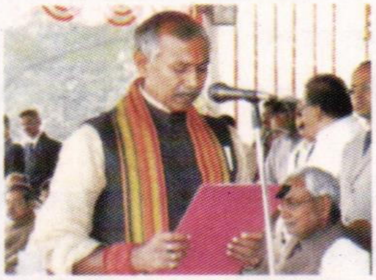

श्री जनार्दन सिंह सीग्रीवाल
श्रम संसाधन

श्री गिरिराज सिंह
पशु एवं मत्स्य संसाधन

श्री सत्यदेव नारायण आर्य
खान एवं भूतत्व

श्री रामाधार सिंह
सहकारिता

श्रीमती (प्रो0) सुखदा पांडेय
कला संस्कृति एवं युवा विभाग

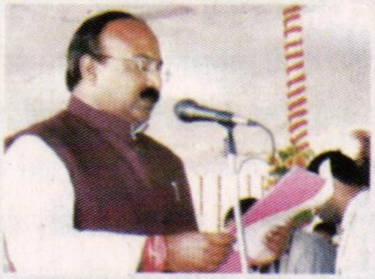

श्री सुनील कुमार उर्फ पिंटू
पर्यटन

'बिहार संदेश' स्मारिका लोकार्पण समारोह-2010

आस्था एवं विश्वास के महापर्व छठ का दो दिवसीय भव्य रंगारंग समारोह बिहार जागरण मंच (पंजीकृत) दिल्ली के तत्वावधान में यमुना पूर्वी तट पर (पण्डुण पुल भैरव मार्ग, निकट यमुना बैंक मेट्रो स्टेशन) धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर बिहार विभूति, बिहार विकास एवं छठ पर्व पर केन्द्रित स्मारिका 'बिहार संदेश' (संपादक-प्रो. पी के झा 'प्रेम') के पंचम अंक का लोकार्पण दिल्ली सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन के हाथों सम्पन्न हुआ। समारोह में आये हुए गण्यमान्य महानुभावों ने राष्ट्र के विकास में बिहार विभूतियों के योगदान पर चर्चा की। साथ ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में रहने वाले पूर्वांचल वासियों के राष्ट्र-निर्माण में योगदान की भी चर्चा की एवं मंच के द्वारा बिहार संदेश के लगातार पाँचवे अंक के प्रकाशन पर सम्पादक एवं अध्यक्ष को तहे दिल से धन्यवाद दिया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्द्धन ने बिहार संदेश के कलेवर एवं तेवर की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही छठ की व्यापकता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि छठ सिर्फ पूर्वांचल वासियों का पर्व नहीं है वरन् यह तो राष्ट्र से ऊपर उठकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाये जाने वाला एक महत्वपूर्ण पर्व बन गया है।

उक्त अवसर पर भाजपा सांसद कीर्ति झा आजाद; दिल्ली प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष पूनम झा आजाद; राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (महिला मोर्चा) श्रीमती मीनाक्षी लेखी, जिला भाजपा अध्यक्ष निर्मल जैन; जिला मंत्री रीता मिश्रा; पार्षद लता गुप्ता, मण्डल अध्यक्ष बीरबल; योगेश त्रिपाठी एवं अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने छठ की महत्ता पर विचार प्रकट किए।

समारोह की अध्यक्षता दिनेश प्रताप सिंह ने की एंव सभा संचालन डॉ. प्रसून झा ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध गायक गोविन्द ओझा ने अपने लोकप्रिय गायन से समारोह को झूमने पर विवश कर दिया। पूजा स्थल पर सेवा एवं सुरक्षा में मंच के कार्यकर्त्ताओं ने तन मन धन से योगदान किया।

एक नई सुबह का अहसास

❑ सिद्धेश्वर

बिहार विधान सभा के लिए वर्ष 2010 में संपन्न चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को जो ऐतिहासिक जनादेश मिला उससे बिहार में एक नई सुबह का अहसास हुआ है। नीतीश कुमार की सरकार ने पिछले पाँच साल में बिहार के विकास के लिए जो कुछ किया वहाँ की जनता ने उस पर भारी उत्साह के साथ अपनी स्वीकृति की मुहर लगाई। लालू-रामविलास के सारे जातीय समीकरण को ध्वस्त करते हुए बिहार के मतदाताओं ने लगभग एक स्वर में उसका जवाब दिया है जो देश के सारे राजनेताओं के लिए एक उदाहरण बन सकता है। नीतीश कुमार और उनकी सरकार ने यह सिद्ध कर दिया है कि दृढ़ इच्छाशक्ति और ईमानदार प्रयासों से एक ऐसे राज्य को भी बदला जा सकता है जो देश में कुशासन और जातपात की राजनीति का पर्याय बन चुका था। बिहार की जनता ने पुन: विचार और कर्म के क्षेत्र में देश का नेतृत्व किया है, जो कि प्राचीन काल से बिहार की भूमिका रही है। बिहार की जनता ने जाति, अपराध और कुशासन के विरूद्ध विद्रोह करके नीतीश कुमार के सामाजिक अभियंत्रण (ैवबपंस म्दहपदममतपदह) में आस्था व्यक्त की है और जे०पी० के संपूर्ण क्रांति की याद को ताज़ा किया है।

बिहार के इस चुनाव ने यह साबित कर दिया है कि वहाँ के मतदाता इस बार कोई जोखिम लेने के मनोदशा में नहीं थे। सुशासन और कानून का राज स्थापित होने की बात हर किसी ने स्वीकार की। बिहार में चुनाव बिना हिंसा और तनाव के संपन्न हो जाए, इसकी कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था। इस चुनाव के पूर्व किसी को भी यह अनुमान नहीं था कि वर्तमान परिस्थिति में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े माने जाने वाले बिहार में महिलाएँ चुनाव में इस कदर भाग लेकर यहाँ तक कि पुरुषों को पीछे छोड़ देंगी। महिलाओं ने जहाँ 54.85 प्रतिशत वोट डाले, वहीं पुरुषों ने 50.77 प्रतिशत। यदि चुनाव के वक्त सुरक्षाबलों की बहुतायत के चलते हिंसा का अंत होना कहा जाए, तो क्या इसके पूर्व के चुनावों में सुरक्षा बल तैनात नहीं किए गए थे? निश्चित रूप से इस बार के चुनावों में एक भी मतदाता अथवा प्रत्याशी का हताहत नहीं होना नीतीश सरकार के पूर्व के पाँच वर्षों के कार्यकाल में राजनीतिक परिवर्तन एवं समाज के बदलते मनोविज्ञान का द्योतक है। राजग सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यदि पिछले पाँच वर्षों की मानी जाए, तो कहा जाएगा कि अपराध एवं अपराधियों के भय से यह राज्य बहुत हद तक मुक्त हुआ है। कारण कि शीघ्रगामी मार्गवाले अदालतों (थ्ेंज जतंबा बवनतज) में पिछले पाँच सालों के दौरान 52 हजार लोगों को सजा दी गई जिसका असर साफ दिखा। हिंसा के आँकड़े बताते हैं कि वर्ष 1990 में जहाँ 67 लोग हिंसा के शिकार हुए, वहीं 1995 में 54, वर्ष 2000 में 61, वर्ष 2005 में 27 लोग मारे गए थे। इसी प्रकार 1999 के लोकसभा चुनाव में जहाँ 76 लोग मारे गए थे, वहीं 2004 में 19 तथा 2009 में केवल सात लोग मारे गए थे। पर इस बार चुनाव हिंसा रहित हुआ। सच तो यह है कि बिहार में आज हालात ऐसे हैं कि कोई अपराधी खुलकर किसी को डराने-ध मकाने की न सोच सकता है और न कोई कल्पना कर सकता है। वैसे भी समाजशास्त्र का सिद्धांत यह है कि यदि समाज में भयरहित माहौल हो, तो लोगों की सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया में खुलकर भागीदारी होती है। बिहार में इस बार यही हुआ। निश्चय ही बिहार की यह तस्वीर पूरे देश के लिए उम्मीद पैदा करने वाली है और दिशा देने वाली भी। और दिशा देने वाली हो भी क्यों नहीं, प्राचीन भारत का वह बिहार जहाँ वेद की पहली ऋचाएँ लिखी गईं एक बार फिर से देश को दिशा देने के लिए तैयार करने की तरफ बढ़ रहा है। बिहार के मतदाताओं के इस फैसले से एक बात तो स्पष्ट तौर पर समझ आ रही है कि बिहार जाति की जकड़ से निकल चुका है। यही नहीं, नीतीश कुमार ने चुनाव प्रचार के दौरान जिस शालीनता का परिचय दिया उससे बिहार की महान सांस्कृतिक परंपरा का आभास होता है। उनके वक्तव्यों से यह भी देखने को मिला कि इस राज्य की जनता अंधविश्वास से मुक्त रहकर अपने आर्थिक-सामाजिक विकास को ज्यादा अहमियत देती है। संस्कार की जीत के मद्देनजर अब तो लालूजी ने भी राजद के नेताओं को जनता के बीच सादगी से पेश आने को कहा है। इसे अभूतपूर्व विजय के पहले या बाद नीतीश कुमार के सार्वजनिक आचरण, प्रतिक्रिया और बयान का ही प्रतिफल कहना लाजिमी होगा। इस प्रकार नीतीश कुमार के संयम, मर्यादा और सार्वजनिक आचरण को दाद देना होगा। इस इनसान को ध्यान से देखने की जरूरत है। 'ए मैन टू बी वाच्ड' (। उंद जव इम ॅंजबीमक) अँग्रेजी के इस कहावत को याद करना होगा। श्री कुमार की विनम्रता और शिष्टाचार सभ्य होने की निशानी है और इसके जो फायदे हैं बिहार के इस चुनाव में उन्हें मिले। उनकी लोकप्रियता का ग्राफ बढ़ने के पीछे उनका शिष्ट व्यवहार भी एक कारण है। पिछले पाँच सालों में उनकी लोकप्रियता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। सच कहा जाए तो लोकप्रियता के मामले में नीतीश कुमार आज की तिथि में नरेन्द्र मोदी, नवीन पटनायक, शिवराज सिंह चौहान, रमन सिंह तथा शीला दीक्षित से भी आगे निकल गए हैं। यह सिर्फ मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि सी०एन०एन०, आई०बी०एन० व सी०एस०डी०एस० सर्वे के आँकड़े भी यही बताते हैं।

वैसे भी आजादी के बाद इस देश में किसी भी गठबंधन को ऐसी जीत नहीं मिली जिसमें विपक्ष नाम की कोई चीज ही नहीं बची। बिहार में पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को जीत हासिल हुई और जिसमें शहर गाँव, गरीब सभी की भागीदारी रही और उसे समाज के सभी तबकों का सहयोग मिला। इस जीत का पूरा सेहरा नीतीश कुमार को इसलिए मिला, क्योंकि इस जीत में गरीब आधारित नीतियों का भी बड़ा योगदान रहा है।

बिहार विधान सभा के पिछले चुनाव में कुल 243 सीटों के

लिए 3523 उम्मीदवार मैदान में थे, जिसमें 308 महिला उम्मीदवार थीं तो 1342 निर्दलीय प्रत्याशी भी दौड़ में थे। इस चुनाव की एक और खास बात यह रही है कि 2005 के चुनाव के 46.8 प्रतिशत मतदान के मुकाबले इस बार 2010 के चुनाव में जबर्दस्त मतदान कुल 52.4 प्रतिशत रेखांकित करने योग्य है। पारंपरिक रूप से समाज के पिछड़े तबकों की चुनावी भागीदारी अधिक हुई। इस चुनाव में राजनीतिक पार्टियाँ कमोवेश आचार संहिता के अनुपालन को कटिबद्ध रहीं जो बदलते बिहार के लिए ऐतिहासिक शुरुआत कही जाएगी और यह भी कहा जाएगा कि बिहार बीमार राज्य के अपने तमगे से बाहर निकलने को छटपटा रहा है। इसमें तनीक संदेह नहीं कि बिहार के आर्थिक विकास की धारा पटरी पर आने लगी है। बिहार से मजदूरों का पलायन भी पिछले 5 सालों में रुका है, क्योंकि राज्य के भीतर ही बेहतर आर्थिक विकल्प उपलब्ध हुआ है। विकास पर सरकार का खर्च-पहले के 2000 करोड़ रुपए सालाना से बढ़कर 16000 करोड़ हो गया है जिसके परिणामस्वरूप निर्माण क्षेत्र में बिहार में तेज विकास हुआ जो 35.8 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रहा है। बिहार निश्चित रूप से इस राज में अपनी पहचान तलाश रहा है। कहना नहीं होगा कि राजनीति स्वभावत: प्रतिस्पर्धा होती है, किंतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एक अच्छे समाज की नींव डालती है। ऐसा देखा गया है कि पिछले कई दशकों से प्रतिस्पर्धा की इस राजनीति ने बिहारी समाज को रसातल की ओर धकेला है, मगर वर्ष 2005 से 2010 के बीच पाँच सालों में बिहार ने एक महत्त्वपूर्ण यात्रा तय की जिसके परिणामस्वरूप बिहार में एक नई सुबह आई जो बिहार की जनता की उम्मीदों और आकांक्षाओं को जगाने का काम करेगी। वर्षों से आर्थिक और सामाजिक रूप से हाशिए पर पड़ी बिहार की जनता को इस बार अपने अधिकारों का अहसास होगा और आम आदमी अपने उन्नत जीवन जिएगा। जनता की यह अपेक्षा न्यूनतम है। बिहार की यह नई सुबह यहाँ की जनता को एक महत्त्वपूर्ण रास्ते पर ले जाएगी और बिहार की वास्तविक प्रगति का शुभारंभ होगा। उम्मीद की जाती है कि नीतीश कुमार की नई सरकार जनता की उम्मीदों पर खरा उतरेगी अन्यथा जनता अगली बार उन्हें भी इसकी सजा देने से बाज नहीं आएगी। इसमें संदेह नहीं कि नीतीश कुमार अपनी चुनौतियों से परिचित हैं और इन्हें अवसर में बदलना वे बखूबी जानते हैं।

नि:संदेह नीतीश कुमार के पास विकास का एक विजन है और उनकी नीतियों में बिहार को एक आधुनिक राज्य बनाने का इरादा दिखता है। बिहार के लोगों ने उन्हें यह जनादेश बिहार में सामाजिक परिवर्तन के उनका अधूरे कामों को पूरा करने के लिए दिया है। दो-तीहाई के प्रचंड बहुमत से नीतीश कुमार और सुशील मोदी के नेतृत्ववाले राजग सरकार को दोबारा सत्ता सौंप कर बिहार के मतदाताओं ने जहाँ सुशासन और विकास के नारे में विश्वास जाहिर किया है , वहीं यहाँ की जनता में एक नई सुबह का अहसास हुआ है। महिलाओं के सशक्तिकरण के उभार ने सामाजिक न्याय के अगले चरण की क्रांति की मशाल फिर से नीतीश और मोदी के हाथों थमा कर बिहार की जनता ने यह बता दिया है कि सत्ता की असली ताकत गाँवों, कस्बों में बसने वाले लोगों के पास है। विकास के आखिरी पायदान पर खड़े वंचितों, शोषितों और पीड़ितों की नब्ज पहचानने वाले तथा सद्भाव एवं समरसता की धार बहाने वाले ही सत्ता की बागडोर थामे रह सकते हैं। विकास की नई कहानी लिखने वाले नीतीश कुमार का यह कदम देश और लोकतंत्र के लिए सुखद सबक तो बनेगा ही, वह यकीनन बिहार में नई क्रांति की अलख जगाने की शुरुआत करने जा रहे हैं।

243 सदस्यीय बिहार विधान सभा में जहाँ राजग को 206 सीटें मिलीं, वहीं विपक्ष मात्र 37 सीटों पर सिमट कर रह गया, मगर आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा --''मैं यह उचित नहीं समझता हूँ कि इस जीत पर विरोध ी दल के नेताओं की किसी प्रतिक्रिया पर कोई कटाक्ष या टिप्पणी की जाए। उनलोगों को जीत का मर्म समझने का समय दिया जाना चाहिए।'' यह बड़े मन से कही गई बात है और लोकतंत्र के प्रति आदर का भाव है। राजग के विधायकों सहित नवगठित मंत्रिपरिषद् की पहली बैठक में ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सदस्यों को सावधान कर दिया है कि वे प्रचंड बहुमत के मुगालते में न रहें, अपना आचरण सुधारें और आज से ही जनता की सेवा में पूरे मन से जुट जाएँ। मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क व विधि व्यवस्था के अतिरिक्त खाद्य, सुरक्षा, बिजली व भ्रष्टाचार उन्मूलन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे उनके दृढ़ संकल्प का अंदाजा मिल जाता है।

यह बात ठीक है कि बिहार में चुनाव विकास के मुद्दे पर लड़ा गया और अपनी तरफ से बिहार की स्थिति न बिगड़ने देने का पूरा प्रयास नीतीश कुमार ने किया जिसका बहुत कुछ नतीजा सामने आया है, किंतु बिहार में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। जैसे कृषि के क्षेत्र में जो क्षमता बिहार में है वह किसी अन्य राज्य में नहीं है, मगर सही नीतियों की कमी की वजह से ही किसान अपनी खेती छोड़कर रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने को मजबूर हैं। हम सब इस बात से अवगत हैं कि बिहार की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है, लेकिन राज्य में कुल खेती योग्य भूमि में से मात्र 56.9 प्रतिशत में ही सिचाई की सुविधा उपलब्ध है। पंजाब की तुलना में बिहार में सिंचाई पर आने वाला खर्च तकरीबन 35 गुणा अधिक है। काम की तलाश में बिहार के लगभग 20 लाख किसान एवं मजदूरों को दूसरे राज्यों में जाना पड़ता है। पिछले पाँच वर्षों में सड़क, कानून-व्यवस्था, स्वास्थ्य तथा शिक्षा में तो सुधार हुआ, लेकिन कृषि की स्थिति सुधारने पर ध्यान नहीं दिया गया। यदि इसके लिए सही नीतियाँ अपनाई जाएँ, तो बिहार कृषिक्षेत्र में भी आगे निकल सकता है।

प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में पुनर्वापसी करने वाली राजग सरकार के सामने अब हौसलों को काम में बदलने की जबर्दस्त चुनौती है। चुनौती उन सपनों को पूरा करने की है जिसे लोगों ने बिहार के विकास पथ पर अग्रसर हुए देखा है और नीतीश सरकार को जवाबदेही सौंपी है। नीतीश सरकार को हमारी हार्दिक बधाई।

अध्यक्ष, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना।

नीतीश सरकार की पुनर्वापसी

❑ सिद्धेश्वर

बिहार की जनता की उम्मीद के अनुरूप नीतीश सरकार की प्रचंड बहुमत से बिहार की सत्ता में पुनर्वापसी से समूचे देश में खुशी की लहर इसलिए छा गई कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की दो-तिहाई से भी अधिक मतों से इस जीत से जाति और जड़वादी राजनीति ध्वस्त हुई है। दो दशक पूर्व बिहार में अस्मिता की राजनीति के बहाने परिवारवाद, जातिवाद और राजनीति के अपराधीकरण की जो खतरनाक खेती की शुरुआत हुई थी यह चुनाव उसके खिलाफ बिहार के मतदाताओं का जागरण था। उसी से परेशान होकर यहाँ की जनता नीतीश कुमार के नेतृत्व ने राज्य के विकास और स्वच्छ प्रशासन की तलाश शुरू की जिसकी प्रक्रिया में पिछले पाँच साल के दौरान पिछड़े-अगड़े की नकली लड़ाई के स्थान पर गरीबी के खिलाफ साझा अभियान की शुरुआत हुई और सत्ता के विकेंद्रीकरण एवं महिलाओं की न्याय संगत हिस्सेदारी के लिए साहसिक कदम नीतीश कुमार ने उठाए। विकास की धारा में सबसे पीछे छूट चुके बिहार के अतिपिछड़े और महादलित सहित अल्पसंख्यक समाज के पसमांदा मुसलमानों को अपनी अलग पहचान मिली जिसके परिणामस्वरूप उनके एकमुस्त मत राजग सरकार को मिले। यही नहीं नीतीश सरकार ने पिछले पाँच सालों में सड़क, पुल-पुलिया के निर्माण सहित शिक्षा, स्वास्थ्य में सुधार एवं अपराधियों को सजा दिलवाकर जो भयमुक्त समाज का निर्माण किया उसका साफ असर इस चुनाव में देखने को मिला।

बिहार के मतदाताओं के ताजा जनादेश की रोशनी में नीतीश की नई सरकार से यहाँ की जनता को ढेर सारी उम्मीदें हैं और इस सरकार के समक्ष अपार चुनौतियाँ भी। रोजगार, पूँजी निवेश, सिचाई, बिजली विधि-व्यवस्था जैसी मूल समस्याएँ जहाँ मुंह बाए खड़ी हैं, वहीं भ्रष्टाचार और भूमि सुधार जैसे मुद्दों से भी नीतीश सरकार को दो-चार होना पड़ेगा। राजनीति के सबसे बड़े खिलाड़ी लालू जी के तिलिस्म को पूरी तरह ध्वस्त करने के बाद अब नई इबारत गढ़ने के लिए नीतीश जी को बड़ी कारीगरी दिखानी होगी। पिछले 24 नवंबर 2010 को पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में हजारों-हजार जनता के बीच नीतीश कुमार तथा सुशील कुमार मोदी ने क्रमशः मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद् के अन्य 28 मंत्रियों के पद और गोपनीयता के श्पथ-ग्रहण के पश्चात् समस्त विधायकों एवं मंत्रिपरिषद् की पहली बैठक में नीतीश कुमार ने जिस लहजे में संबोधित किया उससे बिहार को प्रगतिपथ पर और आगे ले जाने का उनका संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति स्पष्ट नजर आती है। जैसा कि नीतीशजी ने चुनाव प्रचार के दौरान बार-बार वादा किया है, भ्रष्टाचार उन्मूलन और भूमि सुधार के लिए उन्हें अपने कार्यकाल में जूझना होगा। इस बार उन्हें नौकरशाही में भ्रश्टाचार को आईना दिखाना होगा। नीतीशजी को साबित करना होगा कि वे अपने वादे के पक्के हैं और जिस मकान की नींव उन्होंने डाली है उसे अपनी कारीगरी से ऊँचाई तक पहुँचाएँगे।

वैसे भी राजग को मिले प्रचंड बहुमत के बाद भयमुक्त समाज की वजह से निवेशकों में एक नई आशा जगी है। अब बिहार में निवेश का प्रस्ताव खाली नहीं जाएगा, बल्कि निवेश हकीकत बनेगा, जैसा कि पिछले दिनों संवाददाताओं को संबोधित करते हुए एसोचैम के सेक्रेटरी जेनरल डी०एस०रावत ने कहा कि उद्योगों को बिहार की जमीन पर उतारने के लिए अप्रैल, 2011 में आयोजित इनवेस्ट मार्ट' के मेगा निवेश मेला में नामी-गिरामी उद्योगपति जुटेंगे और इसी प्रकार पाँच वर्षों में तीन इन्वेस्ट मार्ट के जरिए इस राज्य में साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए निवेश के प्रस्ताव अनुमानित हैं। इस प्रस्ताव से बिहार इंडस्ट्रीज एशोसियेसन और बिहार चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से मिलकर उन्हें अगले पाँच वर्षों की योजना से अवगत करा दिए हैं। उद्योग एवं कल-कारखाने स्थापित करने के लिए राज्य सरकार भी भरपूर सहयोग करेगी, ऐसी उम्मीद की जाती है।

निःसंदेह नीतीश कुमार के कार्यकलापों की वजह से बिहार की जनता की सोच भी बदल रही है। आखिर तभी तो बिहार विधान सभा के इस चुनावों में मुसलमानों ने भाजपा से जद (यू) गठबंधन रहने के बावजूद अपने को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले काँग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल जैसे राजनीतिक दलों को तवज्ज़ो नहीं दी। बिहार में पहली बार समुदाय और संप्रदाय की राजनीति इस राज्य को रास आई। आपने देखा नहीं भाजपा से भी मुस्लिम उम्मीदवार इस बार जीत कर विधान सभा में आए और भाजपा के 91 उम्मीदवारों ने जीत हासिल की। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि घपले-घोटालों से दूर साफ-सुथरी धर्मनिरपेक्ष और

गंभीर छविवाले नीतीश कुमार के जद (यू) के साथ गठबंधन का ही यह परिणाम निकला कि भाजपा पाँच सालों में ही अपनी सीटों को 55 से बढ़ाकर 91 करने में कामयाब रही। यह इस बात का द्योतक है कि बिहार के मतदाताओं ने जाति और मजहब को दरकिनार कर मतदान किया। आप इसे मानें या न मानें मुझे तो ऐसा लगता है कि नीतीश कुमार ने नरेन्द्र मोदी और वरुण गाँधी को बिहार विधान सभा के इस चुनाव में प्रचार करने में बाधा उपस्थित कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया और इसे भाजपा के वरिष्ठ राजनेताओं की अच्छी समझ भी कही जाएगी। बिहार का प्रौढ़ प्रजातंत्र रिश्ते को कई तरह से परख रहा है। पूरा बिहार राजनीतिक मॉडलों का विचित्र प्रयोगशाला है। राजनीतिक स्थिरता विकास की गारंटी है इसे बिहार के इस चुनाव ने दर्शाया है। गठजोड़ की इस सरकार ने उम्मीदें जगाई हैं। इसलिए देश राजनीतिक दलों और उसके नेताओं को इस राजनीति के नए अखाड़े में उतरना ही होगा। पुरानी सियासत के सामने विकास की राजनीति पेश करने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं रह गया है। बिहार के इस चुनाव ने इस लिहाज से पूरे मुल्क को एक नई रोशनी दिखाई है जिस पर चलना राजनीतिक दलों की अब मजबूरी है। उन्हें आत्मंथन करना ही होगा।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि नाउम्मीदी के वक्त बिहार के चुनाव नतीजे एक सुखद झोंके की तरह आए और उसने राजनीति को झकझोरा ही नहीं, नए सिरे से सोचने को विवश किया। बिहार के चुनाव ने लालू-पासवान का राजनीतिक कद एक झटके में छोटा कर दिया और दोनों के दंभ और बड़बोलपन उन्हें अर्श से फर्श पर ला दिया। आखिंर राबड़ी देवी का दोनों जगहों से हार का क्या मतलब? दरअसल, राजनीति में भरोसे और विश्वास को खोकर जीवित नहीं रहा जा सकता। कोई भी राजनीतिक दल परिवार, वंश और जाति के संकीर्ण घेरे में एक लंबे अरसे तक नहीं रह सकता, यह रामविलास जी के दोनों भाइयों और दोनों दामादों की हार ने साबित कर दिया है। इसी प्रकार अपने को जाति का कद्दावर नेता समझने वाले नागमणिजी को इस चुनाव में मतदाताओं ने उनकी हैसियत बता दी है। इस दृष्टिकोण से चुनाव-परिणाम एक सामूहिक निर्णय है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम होगी। नीतीश सरकार के कार्यकलापों तथा इस चुनाव के नतीजे को देखते हुए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, जिनका 29 नवंबर को पाँच साल का कार्यकाल समाप्त हुआ ने भी नीतीश सरकार के कार्यों की प्रशंसा की है और कहा कि वर्तमान दौर में जनता व्यवस्थित विकास और बेहतर कानून-व्यवस्था चाहती है।

बिहार में बनी राजग सरकार अपने दूसरे कार्यकाल में जनता की उम्मीदों और अपेक्षाओं के प्रति गंभीर इस मायने में दिखती है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जहाँ पद संभालते ही अधिकारियों को साफ-साफ संदेश दिया कि जनता को छोटी-छोटी चीजों के लिए कतई परेशान न किया जाए। जिसके लिए उन्होंने सेवा का अधिकार (राइट टू सर्विस) विधेयक लाने की बात कही, वहीं उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए मुखिया से लेकर ऊपर तक के अधिकारियों की कारगुजारियों पर नजर रखने के लिए लोकपाल का गठन करने का फैसला लिया। लोकपाल की नियुक्ति मार्च, 2011 तक कर ली जाएगी। यही नहीं प्रायः सभी विभागों के मंत्रियों ने अपने-अपने विभागों के कार्यों को मुस्तैदी से निभाने तथा पारदर्शिता लाने का दावा किया। वैसे तो यह समय बताएगा कि उनके दावे कितने सही उतरते हैं, पर इतना जरूर है कि 2010 का बिहार विधानसभा चुनाव वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह से बदल देने की प्रक्रिया की शुरुआत है और इस चुनाव परिणाम ने जनता की प्राथमिकता में निर्णायक बदलाव लाया है और जनता की जागरूकता को देखते हुए सत्ता पर काबिज़ मंत्री भी अपने काम में शिथिलता से बचना चाहेंगे। राजनीतिक फैसले भी अब जनता के बीच से होने वाले हैं।

बिहार में संपन्न चुनाव के नतीजे ने राजनीति के विकेंद्रीकरण के लिए ऐसी भय और आतंक मुक्त जमीन तैयार कर दी है जो आने वाले वर्षों में अन्य राज्यों और नई दिल्ली में भी सत्ता के समीकरणों और स्थापित मान्यताओं को बदल कर रख देगी। बिहार की राजनीति को गलत दिशा में ले जाकर उसे निरंतर अल्प विकसित रखने वाले राजनीतिक दलों की सोच को बिहार की जनता ने नकार दिया है। बिहार एवं देश के लिए यह अच्छा संकेत है। निःसंदेह पिछड़े प्रदेश के कलंक को मिटा देने और अपने गौरवशाली अतीत को याद कर नया इतिहास लिखने का ज़ज्बा व जोश बिहारवासियों में जगा देने की रणनीति में नीतीश कुमार काफी हदतक सफल रहे हैं। जाहिर है नीतीश जी अपनी स्वच्छ छवि को बरकरार रखने के लिए अपने मंत्रियों को चैन की नींद नहीं सोने देंगे और इस राज्य का न्याय के साथ समावेशी विकास कर वह अपनी छवि में भी चार चाँद लगाने से बाज नहीं आएँगे। बधाई स्वीकारें। हमारी शुभकामना सदैव उनके साथ है।

▶ अध्यक्ष, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना।

महिलाएँ एवं बदलते पारिवारिक प्रतिमान

❒ अनामिका

हमारे भारतीय समाज में परिवार को अत्यधिक महत्वपूर्ण समूह तथा समाज की बुनियादी इकाई माना जाता है। परिवार प्रत्येक समाज व संस्कृतियों में पाया जाता है। किसी भी परिवार का आधार प्रेम, सहयोग, त्याग एवं श्रद्धा आदि होता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। परिवार में ही बच्चों को पाला जाता है, अर्थात् उनका समाजीकरण होता है। परिवार ही व्यक्ति को व्यक्तित्त्व प्रदान करता है। हम किसी न किसी रूप में परिवार के सदस्य हैं चाहे परिवार में जन्म लेकर या बच्चों को जन्म देकर। समाज के अस्तित्व की रक्षा करने वाले इन सभी कार्यों को पूरा करने का दायित्व परिवार का ही है। स्पष्ट है कि परिवार जीवन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। परिवार मनुष्य का ऐसा समूह है जो असभ्य समाज में लेकर सभ्य समाज तक में पाया जाता है। प्रत्येक स्थान की आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने अनेक प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था **(Family system)** को जन्म दिया जैसे संयुक्त परिवार **(Joint Family)** अर्द्धसंयुक्त परिवार एवं एकाकी परिवार।

आजकल परिवार नामक संस्था का विघटन होता जा रहा है। आज के आधुनिक परिवार के सदस्यों के बीच ईर्ष्या, द्वेष, एवं घृणा इत्यादि में वृद्धि देखने को मिल रही है। पारिवारिक जीवन को नगरीकरण एवं उद्योगीकरण ने भी कई प्रकार से प्रभावित किया है। नगरीकरण, संयुक्त परिवारों का विघटन, गृह और कुटीर उद्योगों का पतन, गंदी-बस्तियों का विकास, बाल और युवा अपराध, सामुदायिक भावना का   , व्यक्तिवादिता आदि उद्योगीकरण के ही परिणाम हैं। भारत में उद्योगीकरण एवं नगरीकरण के साथ ही इन परिवारों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। यह परिवार वे हैं जो नगरों में स्थित हैं तथा जहाँ सदस्यों के बीच अधिक स्वंतत्रता, समतावादी तथा हित-प्रधान संबंधों की अधिकता होती है। नगरीय परिवार छोटे होने के कारण उनमें सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता अधिक पायी जाती है।

परिवार की प्रकृति में संयुक्त परिवार अर्द्ध संयुक्त और एकाकी परिवार आते हैं। एक सर्वेक्षण में 55 प्रतिशत महिलाओं ने संयुक्त परिवार, 12 प्रतिशत ने अर्द्ध संयुक्त परिवार, 33% महिलाओं ने एकांकी परिवार को अपनी पंसद बताया है। अधिकांश लोगों का मानना यह है कि संयुक्त परिवार में सहयोग एवं समर्पण की भावना तथा बड़े-बुजुर्गों के होने से बच्चों का समाजीकरण सही तरीके से हो पाता है। संयुक्त परिवार में बच्चों यानी किशोर-किशोरियों को बहकने का अवसर नहीं मिलता क्योंकि घर के बड़े उन्हें हमेशा उचित शिक्षा देते रहते हैं। मान और मर्यादा का ज्ञान भी हमेशा ही उन्हें दिया जाता है।

33% महिलाओं का मानना है कि आज की वर्तमान स्थिति और परिस्थिति को देखते हुए एकाकी परिवार ही आज अधिक संभव है। एकाकी परिवारी बच्चों के विकास में सहायक सिद्ध होता है। बच्चों का पालन-पोषण भी एकाकी परिवार में बेहतर ढंग से संभव है। 96% महिलाएं संयुक्त परिवार को समाज का **Social Insurance** मानती हैं।

उपरोक्त सभी कथनों को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आज के वर्तमान समाज में संयुक्त परिवार का महत्व पहले से कहीं ज्यादा है, क्योंकि लोगों में आज व्यक्तित्व के विघटन होने से समाज की नींव चरमरा गयी है। लोगों का नैतिक पतन होने से समाज का भी पतन हो रहा है। अतः हमें मानकर चलना चाहिए कि प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार भारतीय समाज का स्तंभ रहा है और आगे भी ऐसा ही रहने में समाज का हित है।

◗ चिरैयाटाड़, खास महल, देवी स्थान लेन, पटना, बिहार

हम उसी पथ के पथिक हैं

❒ बाबा कानपुरी

मार्ग में अवरोध पग–पग
कंटकों के जाल फैले
विषधरों के फन रुपहले
हम उसी पथ के पथिक हैं ।।
आस्था के इन पगों की
रक्तरंजित एड़ियाँ क्यों?
बढ़ न पाते, स्वार्थ की
जकड़ी हुई हैं बेड़ियाँ क्यों?
किन्तु है विश्वास मुझको
छटेंगी तम–गम की घटाएँ,
भोर से कुछ ठीक पहले।
शुष्क मत समझो रसिक हैं ।।
श्वेत हैं परिधान, उर में
कालिमा जिनके बजकती,
रेत की दीवार सी नीयत
सहज जिनकी सरकटी।
ज्वार बन उन्माद उठते
ध्वंस का अवसाद लगता
झाग के बादल विषैले
दीन, ये होकर धनिक हैं ।।

जनवादी कथाकार : बाबा नागार्जुन

❒ डॉ. मणिकान्त ठाकुर

हिंदी साहित्य के प्रख्यात प्रगतिशील रचनाकार श्री वैद्यनाथ मिश्र, जो मैथिली में 'यात्री' और हिंदी में 'नागार्जुन' के नाम से जाने जाते हैं, को कवि एवं उपन्यासकार दोनों रूपों में प्रसिद्धि प्राप्त है। ये विशेषताएँ कम रचनाकारों में पायी जाती हैं। हालाँकि उपन्यासकार के रूप में नागार्जुन की चर्चा कम हुई है और उनकी प्रसिद्धि एक सशक्त जनवादी व प्रगतिवादी कवि के रूप में अधिक है। लेकिन नागार्जुन के मिथिला को, उसकी संस्कृति ओर समाज को उनके उपन्यासों के माध्यम से ही जान सकते हैं। एक ओर उनकी कविताओं में समसामयिक भारतीय जीवन, राजनीति, समाज, साधारण जन और उनकी पीड़ा सब कुछ है तो दूसरी ओर उनके उपन्यासों द्वारा मिथिला संस्कृति व समाज के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय समाज (उत्पीड़ित और शोषित), साधारण जन, किसान और मजदूरों से सीधा साक्षात्कार होता है।

नागार्जुन का जन्म एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनका बचपन दीन–हीन कृषक कुल में बीता था। ऐसा बचपन जो आरम्भ से ही अभाव का आसव पीता आया था, प्रतिपल कठोर संघर्ष में बीता था। नागार्जुन के ही शब्दों में–

"पैदा हुआ था मैं....
दीन–हीन अपठित किसी कृषक कुल में,
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव
ठेठ बचपन से,
कवि? मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
हरा हुआ नहीं कि चरने को दौड़ते!!
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में!!"[1]

नागार्जुन का बिहार के मिथिला अंचल से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है। उन्होंने वहाँ की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं–कुरीतियों, अंधविश्वासों, विसंगतियों और अन्तर्विरोधों का न सिर्फ गहराई से अध्ययन–मनन किया है, बल्कि उन्हें अपने जीवन में भोगा भी है। अपने उपन्यासों में नागार्जुन ने उक्त समस्याओं का युगानुरूप समाधान भी प्रस्तुत किया है। उनकी जीवनानुभूति में पर्याप्त व्यापकता एवं गहराई है।

कथा–सम्राट प्रेमचंद के बाद भारतीय ग्रामीण समाज का यथार्थ एवं विशद् चित्रण करने वाले नागार्जुन पहले कथाकार हैं। यह सही है कि हिंदी में कथा–साहित्य की जनवादी परम्परा की शुरूआत भारतेन्दु यग से हुई थी, परन्तु उसे वास्तविक रूप में प्रेमचंद ने ही अपने कथा–साहित्य द्वारा पुष्ट और संवर्द्धित किया, जिसका विकास बाद के प्रगतिशील कथाकारों–यशपाल, भैरव प्रसाद गुप्त, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, जैनेन्द्र और नागार्जुन आदि में स्पष्ट दिखायी देता है। नागार्जुन ने प्रेमचंद की सही यथार्थवादी–जनवादी उपन्यास–परम्परा को आत्मसात् करके उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

नागार्जुन हिंदी के एकमात्र जनवादी रचनाकार हैं। सर्वहारा जनता, किसान, मजदूर, निम्न–मध्य वर्ग के लोग जिस भाषा को आसानी से समझते हैं उसका परिष्कृत रूप इनकी रचनाओं में दिखता है, जो ठेठ जन–जीवन और जीवन्त लोक–धर्म का संवाहक है। **"कबीर जैसा साहस, ललकार–भरे शब्द–बाण, त्याग का भाव एवं खंडन–मंडन की शक्ति से सभी विशेषताएँ नागार्जुन की शैली को मौलिक बनाती हैं।"**[2]

नागार्जुन के पास व्यंग्य वह सहज हथियार है, जिसके द्वारा वे सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों आदि पर प्रहार करते हैं।

उपन्यासकार के रूप में नागार्जुन समाज के अन्तर्गत निहित समस्याओं को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामीण जीवन के अन्तः संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदार–सामन्त और किसानों के बीच वर्ग–संघर्ष का होना स्वाभाविक है। जमींदार–सामन्त वर्ग एक ऐसा वर्ग है, जो विलासिता में आकंठ डूबा स्वयं निष्क्रिय रहता है और किसान व खेतिहर मजदूर वर्ग के श्रम पर ऐश्वर्य भरा जीवन व्यतीत करता है। नागार्जुन ने जमींदार–सामन्तों की इन प्रवृत्तियों पर करारी चोट ही नहीं की अपितु उनके शोषण और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए किसानों और खेतिहर मजदूरों को संगठित करके संघर्ष का नया रास्ता भी दिखाया है।

'बलचनमा' 'रतिनाथ की चाची' 'बाबा बटेसरनाथ', 'नयी पौध' तथा 'वरूण के बेटे' आदि उपन्यासों में बाबा नागार्जुन ने जमींदारों और किसान–मजदूरों के वर्ग–संघर्ष का व्यापक चित्रण किया है। वे शोषित–उत्पीड़ित जनता को वर्गीय आधार पर संगठित कर उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत करते हैं। यहाँ विजयदेव नारायण साही के शब्दों में कहें तो..... **"बाबा (नागार्जुन) का अजब तरह का कलेजा है जो आहतों–पीड़ितों का सिर सहलाने के लिए हमेशा तैयार रहता है, भले ही क्षुब्ध घायल लोग उसी हाथ को काट खायें जो कि बाबा के साथ हुआ भी।"**[3]

भारत का ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत आज भी पिछड़ा हुआ है और सामन्ती अवशेषों के रूप में उसमें रूढ़िवादी प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं। यहाँ किसानों की समस्याओं के अतिरिक्त सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या नारी–समस्या है। भारतीय समाज में विधवा समस्या, बाल–विवाह, अनमेल विवाह, बहुपत्नी प्रथा तथा वैश्यावृत्ति आदि अनेक कुप्रथाएँ आज भी जीवित हैं। उत्पीड़न का सर्वाधिक शिकार नारी ही है। इसलिए नागार्जुन चाहते हैं कि समाज की जर्जर रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए भारतीय नारी आत्मसम्मान का जीवन व्यतीत करे, इसलिए

उन्होंने नारी–शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया, क्योंकि भारतीय नारी आधुनिक शिक्षा के अभाव में न तो समानता और स्वतंत्रता जैसे सामाजिक अधिकारों को प्राप्त कर सकती है और न ही आत्मनिर्भर होकर आत्मसम्मान का जीवन जी सकती है। बाबा के उपन्यासों में नारियाँ जर्जर, रूढ़िवादी, परम्परावादी समाज से अपनी मुक्ति के लिए निरन्तर संघर्ष करती दिखाई देती हैं और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर स्वालम्बन भरा जीवन जीना चाहती हैं।

'रतिनाथ की चाची' की गौरी, 'वरूण के बेटे' की मधुरी, 'उग्रतारा' की उगनी, 'कुम्भीपाक' की निर्मला, 'नयी पौध' की विसेसरी आदि नारियाँ अपने अधिकारों के प्रति सचेत ही नहीं हैं अपितु उनके लिए संघर्ष भी करती हैं और अपने उद्देश्य में सफल होती हैं।

बाबा नागार्जुन को दृढ़ विश्वास है कि एक दिन भारतीय नारी समाज की जर्जर रूढ़ मान्यताओं को तोड़कर स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का जीवन जी सकेगी, जो आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अति प्रासंगिक है।

नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य का सर्वथा अभाव रहा है। कुछ विद्वान उन्हें मार्क्सवादी, कुछ साम्यवादी, कुछ प्रगतिवादी तो कुछ जनवादी कहते हैं, किन्तु वास्तविकता इस कथन से स्पष्ट है कि–

"विचारों से नागार्जुन साम्यवादी हैं। दूसरी ओर उनके विचार मार्क्सवाद के समानान्तर और कहीं–कहीं उसे छोड़कर अग्रसर हुए हैं। मार्क्सवाद का उन पर प्रभाव अवश्य है पर वे शुद्ध रूप से मार्क्सवादी हैं, इसे हम स्वीकार नहीं कर सकते।"[4]

डॉ. रामविलास शर्मा ओर चन्द्रबली सिंह सम्मिलित रूप से स्वीकारते हैं कि.....

"हर मार्क्सवादी लेखक जनवादी लेखक है, किन्तु हर जनवादी लेखक मार्क्सवादी नहीं है। यह स्थिति हमारे देश की परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होती रहती है।"[5]

उक्त कथनों से स्पष्ट है कि मार्क्सवाद में आस्था रखनेवाला लेखक जनवादी अवश्य ही होगा। अतः नागार्जुन ऐसे ही कथाकार हैं। वास्तविकता यह है कि वे एक प्रतिबद्ध कथाकार हैं। उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता भारतवर्ष की 80 प्रतिशत श्रमजीवी जनता जनार्दन के प्रति है। उनका जीवन और साहित्य शोषित–उतपीड़ित किसान–मजदूरों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए समर्पित है और लक्ष्य वर्गहीन समाज की स्थापना है।

इस प्रकार जनवादी कथाकार नागार्जुन के उपन्यास का मुख्य स्वर साम्राज्यवाद अथवा सामान्तवाद के विरुद्ध है। उनका दृढ़ विश्वास है कि भारत की श्रमजीवी जनता अपने जीवन संघर्ष के द्वारा इस शोषणकारी पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर वर्गहीन समाज अर्थात् सर्वहारा वर्ग की स्थापना करने में अवश्य ही सफल होगी।

संदर्भ :–

1. (रविन्द्रनाथ ठाकुर पर लिखी गई कविता से उद्धृत) नागार्जुन रचना संचयन–भूमिका, राजेश जोशी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली–2005, पृ. 11

2. भूमिजा–नागार्जुन (सम्पादन– सोमदेव / शोभाकान्त), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994, पृ.– 10

3. 'अछूत कन्या और नागार्जुन' :– स्मृतिलेख, सुरेन्द्र तिवारी, सहारा समय, सप्ताहिक, जून 2003

4. नागार्जुन : जीवन और साहित्य– डॉ. प्रकाशचन्द्र भट्ट, सेवासदन प्रकाशन, म.प्र., 1974, पृ., 295

5. नागार्जुन का कथा–साहित्य, तेज सिंह, पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1993, पृ.–18

◗ डी–50, सेक्टर–9, न्यू विजय नगर, ग़ाज़ियाबाद

मुक्तिपर्व का गीत

(जनकवि नागार्जुन के लिए)

❑ वरूण कुमार तिवारी

अंधेरी सुरंग से
मुक्तिपर्व का गीत गाकर
भूख को धर्म
देवता और दारूण व्यथा बताकर
भूखों के अगणित सपनों को
आकृति देकर
झुकी पीठ को देकर स्पर्श
हथेली का
रग–रग में बिजली दौड़ाए
फटी बिवाइयो वाले खुरदरे पैर को
दुधिया निगाहों से निहारकर
पुरानी जूतियों का कोरस गाए
प्रश्नों को अस्त्र बनाकर
जयदेव–विद्यापति की थाती संजोकर
अस्तित्व की लड़ाई में आगे आए
छोटी सी नैया लेकर
चले उतरने पार उदधि
मिथिला के महारथी!
हुए नहीं महिमामंडितों से परास्त
श्रम से जीवन की शुरूआत
श्रमिक से
सृजन में संवाद
अंत–अंत तक झुके नहीं, टूटे नहीं
शब्द और संवेदना
दोनों स्तरों पर बने रहे
आम जन के कवि।

◗ स्टेट बैंक कॉलोनी, वीरपुर–854340, सुपौल, बिहार

राष्ट्रभाषा की महत्ता एवं हिंदी

❑ डॉ. हेमवती शर्मा

अपने भावों एवं विचारों के विनिमय के मौखिक माध्यम को हम भाषा कहते हैं। श्री शैलेश मटियानी का मत है कि "भाषा के बूते ही आदमी इस भौतिक जगत् का एकमात्र नामधारी है।"

भाषा की महत्ता के संदर्भ में दक्षिण भारतीय विदुषी प्राध्यापिका (श्रीमती) सुवर्णाबाई रंजनगी (विवरण-पत्रिका, जनवरी-1997 अंक, पृष्ठ 2) की यह मान्यता भी साधार है कि-"भाषा हमारी माँ है। वह साँस्कृतिक शरीर को रचती है और उसका पोषण करती है।

भाषा के लक्षण एवं महत्त्व के बारे में अवगति देने के बाद अब हम 'राष्ट्रभाषा' के स्वरूप को शब्द देने का विनम्र प्रयास करेंगें।

राष्ट्रभाषा वस्तुत: उस भाषा को कहते हैं जिसे राष्ट्र की अधिकांश जनता बोलती है, समझती है तथा अपने दैनिक व्यवहार का रूप प्रदान करती है। राष्ट्रभाषा को हम व्यक्ति के मानसिक विकास का मूलाधार कह सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की मान्यता रही है कि- "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।" राष्ट्रभाषा वस्तुत: राष्ट्रीय जीवन का आदर्श होती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी भारतवासी जाति धर्म, वर्ग तथा प्रान्त आदि संकुचित-संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर, अपने देश के 'मंगल' को ध्यान में रखते हुए, इस बात पर विचार-विमर्श करें कि उन्हें राष्ट्रीय भाषाई स्वाभिमान प्रिय है अथवा विलायती भाषा (अंगरेज़ी) की मानसिक दासता?

हिन्दी निश्चय ही भारत के अन्तस की भाषा है। उसमें भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का स्वर निहित है। डॉ. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र का मत है कि- "हिन्दी में साँस्कृतिक एकता की अनूठी शक्ति निहित है। हिन्दी और भारतीय संस्कृति पर्याय हो गए हैं। प्रकृति को विकृति बनाने में देर नहीं लगती, किन्तु उसे संस्कृति बनाने में समय लगता है।"

महात्मा गाँधी तथा राजा राममोहन राय ने दक्षिणी भारत में जन-जागरण की लहर भी 'हिन्दी' के सशक्त माध्यम से ही फैलाई थी। इन दोनों नेताओं ने दक्षिण (मद्रास अब चेन्नई: तमिलनाडु) में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सन् 1918 ई. में 'दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा' की स्थापना की। 'राष्ट्र भाषा प्रचार-समिति, वर्धा (महाराष्ट्र), की स्थापना भी सन् 1936 में गाँधी जी ने की थी। वे इसके अध्यक्ष भी रहे थे। 'राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा (महाराष्ट्र) से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की मासिक पत्रिका नियमित रूप से निकलती है।

आज 'देश-भक्ति' का युग है। भारत का भारतीयकरण होना चाहिए-हिन्दीकरण होना चाहिए। दुर्भाग्य की बात है कि "पब्लिक विद्यालयों' की अधिकता के कारण आज भारत का अँगरीजकरण हो गया है, ये संस्थाऐं भारत में सांस्कृतिक प्रदूषण फैला रही हैं।

अब हम कुछ यशस्वी विचारकों के हिन्दी की महत्ता संबंधी मत देते हुए इस प्रसंग का समापन करना चाहते हैं- (1) "हिन्दी के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती।"

-श्रद्धेय डॉ. अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)

(2) "हिन्दी के आधार पर ही भारत का अस्तित्व कायम रह सकता है।"

-डॉ. महेश चंद्र शर्मा (रीडर एवं हिन्दी-विभागाध्यक्ष: लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद उ.प्र.)

(3) "हिन्दी आधुनिक भारत की प्रतिनिधि भाषा है और भारत के राष्ट्रीय साँस्कृतिक जीवन का अध्ययन करने के लिए उसका महत्त्व सबसे अधिक है।"

-डॉ. नगेन्द्र नगाइच।

(पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय)

हमारी यह मान्यता है कि जहाँ हिन्दी है, वहाँ नागरी है और जहाँ नागरी है, वहाँ हिन्दी है। इसका अभिप्राय यह है कि हम हिन्दी और नागरी को अलग-अलग करके नहीं देख सकते। भाषाविद एवं भाषावैज्ञानिक डॉ. देवी सिंह चौहान ('नागरी-संगम') (त्रैमासिकी), जनवरी, मार्च, 1997 अंक, पृष्ठ 72) की निम्नस्थ काव्यात्मक वाणी को हमें सदैव याद रखना चाहिए "जब तक हिन्दी और नागरी, दोनों का सम्मान है। तब तक संसार में यह जीवित हिन्दुस्तान है।"

▶ एसोसिएट प्रोफेसर, भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

गज़ल

❑ आज़ाद कानपुरी,

किसी से कोई वास्ता रह गया क्या?
अभी देखते जाओ होता है क्या-क्या?
भँवर में हमने खुद ही लाई है कश्ती
निकलने का कोई बचा रास्ता क्या ?
कोई हौसला देने वाला नहीं है
इबादत नहीं की, फलेगी दुआ क्या ?
वफ़ादारी कब तक निभायेगा कोई
वफ़ा करने वालों को आख़िर मिला क्या?
हमेशा ही बचकर निकल जाते जब तुम
बताओ तुम्हीं, आइना बोलता क्या?
किसी के कोई काम आता नहीं है
किसे क्या कहें हम, बुरा क्या भला क्या?
बहुत बार 'आज़ाद' समझाया हमने
मगर दुनिया वालों ने ऐसा किया क्या?

▶ एलआईजी-1144, आवास विकास-3, कानपुर-208017

बच्चन जी की जन्मशती पर विशेष...

भारतीय समाज में मनुष्य की जातिगत स्थिति और 'बच्चन'

❑ डॉ. राज शेखर

भारतीय समाज में मनुष्य की जातिगत स्थिति का वर्णन करते हुए एक ओर जहाँ बच्चन अपनी कायस्थ जाति का वर्णन करते हुए गौरव का अनुभव करते हैं, वहीं अपने जीवन में घटित कई प्रसंगों में कायस्थ जाति को लेकर दुखी भी होते हैं एवं इस जाति की बुराई करने से भी नहीं चूकते। जाति.व्यवस्था समाज को किस प्रकार खोखला कर रही है, इस पर उन्होंने अपनी आत्मकथा में चर्चा की है। उन्होंने भारतीय समाज की उन कथित छोटी जातियों का आस्थामूलक चित्रण अपने जीवन के साथ जोड़कर भाव संवेदना के धरातल पर नयी जीवतंता के साथ किया है, जो हमेशा से उपेक्षित रहे हैं। उन्होंने धर्म संबंधी आडंबरों पर भी प्रश्नचिह्न लगाया है। वे मंदिरों पर हो रहे जातिगत भेदभाव को पसंद नहीं करते थे। उन्होंने मानवता को उच्च स्थान देकर जाति, धर्म आदि को सिरे से नकार दिया।

उनकी माँ के लड़के पैदा होने के बाद जीते नहीं थे। उनकी माँ को गाँव के लोगों ने सलाह दी थी कि जब लड़का पैदा हो तो उसे किसी चमारिन–धमारिन के यहाँ बेच देना और उसे पराया समझकर पालना। बच्चन के पैदा होते ही उनकी माँ ने उन्हें लक्षमिनिया चमारिन के यहाँ बेच दिया था: **"मैं पैदा हुआ तो मेरी माँ ने पाँच पैसे में मुझे लक्षमिनिया चमारिन के हाथों बेच दिया और उनके बतासे मँगाकर खा लिए। कहते हैं, साल.भर पहले लक्षमिनिया का एकमात्र लड़का कुछ महीने का होकर गुजर गया था और उसका दूध सूख गया था, पर जैसे ही उसने मुझे अपनी गोद में लिया उसकी छाती कहराई और उसने बारह दिन तक मुझे अपना दूध पिलाया।"**[1]

बच्चन बचपन से ही लक्षमिनिया को चमारिन अम्मा या चम्मा कहते थे। लगता है कि वे चमारिन अम्मा का दूध पीने के कारण ही जाति विभेद से ऊपर उठ गये थे। साथ ही, उन पर अच्छे संस्कारों का भी प्रभाव था। गाँधी जी से वे बहुत प्रभावित थे और अपने यौवनकाल से ही उनके सिद्धांतों को स्वीकारते थे। वे आर्यसमाज के अछूतोद्धार और गाँधीजी के हरिजन आंदोलन के समर्थक थे। उन्होंने अछूतों की पंगत में बैठकर भोज खाने से भी परहेज नहीं किया। इस संबंध में उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि, **"मुझे तो इस बात का गर्व होता था कि मेरी तो एक माँ ही चमारिन चम्मा थी, और जब एक दिन शायद नगर के आर्यसमाज में आयोजित किसी प्रीतिभोज में मैंने अछूतों की पंगत में बैठकर कच्चा खाना खा लिया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता और संतोष का अनुभव हुआ, और मुझे लगा कि मैंने चम्मा की बिरादरी के साथ कुछ न्याय किया; पर मेरे संबंधियों और नातेदारों को यह खबर बड़ी नागवार गुजरी और उन्होंने व्यंग्य से कहा कि आखिर इसने चमारिन की छाती का दूध पिया था, उस कुसंस्कार का कुछ असर होना ही था। यह संस्कार का प्रभाव था, कि देश के समाजसुधारक नेताओं के उपदेशों का, कि मेरे अपने ही मानवतावादी उदार विचारों का, कि मेरे मन से बहुत पहले ही अछूतों को अछूत समझने की बात बिलकुल उठ गई थी। जब स्वतंत्र रूप से मेरा अपना घर हुआ तो अक्सर चमार ही मेरे खाना बनाने वाले रहे।।"**[2]

बच्चन छूत–अछूत से ऊपर उठ गये थे। उनके परिवार को कायस्थ बिरादरी से निकाले जाने की घटना भी रोचक है। घटना है मोहतशिमगंज की। एक कायस्थ परिवार का मुखिया इस दुनिया से चल बसा। बाहर से आए एक सिख सरदार ने इस परिवार को आश्रय दिया। कुछ दिन बाद वह सरदार भी चल बसा। परिवार समाज बहिष्कृत हो गया। उस परिवार की लड़की का विवाह एक अच्छे कायस्थ परिवार में तय हो गया। शर्त यह रखी गयी कि भोज के समय कुछ कायस्थ परिवार के सदस्य आकर भोजन ग्रहण करें। बच्चन ने इस परिवार की शादी में जाकर भोजन कर इस परिवार का उद्धार किया। जब बच्चन के यहाँ बहू–भोज हुआ तो कोई भी खाना खाने नहीं आया। इसमें उनके चाचा मोहन भी थे। बच्चन इससे बहुत दुखी हुए .

"हमारे यहाँ खाना खाने इसलिए नहीं आये थे कि मैंने बहिष्कृत परिवार में भोजन कर लिया था। मेरे हरिजनों के साथ खाने–पीने की बात वे जानते ही थे; और उन्होंने हमारे सब निकट संबंधियों को आगाह कर दिया था कि जो हमारे यहाँ भोजन करेगा वह जाति च्युत कर दिया जाएगा। इसी डर से कोई हमारे यहाँ नहीं आया था। मुझे बड़ा क्रोध आया। निमंत्रण न स्वीकार करना मैं समझ सकता था। न आना था तो सूचित करने की भलमंसी तो दिखानी थी, पर वे तो हमें अपमानित करना चाहते थे। पिताजी बहुत ही दुखी हुए – बिरादरी से कट जाने के भय से वे काँप उठे, अभी उनकी एक लड़की ब्याहने को थी। मैंने पिताजी को समझाया कि हमें बिरादरी ने छोड़ दिया है तो अब हम मानव.परिवार के सदस्य हैं। मुझे हिंदू समाज का सारा ढाँचा इतना रुग्ण, सड़ा, गला, दुर्गन्धित इससे पहले कभी नहीं लगा।"[3] उनकी जाति संबंधी यही भावना मधुशाला में इन

पंक्तियों में अभिव्यक्त हुई है .

"कभी नहीं सुन पड़ता, 'इसने,
हा, छू दी मेरी हाला',
कभी न कोई कहता, 'उसने
जूठा कर डाला प्याला';
सभी जाति के लोग यहाँ पर
साथ बैठकर पीते हैं;
सौ सुधारकों का करती है
काम अकेली मधुशाला।"[4]

मनुष्य की जातिगत स्थिति संबंधी अनुभूति बच्चन को पुनः एक बार हुई, जब उनका विवाह तेजी के साथ हुआ। तेजी तो जाति–धर्म से बाहर की लड़की थी। ऐसे में तो उनकी बिरादरी वाले नाखुश होते ही। बच्चन ने 'एट होम' के समय की स्थितियों का वर्णन इस प्रकार किया है कि, "मैंने अपने निकट संबंधियों, मित्रों और अंग्रेजी विभाग और युनिवर्सिटी के परिचित सहयोगियों को आमंत्रित किया था। जैसा प्रत्याशित था और मेरे संबंधियों ने 'ऐट होम' का बाईकाट किया था; कारण अज्ञात न था। जाति–बिरादरी के बाहर खाने–पीने पर ही उन्होंने मेरे विचार को बहिष्कृत कर दिया था; अब तो एक कदम आगे बढ़कर मैंने जाति–धर्म से बाहर की लड़की से शादी कर ली थी। इस पर उनके क्रोध का पारा तीव्रतम बिंदु पर पहुँच गया था, और मैंने यह पहले से जान लिया था कि अपने इस काम से बिरादरी से पूरी तरह काट दिया जाऊँगा। ऐसी पिछड़ बुद्धि बिरादरी से मैं खुद कटना चाहता था। वह मेरे विकास में सहायक किसी तरह नहीं हो सकती थी; बाधा कदम–कदम पर खड़ी कर सकती थी। मेरी दृष्टि में बिरादरी की संस्था अपना जीवन जी चुकी थी। भविष्य में मनुष्य का संबंध घर–परिवार के सदस्यों और कुछ मित्रों तक सीमित रहने को था, इसे मैंने देख लिया था। मेरे मित्रों और सहयोगियों ने पधारकर और अपनी शुभकामनाएँ देकर हमें कृतार्थ कर दिया।"[5]

यह तो है बच्चन का अपनी बिरादरी के प्रति आक्रोश। जो सही भी है क्योंकि बिरादरी वालों ने उनके साथ अच्छा सलूक नहीं किया था। इसके इतर हम देखें तो बच्चन में अपनी जाति के प्रति गर्व की भी भावना थी। उन्होंने अपनी आत्मकथा के प्रथम खंड में कायस्थ जाति के गौरवान्वित इतिहास का विस्तार से वर्णन किया है। जब भी उनकी टकराहट किसी दूसरी जाति के लोगों से हुई, वे भी तन कर खड़े हो गये हैं कि 'मैं कायस्थ जाति का हूँ'।

इसी भावना से उन्होंने अपनी आत्मकथा में ऐसे कई महान पुरुषों के नाम गिनाए जो कायस्थ जाति से संबंधित थे। जैसे – स्वामी विवेकानंद, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, वृन्दावनलाल वर्मा, धीरेन्द्र वर्मा, भगवती चरण वर्मा, रामकुमार वर्मा, महादेवी वर्मा आदि। उन्होंने लोक कथाओं के मार्फत कायस्थ जाति के वाक्‌चातुर्य और बुद्धि–कौशल का वर्णन भी किया है। उन्होंने कायस्थ की प्रतिद्वंद्वता ब्राह्मणों से इस प्रकार बतलाई है: "विद्या, ज्ञान, चिंतन और बुद्धि–कुशाग्रता में ब्राह्मणों ने कायस्थों में अपना प्रतिद्वन्द्वी पाया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इससे निश्चय ही पारस्परिक स्पर्धा, प्रतियोगिता और ईर्ष्या की भावना ने जन्म लिया होगा। ब्राह्मणों के बनाए हुए ऐसे बहुत से संस्कृत श्लोक प्रचलित हैं जिनमें कायस्थों की निंदा की गई है, या उन्हें गिराने का प्रयत्न किया गया है।"[6]

बच्चन को कायस्थ जाति के प्रति गर्व तो है लेकिन वह गर्व जाति के अच्छे लोगों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को लेकर है। वे जाति के रूढ़िवादी बंधनों को स्वीकार नहीं करते हैं। वे ऐसी जाति के पक्षधर नहीं हैं जो दूसरी जाति के लोगों को नीच समझे।

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी इस तरह का कार्य नहीं किया। वे लोगों के बीच सद्‌भावना पैदा करने के जीवन भर पक्षधर रहे। अमिताभ बच्चन ने इस संबंध में कहा है कि, "मुझे याद है 15 अगस्त 1947 को जब आज़ादी मिली थी तो अपने घर के सामने उन्होंने ध्वाजारोहण अपने भंगी.... नहीं.नहीं हरिजन से कराया था। भंगी, चमार ये शब्द परम्पराओं से कुछ ऐसे प्रयोग किए जाते हैं कि गाली जैसे लगते हैं। अब इन शब्दों का हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं है। बाबूजी को इसकी पहचान थी, और इसे मान्यता देते थे। गांधी जी से बहुत प्रभावित थे वे। 15 अगस्त ही नहीं होली पर भी वे सबसे पहला गुलाल घर के नौकर–चाकरों के माथे पर लगा कर उनसे गले मिलकर फिर औरों के और घर के सदस्यों के साथ रंग खेला करते थे। मैं भी अपने घर पर होली पर ऐसा ही करता हूँ। आज 'प्रतीक्षा' में जो मेरे फ्रंट आफिस का रिसेप्शनिस्ट है वह मेरे घर के सफाई कर्मचारी का बेटा है।"[7]

वास्तव में समाज के स्वरूप को जातिगत भेदभाव खराब करता है। जातिगत भेदभाव लोगों के बीच कटुता और वैमनस्यता का भाव भरता है। यह भाव स्वस्थ समाज के विकास के लिए कदापि उचित नहीं है। छोटी–छोटी बातों पर भेदभाव अंत में समाज को खोखला ही करता है। इस तरह की स्थिति के लिए जहाँ हम लोग स्वयं जिम्मेदार हैं, वहीं सत्ता के लोभी राजनीतिज्ञ लोग भी कम जिम्मेवार नहीं हैं। बच्चन ने अपनी आत्मकथा में देश की जातिगत स्थिति और राजनीति को लेकर वर्णन किया है: "आज किसी राजपूत स्कूल में किसी अराजपूत हेडमास्टर की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी अग्रवाल स्कूल में तृतीय श्रेणी के अग्रवाल को नियुक्त किया जाएगा, किसी प्रथम श्रेणी के कायस्थ अथवा ब्राह्मण को नहीं। ऐसी संकीर्णता देश के लिए एक भीषण रोग है। सरकार चाहती तो इसे दूर कर सकती थी, पर जो सरकार अपने चुनाव तक इन्हीं आधारों पर लड़ती है उससे क्या आशा की जा सकती है। इतिहास का व्यंग्य तो यह है कि यही सरकार अपने को संप्रदाय–निरपेक्ष प्रजातंत्र घोषित किए हुए है। राजनीतिक दलों में आज रोग से

लड़ने की प्रवृत्ति नहीं, रोग से लाभ उठाने की प्रवृत्ति है। परिणाम प्रत्यक्ष है, पार्टियाँ अपनी स्थितियाँ सुदृढ़ कर रही हैं, देश बिखरता, दुर्बल होता चला जा रहा है।"[8]

बच्चन का जन्म उस युग और परिवेश में हुआ था जब भारत गुलाम था। समाज अंधविश्वासों और रूढ़िगत परंपराओं पर आधारित था। समाज धर्म और जाति को लेकर संकीर्ण था। उच्च और निम्न जातियों में बहुत भेदभाव था। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों को अछूत और निकृष्ट समझते थे। इससे सामाजिक असमानता का माहौल फैला हुआ था। जातिगत व्यवस्था समाज को खोखला किए हुए थी। समाज सुधारक इसे सुधारने को प्रयत्नशील थे। महात्मा गाँधी ने निम्न जाति के लोगों को हरिजन कहा और समाज को भेदभाव से स्वतंत्र करने का प्रयास किया। कुछ सफलता भी मिली। इस जाति व्यवस्था से मुक्ति का एक तरीका बच्चन ने अपनी आत्मकथा में बताया है:

"अछूतों के साथ या उनके हाथ का खाना–पीना अथवा उनके लिए मन्दिरों का द्वार खोल देना केवल रुमानी औपचारिकताएँ अथवा प्रदर्शन हैं। समाज में उनको अपना यथोचित स्थान तभी मिलेगा जब उनमें शिक्षा का व्यापक प्रचार हो और उनका आर्थिक स्तर ऊपर उठे। साथ ही जाति की श्रृंखला को ऊपर से नीचे तक टूटना नहीं तो ढीली होना होगा। जाति की जड़, अर्थहीन और हानिकारक रूढ़ियों से निम्नवर्ग के लोग उतने ही जकड़े हैं जितने उच्च वर्ग के लोग। एक छोटा–सा कदम इस दिशा में यह उठाया जा सकता है कि लोग अपने नाम के साथ अपनी जाति का संकेत करना बंद कर दें। जिन दिनों मैं युनिवर्सिटी में अध्यापक था, मैं अपने बहुत से विद्यार्थियों को प्रेरित करता था कि वे अपने नाम के साथ अपनी जाति न जोड़ें – अपने को राम प्रसाद त्रिपाठी नहीं, केवल राम प्रसाद कहें। भारत की आज़ाद सरकार चाहती तो एक विधेयक से नाम के साथ जाति लगाना बंद करा सकती थी – कम–से–कम सरकारी काग़ज़ों से जाति का कॉलम हटा सकती थी।"[9]

इसी कारण बच्चन ने अपने नाम के साथ जाति का उपनाम नहीं लगाया। बचपन से उन्हें जो अपभ्रंश नाम 'बच्चन' दिया गया था, उसे ही अपने नाम हरिवंशराय के साथ लगाया। उन्होंने अपने बेटे और पोते.पोतियों के नाम के साथ 'बच्चन' उपनाम ही लगाया। यही 'बच्चन' उपनाम नाम और प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया।

बच्चन के बेटों ने अपनी बिरादरी और जाति से बाहर की लड़कियों से शादी की। बच्चन ने इसका कभी भी बुरा नहीं माना क्योंकि वे जातिगत रूढ़ियों से जकड़े हुए नहीं थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में इस संबंध में लिखा है: "परिवार में एक पंजाबिन थी, एक बंगालिन आई, चलो अब एक सिन्धिन आ रही है। बच्चन परिवार ऐसे ही प्रगति करता गया तो हमारी तीसरी पीढ़ी तक मराठिन, गुजरातिन, तेलगुई, कन्नड़ी, तमिली, केरली भी आ जाएँगी और तब हमारा परिवार सच्चे मानों में भारतीय परिवार कहलायेगा। अगर मुझे हिंदुस्तान का डिक्टेटर बना दिया जाए तो पहला हुक्मनामा मैं यह जारी करूँ कि भारत के किसी भी प्रांत का लड़का या लड़की अपने ही प्रांत की लड़की या लड़के से शादी न करे। इससे हमारे देश की एकता और संगठनता (गठ–बंधनता) का लक्ष्य भी जल्दी पूरा कर लिया जाएगा।"[10]

अमिताभ बच्चन ने अपने पिता की जाति संबंधी विचारधारा पर कहा है कि, "उनकी विचारधारा बड़ी डेमोक्रेटिक, फ्री और लिबरल थी। 1942 के एक कंजरवेटिव शहर इलाहाबाद में वह लाहौर जैसे आधुनिक शहर की एक सरदारनी को ब्याह कर ले आए। लेकिन सारा इलाहाबाद शहर ऐसा करे – ऐसा कभी नहीं, कहा उन्होंने। न ही उन्होंने इस बात का कभी विरोध किया कि माँ हमें गुरुवाणी का पाठ पढ़कर क्यों सुनाती है। न ही कभी इस बात का विरोध कि उनका एक पुत्र बंगाली से शादी कर रहा है, दूसरा सिंधी से। यदि वे जीवित होते तो अपने पोते का ब्याह एक दक्षिण भारतीय से होते देख अत्यंत खुश होते।"[11]

यह बच्चन की खासियत रही है कि उन्होंने जिस सामाजिक मान्यता को अपने तर्क से उचित नहीं समझा, उस सामाजिक मान्यता पर चलना स्वीकार नहीं किया। इस कारण उन्हें समाज में कई तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ीं। कभी–कभी अपमानित भी होना पड़ा। फिर भी वे अपने स्वाभिमान के साथ अपना सर ऊँचा कर खड़े रहे और जीवन से कभी हार नहीं मानी। उन्होंने जीवन की चुनौतियों को स्वीकार किया और उन पर विजय भी पायी।

संदर्भ :

1. *क्या भूलूँ क्या याद करूँ,* राजपाल एण्ड सन्ज, 2004, पृ.96
2. वही, पृ.97
3. वही, पृ.196
4. *मधुशाला,* बच्चन, राजपाल एण्ड सन्ज, 51वां संस्करण, 2004, पृ.44
5. *नीड़ का निर्माण फिर,* बच्चन, पृ.199
6. *क्या भूलूँ क्या याद करूँ,* बच्चन, पृ.15
7. *'अमिताभ की यादों में बाबू जी',* पुष्पा भारती, 'हम तुम', 'दैनिक हिंदुस्तान', 25 नवंबर, 2007
8. *नीड़ का निर्माण फिर,* बच्चन, पृ.119
9. *क्या भूलूँ क्या याद करूँ,* बच्चन, पृ.98
10. *दशद्वार से सोपान तक,* राजपाल एण्ड सन्ज, 2004, बच्चन, पृ.362
11. *'अमिताभ की यादों में बाबू जी ',* पुष्पा भारती, 'हम तुम', 'हिन्दुस्तान', 25 नवंबर, 2007

कमरा नं.–109, c/o राजवीर सिंह, मकान नं. – 200ए, मुनिरका गाँव, नई दिल्ली–110067

मेरे अनन्य मित्र गोपाल प्रसाद

❑ सिद्धेश्वर

प्रखर अधिवक्ता गोपाल प्रसाद हमारे अनन्य मित्रों में से एक थे। पटना विश्वविद्यालय के हम दोनों छात्र रहे और प्रथम वर्ष से छठे वर्ष तक एक साथ पढ़े। गोपालजी पटना कॉलेज के मिंटो और मैं उसके सटे जैक्सन छात्रावास में रहता था। प्रतिदिन संध्या समय पटना कॉलेज से गाँधी मैदान तक की पैदल यात्रा हमलोग साथ–साथ करते थे और तीसरे मित्र अर्जुन सिंह थे। आप सभी जानते हैं कि एक मित्र दूसरे मित्र के साथ अपनी भावनाएँ बाँटना चाहता है। सो हम तीनों मित्र भी अपनी–अपनी भावनाएँ बाँटा करते थे। जीवन में जितनी आपाधापी और भागदौड़ है उससे लोगों में उतना ही तनाव है जिससे राहत प्राप्ति करने का एक ही तरीका है 'इंस्टैंट मनोरंजन'। फ्रेंड्स क्लबों व टेली फ्रेंड्स क्लबों की स्थापना भी कुछ इसी वजह से की जा रही है।

आज जब हमारे अंतरंग मित्र की प्रथम पुण्य तिथि मनाई जा रही है तो उनसे जुड़ी यादें एक–एक कर मेरे मानस–पटल पर उभर रही हैं। आज ही के दिन वह हमें अकेले छोड़कर उस दुनिया में चले गए जहाँ से कोई लौटकर वापस नहीं आता है। दरअसल जीवन और मरण किसी इंसान के हाथ की बात तो होती नहीं यह तो उपरवाले के हाथ में ही है। कहा जाता है कि मनुष्य का इस पृथ्वी पर आना और उसका यहाँ से परलोक जाना भी निश्चित होता है। किसी की मृत्यु परिवार के लिए यह हादसा असहनीय तो होता ही है मित्रों, शुभेच्छुओं, सगे–संबंधियों, हितैषियों तथा आमजन के लिए भी यह दुखद होता है। मौत से विचलित होकर परिवारवाले या उनके शुभेच्छु उनकी याद और प्यार को चिरस्थाई बनाने के लिए कोई न कोई उपाय करते हैं। कोई मृत व्यक्ति की प्रतिमा लगाते हैं, तो कोई वृक्ष भी लगाते हैं। राष्ट्र के कर्णधार तथा महापुरुषों के देहावसान के बाद उनके स्मारक बनाए जाते हैं। मैंने भी अपने मित्र गोपाल जी के साथ अपने संबंधों को चिरस्थाई रखने के लिए उनके सुपुत्र संजय जी के समक्ष एक स्मृति ग्रंथ प्रकाशित करने का सुझाव रखा है जिसमें मेरा योगदान महत्त्वपूर्ण होगा, यह आश्वासन तो मैं दे ही सकता हूँ। वैसे बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष के दायित्व का निर्वहन करने में दिन–रात एक करना पड़ रहा है और मेरा अधिकतम समय उसी में जाया हो जाता है अन्यथा 'गोपाल स्मृति ग्रंथ' के प्रकाशन का भार अपने कंधें पर उठा लेता। इस स्मृति ग्रंथ के माध्यम से गोपालजी के रचनात्मक व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को आमजन के सामने लाने में सहायता मिलेगी और उनके व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन भी हो सकेगा। मेरी भी दिली इच्छा है कि जिस तीव्र संवेदनशीलता के साथ हमने उनके साथ छात्र–जीवन बिताया है और बाद के दिनों में भी अपनी समझ विकसित की है उसे कागज के पन्नों पर उड़ेला जाए, क्योंकि उस संस्मरणीय व्यक्तित्व से जुड़े अपने अनुभवों और पूर्व मिलन की स्मृतियों को मैं कहीं पीछे छोड़ना नहीं चाहता।

आज समाज में भावनाएँ अप्रासंगिक होती जा रही हैं। लोग आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं जिसकी वजह से लोगों में संवेदनाओं का दायरा सिकुड़ता जा रहा है। सहनशीलता और समरसता की कमी भी इसी वजह से होती जा रही है। वैसे तो मूल रूप से गोपाल जी एक सधे अधिवक्ता थे, किंतु नेतृत्व का गुण उन्हें राजनीति में भी खींच लाया था। वे शुरू से ही प्रगतिवादी विचारधरा के पोषक थे। इस लिहाज से देखा जाए, तो अधिवक्ता, चिंतक–विचारक एवं राजनेता इन सब गुणों का समुच्चय उनके व्यक्तित्व का आकर्षक गुण था। उनकी निष्ठा, उनके सद्विचार, उनके चिंतन, उनकी भाषा, उनकी शैली व अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण–कला सब कुछ अनुकरणीय है। सजगता और सतर्कता विचारक, चिंतक एवं प्रबुद्धजनों के आवश्यक गुण हैं जिन्हें लोकतांत्रिक कार्यकलाप की निगरानी करनी पड़ती है। इस देश के सामान्यजन के अधिकार केवल चुनावों में मतदान का प्रयोग करने तक सीमित हो गए हैं जबकि उसकी भागीदारी संपूर्ण व्यवस्था से और उसके सभी अंगों से होनी चाहिए। गोपाल जी सामान्य–जन को उन अंगों की परिचालन शैली से सदैव परिचित कराते रहते थे।

आज का दौर मूल्यों के परिवर्तन का नहीं, बल्कि उनके पतनोन्मुख होने का दौर है। नई जीवन शैली में कई अंतर्द्वंद हैं जिनसे दिग्भ्रमित होने से अधिकतर लोग नहीं बचे है, मगर हमारे मित्र गोपाल जी ने सदैव मूल्यों की राजनीति की और मूल्यों को पतनोन्मुख होने से बचाने का प्रयास किया।

जिंदगी और मौत दो बड़ी हकीकतें हैं। जो आता है, वो जाता है। लेकिन आने और जाने के बीच जो रास्ता है, वो कोई किस तरह से तय करता है, इसका महत्त्व होता है। माँ की गोद से कब्र की गोद तक एक रास्ता है, जो हर कोई अपनी–अपनी तरह से तय करता है। भाई गोपाल जी ने अपने जीवन के आने और जाने का जो रास्ता तय किया, उसके बीच की अवधि में उन्होंने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ दी। वही हमारे और आप के लिए बेशकीमती है जिसे संजोकर रखना है। बेशक जीवन तो सभी लोग जीते हैं, पर जीवन जीने का सही सलीका कम लोगों को ही मालूम होता है। मेरे मित्र गोपाल जी ऐसे ही कम लोगों में से थे, जिन्हें जीवन जीने का सही सलीका मालूम था, क्योंकि जिंदगी के थपेड़ों पर इन्होंने जीत हासिल कर ली थी। आखिर तभी तो जिंदगी के सफर में आए उतार–चढ़ाव, संकट और चुनौतियों से जूझते हुए प्रतिकूल

हालात में भी अपनी क्षमता से निपटते हुए जिंदगी की कुछ वास्तविकताओं को इन्होंने समझा और उसे स्वीकार किया। उनके व्यक्तित्व के इन्हीं गुणों से मैं प्रभावित था। रहीम के निम्न दोहे से मैं गोपाल जी की स्मृति को प्रणाम करता हूँ—

"देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन ।
लोग भरम हम पर करैं, याते नीचे नैन ।।"

◗ अध्यक्ष, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना ।

ग़ज़ल

❑ राजेश रंजन कुमार

ये जो जुल्फों के नाम है शायद
एक उलझी–सी शाम है शायद।
कल तलक हम भी थे अज़ीज़ उनके
अब रक़ीबों में नाम है शायद।
ये जो हर रोज हमपे गुजरी है
ये मुकद्दर का काम है शायद।
बात बढ़–चढ़ के कर रहा है जो
उसके हाथों में जाम है शायद।
पूछता है वो हाल रह–रहकर
आज फिर मुझसे काम है शायद।
ये जो दिखता है शिखर–सा ऊँचा
दाल–चावल का दाम है शायद।
मची है लूट देश में हर–सू
नींद में गुम अवाम है शायद।
सुबह पहली किरण जो आई है
ये खुदा का पयाम है शायद।
आज फिर दिल में एक सुकूं सा है
आज फिर दिल में राम है शायद।

◗ 3/1255, वसुंधरा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

❑ अलख नारायण झा

'स्टैच्यू' न उस पर कोई देना अब बना।
अब ये श्मशान यों ही रहने देना हरा भरा।।
अब और न कोई भूत वहाँ करना खड़ा।
वर्ना बयाँ कर देगा सब कुछ वो मकबरा।।
जहाँ रिश्ते खून के हो गए हों तार–तार।
क्या करे वहाँ जमीन पर गुलाब भरा–भरा।।
सोचा था एक फूल रोज चढ़ाऊँगा वहाँ।
अब तो हर तरफ बालू ही बालू है पसरा।।
प्यासी है तलवार जहाँ भाईयों के लिए।
मजार पर सजा दे वहाँ खून का कतरा–कतरा।।

◗ संस्कृत निर्मली, सुपौल, बिहार।

मुक्ति

❑ कुसुम नेप्सिक

आत्मा को झकझोरता;
दर्द को छूता हुआ.
फिर दूर कहीं उड़ता,
बिखरता, टूटता हुआ.
एक कराह के साथ
हृदय को भेदता हुआ
वह कहीं इस संसार में विलुप्त हो गया .
सहमी खड़ी फटी आँखों से देखती रही
फिर साहस बटोर कर
हवाओं के स्पर्श में,
सूर्य की स्वर्ण किरणों में,
उषा की अद्भुत मस्त लालिमा में उसको ढूंढा.
आखिर निराश हताश
पत्थर के वजूदों से पूछा
उत्तर पाने को व्याकुल मन
भटकता रहा, तड़पता रहा,
आह--
मुक्त हुआ मन
अब वह टूटन, बिखराव और कराह
सब कुछ पारदर्शी सा दिखने लगा
कहीं कोई चेतना, संवेदना भटकाव शेष नहीं,
अब जीने में कोई कष्ट नहीं, सब स्पष्ट है,
सब स्पष्ट है–
क्योंकि अब मैं भी उस भेड़चाल में शामिल हूँ
ना दर्द है न चुभन
ना आत्मा का चीत्कार
अब नहीं डराते ये काले अँधेरे
इन्हीं को लपेट कर सुरक्षित किया है
ओढ़ ली है निर्लज्जता की मुस्कान
अब हल्का महसूस होता है
भीतर भी -बाहर भी

◗114/205, सुदर्शन अपार्टमेंट्स,
गौतम नगर, नई दिल्ली-110049

आओ चलें बातें बनाएं

❑ देव आनंद

आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरी पर उँगली उठाएँ
खुद देर से दफ्तर आएँ, और
दूसरों को punctuality का पाठ पढ़ाएँ
सारा दिन खाली बैठकर
दूसरों को काम की importance समझाएँ।
आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरों पर उँगली उठाएँ
नेताओं, अभिनेताओं और उद्योगपतियों की जिन्दगी की
छोटी–छोटी बातों में रस लेकर, आफिस में बैठकर
सारा दिन क्रिकेट कमेंटरी सुनें, और
सरकार के नकारेपन पर उँगली उठाएँ
आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरों पर उँगली उठाएँ
बच्चों के नोट्स, किताबों और प्रश्न–पत्रों की
फोटोकॉपी आफिस की मशीन से करवाकर
सरकार में फैले भ्रष्टाचार पर आह भरें, और
देश के कर्णधारों पर उँगली उठाएँ।
आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरों पर उँगली उठाएँ
शुक्ला जी इस बार डी. ए. कितना मिलेगा,
वर्मा जी का promotion कब होगा,
20% Arrear मिलेगा भी या नहीं,
ऐसी बातें करके और अफसरों की बुराई करके
व्यर्थ में समय बिताएँ,
आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरों पर उँगली उठाएँ
आओ चलें सचिन को बैटिंग करना सिखाएँ,
धोनी को Captaincy के गुर सिखाएँ,
Short ball को कैसे खेला जाता है युवराज को बताएँ,
इण्डिया अगर मैच जीत जाए तो उसे fix बताएँ,
और अगर हार जाए तो, उन्हें निकम्मे नकारा बताएँ
आओ चलें बातें बनाएँ
आओ चलें दूसरों पर उँगली उठाएँ
जीवन में अनेक बातें ऐसी होती हैं
जिनसे हमारा सरोकार हो सकता है,
उनमें से मात्र कुछ ही ऐसी बातें होती हैं,
जिन्हें हम प्रभावित कर सकते हैं,
तो क्यों न हम अपनी ऊर्जा उन्हीं बातों पर लगाएँ
और स्वयं ही, समाज की, देश की प्रगति पर
अपना ध्यान लगाएँ
तो मित्रों, आओ चलें अपने–अपने काम पर ध्यान लगाएँ
आओ चलें देश को आगे बढ़ाएँ

◗ ई–302, मेन रोड, खजूरी कॉलोनी, दिल्ली–95

मील का पत्थर

❑ **डॉ. गोरख प्रसाद 'मस्ताना'**

तू मील का पत्थर बन ज़ाना, मैं नींव तले दब कर खुश हूँ
कोई नीला नभ लाँघें मैं, दो–चार कदम चलकर खुश हूँ
तू प्रथम रश्मि पर हो सवार
अम्बर–आँगन अंगड़ाई ले
आँचल में भर तारक हजार, सँझा से सुभग विदाई ले
मैं उदय–अस्त से मुक्त हुआ
असमय कुसमय ढल कर खुश हूँ, तू मील....।
सागर की तरंगों पर फुदकन
उल्लास का अतिशय दर्शन है,
जग, सुमन सेज पर मुस्काए, मैं काँटों में पल कर खुश हूँ, तू मील...।
था दंभ जिन्हे रवि होने का, तम एक घर का वे हर न सके
चाँदनी किसी की आँखो में, एक क्षण, एक पल, भी भर न सके
मैं टूटी ताख का दीप सही, परमारथ में जलकर खुश हूँ, तू मील...।
अपनेपन का सिद्धान्त समझते
उमर गुजरती है सारी
सम्बन्धों की पंक्ति में प्रथम,
आयी न कभी अपनी बारी
रिश्तों की आँख–मिचौली में, मैं खुद को ही छलकर खुश हूँ, तू मील...।

◗ आर जेड एच–940, (जानकी द्वारिका निवास) राजनगर पार्ट–II, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली–110045

घुन लगा मीडिया

❑ नित्यानंद गायेन

फिल्म 'सफर' में एक गीत है हम थे जिनके सहारे वे हुए न हमारे', ठीक ऐसा ही हुआ है देशवासियों के साथ। 'राडिया टेप' खुलासे के बाद। देश के जाने माने पत्रकारों की करतूतों के भंडाफोड़ से पत्रकार जगत को जो शर्मिंदगी झेलनी पड़ी है उसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता। मीडिया को लोकतंत्र का एक स्तंभ माना जाता है, किन्तु पत्रकार जब दलाल बन जाए तो लोकतंत्र की नींव हिला देता है। यह कोई पहली घटना नहीं। महाराष्ट्र विधान सभा चुनावों में भ्रष्ट मीडिया का पर्दाफाश पहले ही हो चुका है और उस पर कोई कार्यवाही भी नहीं की गई। यहां तक कि जांच कमेटी की रिपोर्ट को भी सार्वजनिक नहीं किया गया। 'समांतर' ने इस पर पहली बार प्रश्न उठाया था।

जिस तरह गेहूँ के साथ घुन भी पीसता है ठीक उसी तरह से कुछ लोभी पत्रकारों के कारनामों से ईमानदार और अच्छे पत्रकारों पर भी उँगली उठी है। लोगों का संदेह बढ़ गया है उन पर भी। शासन जब भ्रष्ट और निरंकुश हो जाता है तो ऐसे में मीडिया एक सहारा बचता है आज के इस युग में। किन्तु जब–जब वही मीडिया ही भ्रष्ट हो जाए तो क्या कहा जाए? आज लोग हर पत्रकार को बिकाऊ लगे हैं। इसमें उनका दोष नहीं है। यह अलग बात है कि इस देश की परंपरा बन चुकी है कि हम अपनी गलतियों के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं।

लोकतंत्र में मीडिया की अपनी जगह और ताकत है यदि उस पद और ताकत का सही दिशा में उपयोग किया जाए तो लोकतंत्र की छवि को बेहतर किया जा सकता है। पर वर्षो से इसका विपरीत ही हो रहा है।

ऊँची टी.आर.पी. पाने की अँधी दौड़ में देश की मीडिया भ्रमित और भ्रष्ट हो चुकी है और इसने जनता को भ्रमित करने का कार्य शुरू कर दिया है। कहा यह जाता है कि जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि, किन्तु आज मीडिया की पहुँच रवि और कवि से भी कहीं आगे निकल चुकी है और इस पहुँच का फायदा मीडिया ने भरपूर उठाया है। टी.वी. पर समाचार देखते हुए एक आम नागरिक को यह लगता है कि मीडिया उसकी हितैषी है और वह मीडिया से भावनात्मक रूप से जुड़ने लगता है। पत्रकारों को भी इस बात की भनक रहती है, किन्तु आम दर्शक कभी यह सोच नहीं पाता कि एक दिन उसके इसी भावनात्मक जुड़ाव का लाभ मीडिया उठाएगा और दलाली करेगा।

बरखा दत्त और वीर सांघवी की तथाकथित करतूतों से मीडिया की छवि को कितना आधात पहुँचा है यह तो विशेषज्ञ ही बता सकते हैं। हमारे देश में हर रोज़ कई जेसिका मारी जाती है; किन्तु मीडिया किसी एक का चुनाव करती है ऐसा क्यों? भ्रष्ट नेता की छवि को इतनी ईमानदारी से बदलकर प्रस्तुत करती है कि मानों उनसे उनका जन्म–जन्म का परिचय हो। ठीक उसी प्रकार भक्ति की बातों को भी इस प्रकार मसाला लगाकर प्रस्तुत करती है कि उसे देशद्रोही मानने को विवश होना पड़ता है।

भारत के ज्यादातर मीडिया हाउस अपनी नैतिकता खो चुके हैं , आलम यह है कि सच के खुलासे के बाद भी जनता से माफी माँगना भी उन्हे नहीं भाता और वे ऐसा इसीलिए करते हैं कि क्योंकि उन्हें मालूम है कि उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि मजबूत पूँजीवादी ताकत उनके पीछे है। यह ऐसी ताकत है कि देश की सरकार हिला दे।

आज देश भर में अनेक सरकारी और निजी संस्थान हैं जहाँ पत्रकारिता की डिग्री बेची और बाँटी जाती है और जो जितनी महँगी डिग्री के साथ आता है उसे उतने बड़े और ऊँची टी.आर.पी. वाले मीडिया हाउस में नौकरी मिलती है। ये सभी पत्रकार सुसाक्षर हैं, सुशिक्षित नहीं। इन्हें अच्छी तरह मालूम होता है कि कौन सी वस्तु कैसे बेची जाती है। आखिर पूंजीवादी दौर की उपज और प्रभाव दोनों है यहाँ। भूतों के साक्षात्कार से लेकर सास–बहू की लड़ाई तक दिखाने की कला में महारत हासिल है। कुछ लोग सीधी बात के नाम पर किसी को कुछ बोलने का मौका ही नही देते हैं। कुछ और हमेशा ब्रेकिंग न्यूज की प्रस्तुति करते रहते हैं और यह भी ब्रेकिंग न्यूज होता है कि लोगों का फ़्यूज उड़ जाता है और लोग कन्फ्यूज हो जाते हैं।

राम गोपाल वर्मा की फिल्म 'रण' और अमिर खान की 'पिपली लाइव' में टी.आर.पी की भूखी मीडिया की जंग और करतूतों को काफी सही तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

अब देखना यह है कि जनता कब जागती है और मीडिया के प्रभाव से अपने को कितना बचा पाती है तथा अपने निर्णय में अपने विवेक का कितना प्रयोग करती है।

◗ 315, डोयेंस कालोनी, शेरिलिंगम पाली
हैदराबाद–50 (आन्ध्र प्रदेश)
मो.– 09030895116, 09491870715
E-mail-nityanand-gayen@gmail.com

राष्ट्रीय विचार मंच एवं अनुव्रत महासमिति के संयुक्त तत्वावधान में सरदार पटेल की 135वीं जयंती के पावन अवसर पर 'राष्ट्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रमंडल खेल-2010' विषयक संगोष्ठी

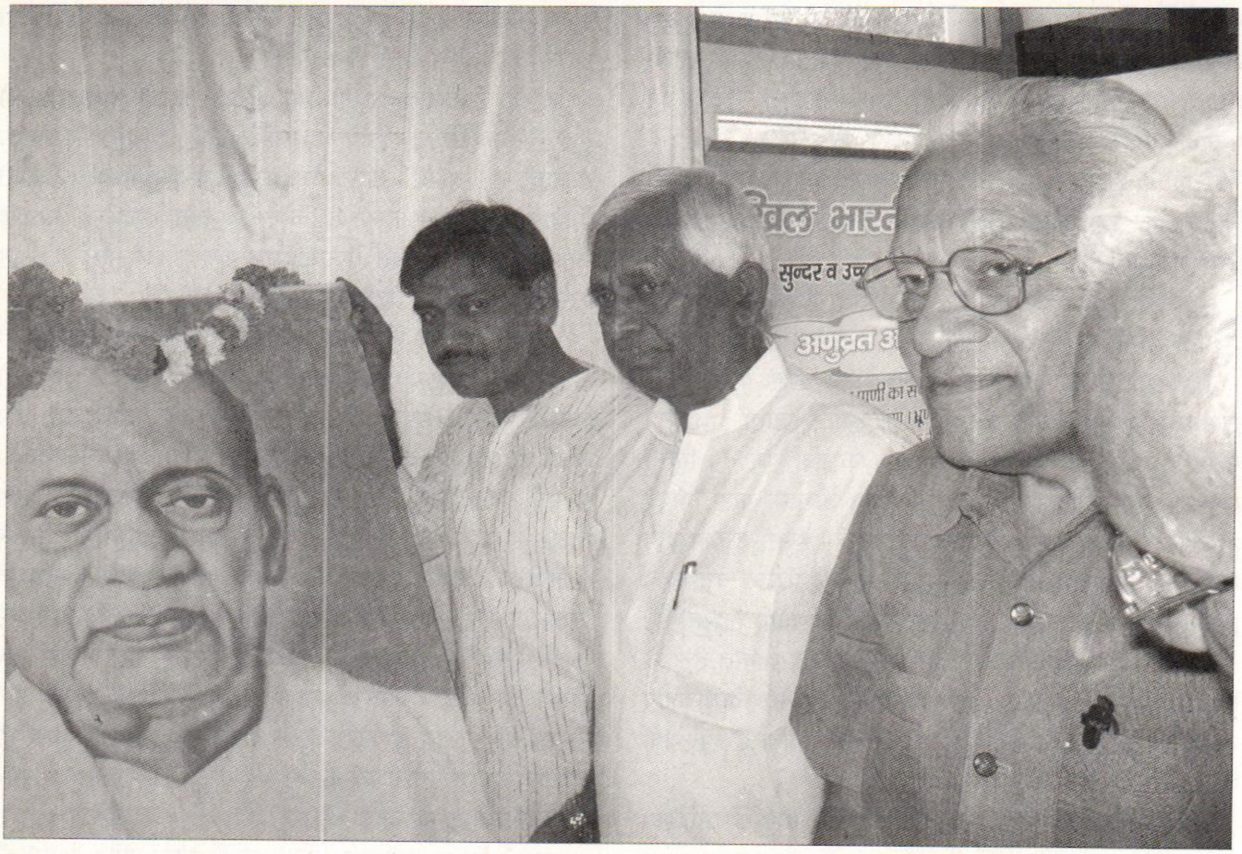

अनुव्रत भवन में संगोष्ठी का प्रारंभ प्रो. पी. के. झा 'प्रेम' के स्वागत संबोधन से हुआ। संगोष्ठी के विषय प्रवर्तन की शुरुआत श्री सिद्धेश्वर जी ने करते हुए कहा कि आज का विषय-''राष्ट्र-निर्माण के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रमंडल खेल-2010'' है। आज तक जितने भी राष्ट्रमंडल खेल हुए उनमें सबसे उत्तम 19वां राष्ट्रमंडल खेल हुआ। इसमें 70 हजार करोड़ खर्च हुआ। यह कहीं-न-कहीं भ्रष्टाचार का भी शिकार हुआ। भ्रष्टाचार राष्ट्रीय चरित्र बन गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही सबसे बड़ी समस्या बनकर खड़ी हो गयी। यहाँ दो बातें गौर करने योग्य हैं- राष्ट्रपति के साथ प्रिंस को उद्घाटन समारोह में नहीं होना चाहिए था। प्रिंस बेटन की जो मशाल है जो यूरोप से भारत तक आयी, मैं इस गुलामी के खिलाफ हूँ। हमें सफलता मिली जरूर-पर बड़ी मशक्कत के बाद। इस बार भारत की बेटियों ने भारत का नाम रौशन किया। 70,000 करोड़ रुपये खर्च करके भी आमजनों को इससे दूर रखा गया।

संगोष्ठी में आए विशिष्ट अतिथियों में सर्वश्री ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि हम पुराने मूल्यों को तोड़ते जा रहे हैं और नये मूल्यों की जोड़-तोड़ में अपनी अस्मिता खोते जा रहे हैं। लोकतंत्र में लोक की भागीदारी होनी चाहिए। हमारी उसमें सहभागिता भी होनी चाहिए। सरदार पटेल के विषय में आत्म चिंतन करने की आवश्यकता है। कर्त्तव्यों के माध्यम से ही अधिकारों की प्राप्ति हो सकती है। कहीं-न-कहीं लोग आज हिंसा की चपेट में हैं यह चिंतनीय है। मुनि जी के सानिध्य में अनुव्रत भवन में हमें सत्य और अहिंसा का प्रण

लेना चाहिए। तत्पश्चात् श्री विजय राज ने कहा कि चरित्रनिष्ठ होकर एवं एकबद्ध होकर हम आज पटेल जयंती पर संकल्प लें कि हम राष्ट्र निर्माण में, चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करेंगे। इसके बाद मुनि जी ने कहा कि सदाचार ही जीवन का सच्चा आधार होता है। स्वयं पर स्वयं का अनुशासन ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

मुनि श्री राकेश कुमार जी ने कहा कि अगर हमारे नेता सरदार पटेल के चरित्र को सामने रखकर देश निर्माण में योगदान करें तो क्या कहना। राष्ट्रीय एकीकरण के लिए सरदार पटेल का योगदान अविस्मरणीय है। पटेल का चरित्रबल इतना प्रभावशाली था इसलिए वे सफल नेता रहे।

डॉ. परमानंद पांचाल ने कहा कि आज जब इतना भ्रष्टाचार है तो यहाँ राष्ट्रनिर्माता सरदार पटेल के राष्ट्रनिर्माण पर कैसे बात करें? यह कठिन प्रश्न का विषय है। हैदराबाद, जूनागढ़ में सरदार पटेल का दखल हुआ, इसी कारण आज वह संगठित है। कश्मीर में उनका दखल नहीं हुआ इसलिए आज भारत कश्मीर की समस्या भुगत रहा है। 600 रियासतों को एकता के सूत्र में बाँधकर सरदार पटेल ने संगठित किया उसे हमने असंगठित कर आज विभेदीकरण की नई समस्या पैदा की है। आज हमें संकल्प लेना चाहिए कि सरदार पटेल के सपनों के देश को अक्षुण रखेंगे।

पत्रकार सरदार सिंह जोबन ने कहा कि राष्ट्रमंडल खेल में तो भ्रष्टाचार ही और फैला। आचार कहां गया ये तो है ही। खेलों की उपलब्धियां जो भी हुई वे व्यक्तिगत उपलब्धियाँ हैं, सरकारी नहीं। 54 करोड़ से देश की भलाई सदुचरित्र से हो सकती है। बच्चों को सरदार पटेल के चरित्र को समझाना होगा, उन्हें उनके बारे में पढ़ाना होगा तभी देश के चरित्र का निर्माण संभव होगा।

स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पाण्डेय ने बापू गांधी के साथ बिताये संस्मरण सुनाये और कहा कि सत्य-अहिंसा से ही देश का निर्माण संभव है। ''मैं रहूं या न रहूं पर मेरा हिन्दुस्तान आज़ाद रहेगा''- सुभाष चन्द्र बोस के कथन से उन्होंने अपनी बात समाप्त की।

डॉ. मेदिनी प्रसाद राय ने कहा कि मीडिया ने राष्ट्रमंडल को या खेलगांव को जिस दृष्टि से रखा वह बहुत निराश करने वाली बात है। मीडिया सिविल सोसायटी का हिस्सा है। अमर्त्य सेन ने कहा था कि जब भ्रष्टाचार हुआ तब मीडिया कहाँ था। अब मीडिया उसे तिल का तार बनाकर पेश करता है, ये अच्छी बात नहीं है। मीडिया ने जो दिखाया वह सच नहीं है। देश की उपलब्धि सबसे बड़ा सच है।

प्रसिद्ध आर.टी.आई. एक्टिविस्ट गोपाल प्रसाद ने कहा कि आर.टी.आई. मिशन के माध्यम से मैं हिन्दी की सेवा करता हूँ।

लोक सभा सचिवालय में उप-सचिव नवीन कुमार झा ने कहा कि हमारी विचारधारा को एक सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी भाषा करती है। अपने देश में राष्ट्रमंडल खेल में हिंदी की भारी उपेक्षा असहनीय है। किसी भी विदेशी भाषा से हमारा बैर नहीं है पर हिन्दी की उपेक्षा हमारे श्रेष्ठ लोकतंत्र की उपेक्षा है। सरदार पटेल के नाम से ही देश शक्तिशाली महसूस करता है।

प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि कोई भी खेल जाति-पाँति, भेद-भाव से परे होता है। कोई भी भाषा अपने आप में महत्वपूर्ण

होती है। माध्यम किसी भी भाषा को बनाया जा सकता है।

डॉ. सोमदत्त शर्मा सोम ने कहा कि भ्रष्टाचारी ही सबसे ज्यादा नैतिकता भी बात करते हैं। आज सरदार पटेल सबसे अधिक प्रासंगिक है 'काल किसी का श्रेय किसी का'। राष्ट्रमंडल में सरकार का रत्ती भर भी योगदान नहीं है। राष्ट्र की भाषा होती है, परम्परा होती है, पर यह सरकार सभी सीमाओं को लाँघ गयी है।

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि मुझे खुशी है कि ''कुछ लोग हैं जागे हुए''। आज आत्मचिंतन, आत्ममंथन का समय है। किसी खण्डित प्रतिमा को देव पीठ स्थान पर रखकर अपवित्र नहीं कर सकते। मात्र सरदार पटेल ही हैं जिन्हें देव पीठ पर स्थान दिया जा सकता है। राष्ट्र के प्रति भक्ति केवल शाब्दिक ही न हो बल्कि व्यावहारिक भी हो। हमारा संकल्प शुरू हुआ है। हमें बहुत दूर जाना है। अभी 'मौन निमंत्रण छलना है, अभी मीलों हमें चलना है।'

अनीकुर रहमान ने कहा कि राष्ट्र की तरक्की कैसे हो इसे व्यावहारिक ढंग में लाने की आवश्यकता है, केवल सैद्धांतिक नहीं। आनंद वर्द्धन ने कहा कि खेल में हिन्दुस्तान के आमजन को भी मौका मिलना चाहिए था।

संगोष्ठी में उपर्युक्त गणमान्य व्यक्तियों के अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी के व्याख्याता डॉ. मणिकांत ठाकुर, शिक्षक एवं समाजसेवी राजन गौतम, समाजसेवी राज भास्कर भूषण एवं संजीव कुमार ने भी सक्रिय योगदान किया।

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि 'लम्हों ने ख़ता की, सदियों ने सजा पायी'- सरदार पटेल के बाद देश में यही हुआ। हिंदी में सामाजिक विज्ञान का और हिन्दी में विश्व कोश क्यों नहीं तैयार किया गया। मैंने विश्व कोश तैयार किया। राष्ट्रमंडल खेल के खिलाड़ियों को बधाई-चाहे घटनाएं कुछ भी घटी हों।

संगोष्ठी का समापन उपेन्द्र नाथ 'अनन्य' के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रस्तुति : डॉ. मणिकांत ठाकुर और उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'

आज का पुरुष

❑ स्नेह ठाकुर

क्या यह संभव है कि आज के युग के पुरुष के प्रति सहानुभूति की भावना जोर पकड़ रही है? पुरुष जिस संदर्भ में पुरुष माना जाता था आज उसका क्षेत्र डगमगा रहा है। नारी आन्दोलन के सिद्धांत ने आज उसे, नारी-पुरुष के संबंधों में जो पुरुष प्रधानता थी, वो छीन ली है। आर्थिक परिस्थितियों ने और नारी के नौकरी-पेशा के प्रांगण में उतरने ने, उसकी संरक्षक एवं 'सोल प्रोवाइडर' एकल अन्नदाता की भूमिका को ठेस पहुँचाई है। राजनीति के क्षेत्र में भी उसकी प्रधानता कम ही हुई है।

अत: कल का सर्वेसर्वा पुरुष, आज पुरुष की महत्त्वपूर्णता से मंडित न होकर उसकी महत्वहीनता से कुछ खंडित-सा हो रहा है। पुरुषार्थ का होना, जो कल पुरुष का 'सिक्यूरिटी ब्लैन्कट' था, आज उसका वही रक्षक-संगरक्षक का रूप बदल रहा है।

आज हर कहीं यह विषय उछलता-सा नज़र आ रहा है। पुस्तक भंडार में किताबें इस विषय पर मिल रही हैं। 'पुरुषार्थ की पुन: खोज' एक आम विषय बन रहा है। पुरुष को उकसाया जा रहा है कि वो पुरातन के पुरुष से कहीं अच्छे रूप में अपने वर्तमान के पुरुष को पेश करे।

कई बार मैं इस संदर्भ में सोचती हूँ जब पतियों को, सपनों के राजकुमारों को उनकी दिनचर्या से गुज़रते हुए देखती हूँ।

क्या आज का पुरुष उपहास का पात्र बनता जा रहा है? क्या पुरुषार्थ 'एण्डेण्जर्ड स्पीसीज़' बन रहा है या पुरुषार्थ की परिभाषा बदल रही है? 'जोरू के गुलाम' की संज्ञा आज के पुरुष पर चिपका ख़िताब है या अभिशाप!

कुछ दिन हुए छुट्टी का दिन था, सोचा भारती से मिल आऊँ। पहुँची तो दरवाज़ा खोला, चड्डी-बनियाइन पहने पसीने से लथपथ अविनाश ने। अंदर कदम रक्खा तो देखा प्रेस करने वाली साड़ियों का अम्बार लगा हुआ है। अभी तक प्रश्नवाचक बने मुँह से आख़िरकार जब आवाज़ निकली तब पूछा, 'भाईसाहब, यह सब क्या है! यह आज कैसा धोबी-घाट लगा रखा है? इस नज़ारे का माज़रा क्या है?'

पहले तो खिसियाने-से अविनाश ही 'ऊँ', 'औं' करते रहे फिर सँभल कर बोले कि, ''बात ऐसी है स्नेह जी कि आयरन करते समय मैं अपना चिंतन-मनन कर लेता हूँ। आयरनिंग मुझे रिलैक्स कर देती है।'

मैंने कहा, 'ये तो अच्छा हुआ कि अभी भी साड़ी पहनती है। इसने आजकल के आध-पौन गज़ वाले न्यूनतम परिधान- अँगिया व निक्कर पहनने शुरू नहीं किये, नहीं तो आपके चिंतन-मनन और रिलैक्सेशन के समय में बहुत कटौती हो जाती। कम से कम छ: -छह: गज़ के साड़ियों की वजह से आपको चिंतन-मनन और रिलेक्सेशन का समय तो मिल जाता है।'

इतने में भारती आ चुकी थी। अपनी समझ में मैंने कुछ अनुचित तो नहीं कहा था पर शायद उसे मेरे बोलने का अन्दाज़ अखर गया था। थोड़ा तमककर बोली, 'दीदी! आप भी बहुत पुरातनपंथी हैं। जरा इन्होंने मेरी साड़ियों पर प्रेस कर दी तो क्या ग़जब ढा दिया! मैं भी तो कभी-कभी इनके कपड़ों पर प्रेस कर देती हूँ। यह किस किताब में लिखा है कि स्त्री को ही कपड़ों पर 'स्त्री' करनी चाहिये? और फिर आप ही बताइये भारत में यद्यपि धोबिन धोबी की सहायता करती है पर ज्यादातर तो धोबी ही यह काम करते हैं। धोबी भी तो पुरुष हैं, अगर वो कर सकते हैं तो अविनाश क्यों नहीं कर सकते! फिर मैं तो सिर्फ इनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये ही इन्हें आयरन करने देती हूँ, क्योंकि इस बहाने ये थोड़ा हाथ-पैर चला लेते हैं और मानसिक रूप से थोड़ा रिलैक्स हो जाते हैं। स्नायुओं का तनाव कम हो जाता है। नहीं तो ये सारे दिन निगोड़े कम्प्यूटर के सामने बैठे-बैठे चश्मे के शीशे मोटे करवाए जाते हैं। नम्बर बढ़वाए जा रहे हैं। अगर आपको विश्वास नहीं होता तो कोई भी साड़ी उठा कर देख लीजिये, एक पर भी ढंग की आयरन नहीं हुई होगी। ये तो मैं इनका मुँह देख कर चुप हो जाती हूँ। धोबी ऐसा करे तो उसके मुँह पर दे मारूँ।'

मन में तो आया कि कह दूँ, 'भारती जी, आजकल मुँह पर मारने वाला ज़माना चला गया है। अभी कुछ ही दिन पहले तो जब आकांक्षा अपने नौकर को डाँट रही थी तो कुछ देर तो वह सुनता रहा फिर गुस्से से बोला, 'मेम साब, हम आपका हस्बैंड नहीं है। आप हमको इस माफिक नहीं डाँट सकता।'

सच ही तो है आजकल हस्बैंड होने के लिये बड़ा कलेजा चाहिये।

पर जो भी कहो भारती की बात में दम था। सोचा मैं ही पागल हूँ। भारती सचमुच ऐसी स्त्री की गई साड़ियाँ पहन कर अविनाश के ऊपर बहुत बड़ा एहसान कर रही है। अविनाश के माथे और मूछों पर चमकते श्वेद-कण, उठे हुए कान व जिस तरह से वो खड़े थे उस दशा में उनकी पूँछ का आभास देता हुआ उनके पीछे लटकता कपड़ों का हैंगर, इस बात का विश्वास दिला रहे थे कि कुछ ही क्षण में वो घुटनों के बल बैठ, दोनों हाथ जोड़ पत्नी के इस एहसान पर और भी जोरों का पसीना बहाने के लिये उद्धत हैं, कृतसंकल्प हैं।

अरसे से मनीषा की तरफ जाना न हुआ था। आज मुझे किसी कार्यवश उधर एक ऑफिस में जाना था। अत: मनीषा को फोन किया कि यदि वो कुछ नहीं कर रही है तो मैं दोपहर ऑफिस का काम निपटा कर कुछ समय के लिये उससे मिलने आ जाऊँगी।

बातों ही बातों में समय का पता ही न चला। ध्यान तब टूटा

जब मनीषा के पतिदेव ऑफिस से घर पधारे। उठने का उपक्रम करते हुए मैंने कहा, 'अरे बाबा! ये भी पहुँचते ही होंगे। मैं बस अब जल्दी से निकल ही लूँ। इनके..............'

मैं वाक्य पूरा भी न कर पाई थी कि सुरेन्द्र जी जो अब तक अपने जूते उतार कर करीने से रख चुके थे और टाइ ढीली कर रहे थे बोले, 'स्नेह जी, बस मुझे दो मिनट का समय और दे दीजिये, जरा कपड़े बदल लूँ। फिर अभी आपको गरमागरम चाय पिलाता हूँ।'

मेरा मुँह खुला का खुला रह गया। भारती के घर तो बिना बताये गई थी, अतः परम ब्रह्म अविनाशी अविनाश जी तो जाँघिया बनियाइन में थे, पर अब मैं सुरों के इन्द्र सुरेन्द्र जी की चड्डी बनियाइन में तो नहीं, हाँ, पायजामा-कुर्ता या कमीज के ऊपर बँधे ऐप्रन की साज-सज्जा से सज्जित चाय की ट्रे पकड़े, माथे और भौहों से पसीना छलकाते छवि रूप की कल्पना कर रही थी।

मेरे माथे पर पड़ी सिकुड़ी-सिमटी लकीरें शायद अभी भी सीधी नहीं हुई थी क्योंकि उन्हीं को लक्षित कर मनीषा कह रही थी, 'स्नेह जी आप भी पोंगापंथी की पोंगापंथी रह गई। अरे, आँखें खोलिये और ज़माने के साथ चलिये। मुझे पता है कि भाई साहब के आने का समय हो गया है और आप उनके लिये घर पहुँचने की जल्दी में तिलमिला रहीं हैं। पर जरा सोचिये, गर वो अपने आप एक कप चाय बनाकर पी लेंगे तो क्या कोई क़हर टूट पड़ेगा?'

मैं बेबस-सी मिमियाती बोली, 'मनीषा, बेचारे ऑफिस से थके-थकाए आयेंगे...'

मनीषा में पूरी बात सुनने का धैर्य नहीं था, बीच में ही काट कर बोली, 'अरे ऑफिस में ही ये लोग कौन-सा बड़ा तीर मार लेते हैं! कोई पहाड़ खोदते हैं क्या? बड़ी मुश्किल से दो-चार फाइलों पर हस्ताक्षर ही तो करते हैं।' अपने आप चाय तो बनाने ही दूँ। शरीर उनका भीमकाय हो रहा है। सचमुच उनकी तोंद तबले का आकार ले रही है। उनके जैसे दो आदमी बगल-बगल लिटा देते तो अर्जुन को निर्वासित काल में तबला जोड़ी की ज़रूरत ना पड़ती। भीम और अखिल की तोंद पर धमाधम तबला बजा सकते थे। और अगर भीम जैसे राज-पुरुष रसोइया बन सकते हैं तो क्या अखिल चाय भी नहीं बना सकते!'

बुद्धि पर भ्रमित अवस्था में फैला हुआ भ्रमजाल जगह-जगह टूटने लगा था और जब संध्या के पति विष्णु विराट को लुंगी बनयाइन में अँगोछा लिये घर की सफाई करते देखा तो दिमाग के जाले बिल्कुल साफ हो गये। संध्या को यह समझाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी कि विष्णु की सेहत के लिये उनके हाथ में सफाई का अँगौछा कितना ज़रूरी है।

संपादक-प्रकाशक 'वसुधा'
(हिन्दी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका)
16 Revlis Crescent
Toronto, Ontario M 1 V-IE9, Canada

दृष्टि दोष

❑ आनन्द वर्द्धन

ये दृष्टि दोष वाले,
दोष कैसे क्या है जानो!
कसौटी पर कस कर देखो,
खुद दोष स्वम् ही जानो।
विकृत नयन पुतली है,
या मानस पटल धुँधला है
इन्द्रियां सजग नहीं हैं,
या मृग मारीचिका सा भ्रम है।
प्राकृत प्रदत्त है ये या,
प्रकृति का है नजारा।
सही आँकड़ा नहीं है या,
विश्लेषण की युगत नहीं है।
अंधविश्वास का है चक्कर
या मायावी जाल रचित माया।
मन–बुद्धि लगन–मनन से,
यों हर इन्द्रियों का बस सहारा।
चालो संस्कार की चलनी से,
रीति–रिवाज़ उम्र घड़ी घेरा।
ये दृष्टि दोष वाले,
दोष कैसे क्या है पहचानो।

13/3, गौतम नगर, नई दिल्ली, मो.–9911960776

बे-ख़बर

❑ राम कुमार करौतिया

उनकी नज़रों से नज़रें, मिला लूं जरा।
उनके ख्वाबों में, घर अपना बना लूं जरा।।
अपने ही घर से, उन्हें निकाला हमेशा।
अपने सीने में, उन्हें बसा लूं जरा।।
ऊपर जाने की तमन्ना, वो रखते बहुत।
अपनी अस्तियों से सीढ़ियाँ बना लूं जरा।।
उनका दर्द से रिश्ता रहा है हमेशा।
उनके दर्द को अपना बना लूं जरा।।
माना उनकी राहों में हैं, कांटे बहुत।
अपनी खाल का गलीचा, बिछा लूं जरा।।
छोड़कर हमको, चला जाएगा वो एक दिन।
उसकी यादों को दिल में बसा लूं जरा।।
मौत तो 'राम', तुम्हें आएगी उस दिन।
मौत का कारण कुछ और बना लूं जरा।।

जी–16, नौरोजी नगर, नई दिल्ली–110029

बाबा कानपुरी को पं० सुमित्रानंदन पंत साहित्य सम्मान

साहित्य सम्मान और बाबा कानपुरी अब तो जैसे एक दूसरे के पर्याय बन गये है। सिद्ध रिसर्च सेंटर एवं बाल प्रहरी के संयुक्त तत्त्वावधान मं कैम्पटी मंसूरी में आयोजित पाँचवे राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मेलन के अन्तर्गत सम्पन्न राष्ट्रीय बाल कवि-सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बाबा कानपुरी को पंडित सुमित्रा नंदन पंत साहित्य सम्मान से नवाजा गया। सिद्ध संस्थान के अध्यक्ष पवन गुप्ता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० राम निवास मानव, कार्यक्रम के संयोजक एवं बाल प्रहरी पत्रिका के संपादक उदय किरौला ने शाल ओढ़ाकर, सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र से पधारी वरिष्ठ कवयित्री डॉ० सरताज बानो, दिल्ली से रविशर्मा, अल्मोड़ा से पवन शर्मा, गाजियाबाद से डॉ० मधुभारती, बहराइच से डॉ० अशोक गुलशन, राजस्थान से डॉ० भैरोलाल गर्ग, उज्जैन से रफीक नागौरी सहित देश के डेढ़ सौ प्रतिष्ठित साहित्यकार उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ० शिवनाथ राय (हिंसार), डॉ० हरिसिंह पाल (दिल्ली) डॉ० रामनिवास मानव (हिंसार) को शैलेश मटियानी साहित्य सम्मान, डॉ० नागेश पाण्डेय संजय और डॉ० बृज नंदन वर्मा को चंद्रकान्त भारद्वाज सम्मान से विभूषित किया गया।

बाबा कानपुरी बेशक काव्यमंचों पर हास्य-व्यंग्यकार के रूप में विख्यात है, वह एक प्रतिष्ठित साहित्यकार गीत-ग़ज़ल-छंदकार भी हैं। बाल साहित्य में भी उनकी भूमिका सराहनीय है। यह सब अनायास ही नहीं हुआ। इसके पीछे उनकी लंबी साहित्य साधना एवं साहित्य सेवा छिपी है। नई-नई प्रतिभाओं को आगे लाना, उनकी प्रतिभा को निखारना, दूर-दूर के प्रतिष्ठित साहित्यकारों को राष्ट्रीय मंच प्रदान करना व उनका सम्मान, हिंदी में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कृत कर, उनके अध्यापक-अध्यापिकाओं को सम्मानित कर नोएडा के पब्लिक स्कूलों में हिंदी को सम्मान दिलाना, निरंतर काव्य गोष्ठी, काहानी गोष्ठी, पुस्तकों पर परिचर्चा, पुस्तक लोकार्पण, साहित्यकारों का सम्मान आदि बाबा कानपुरी के उल्लेखनीय कार्य रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर नोएडा नगरी को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पहचान दिलाने का श्रेय भी बाबा कानपुरी को ही जाता है।

सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए बाबा कानपुरी ने कहा अच्छे संस्कारों के अभाव में उच्चशिक्षा प्राप्त आज की युवा पीढ़ी भ्रमित है। परिवार और स्वजनों के प्रति उनमें आस्था और सम्मान की कमीं आती जा रही है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित उनमें अपने समाज के प्रति कोई लगाव नहीं है। धनार्जन की होड़ के साथ उनमें फिजूलखर्ची बढ़ती जा रही है। इसके लिए हम सभी बड़े जिम्मेदार हैं। हम बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दे पा रहे हैं। आज अच्छा, प्रेरक, उपयोगी बाल साहित्य का भी अभाव है। बाल शिक्षा रोचक होनी चाहिए, किंतु प्रेरणादायक भी होनी चाहिए। बच्चों का अच्छे-बुरे का ज्ञान कराना हमारा और शिक्षकों को दायित्व है। आज महानगरीय जीवन में एकल परिवारों में बच्चों को दादा-दादी से जो प्यार और सीख संयुक्त परिवार में रहकर मिलती थी वह अब नहीं मिल पा रही है। उनमें अनुशासन और अपनेपन का अभाव होने के कारण ही बड़ों के प्रति आदर सम्मान में कमी आती जा रही है। परिवार में टूटन और बिखराव का यही कारण है हमें इस पर गंभीर चितन और मंथन की आवश्यकता है।

प्रस्तुति : देवेन्द्र कुमार मित्तल
महासचिव-सूर्या संस्थान, नोएडा

नेत्रहीनों के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाई लुई ब्रेल ने

लुई ब्रेल की 202वीं जयंती संपन्न

बी.एन. कॉलेज पटना के सभागार में विगत चार जनवरी 2011 को दोपहर 12 बजे पाटलीपुत्र दृष्टिहीन विकलांग संस्थान की ओर से आयोजित लुई ब्रेल (ब्रेल लिपि के आविष्कारक) की 202वीं जयंती समारोह के अवसर पर बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष सिद्धेवर ने जहां एक ओर बोर्ड के कालीदास संस्कृत पुस्तकालय के लिए ब्रेल लिपि के पुस्तकें खरीदने की घोषणा की वहीं दूसरी ओर उन्होंने संस्कृत विद्यालयों में शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों की नियुक्ति में नेत्रहीन एवं अन्य विकलांग उम्मीदवारों को तरजीह दिए जाने का आश्वासन दिया। उन्होंने दृष्टिहीन विकलांगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयास में लुई ब्रेल के योगदान की सराहना की।

समारोह का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. भीम सिंह ने भी विवेकानुदान की लगभग 1.5 लाख रुपये की संपूर्ण राशि नेत्रहीन छात्रों पर खर्च करने की घोषणा की। इस अवसर पर खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री श्याम रजक ने भी नेत्रहीनों को हर तरह की मदद करने की बात कही। समारोह में संस्थान के नेत्रहीन अध्यक्ष प्रीतम कुमार शर्मा के द्वारा प्रस्तुत 17 सूत्री मांगों से संबंधित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित कर सरकार से उसे अतिशीघ्र पूरा करने का अनुरोध किया गया। समारोह के प्रारंभ में संस्थान के सचिव डॉ. विनय कुमार ने आगत अतिथियों का स्वागत किया और अन्त में धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. भीम सिंह सहित श्याम रजक, सिद्धेश्वर तथा रंजन कुमार ने इस अवसर पर जरूरतमंदों को कंबल का वितरण किया।

जयंती समारोह को प्रो. भारती एस. कुमार, प्रो. संतोष कुमार, प्रो. पी.के. पोद्दार, डॉ. प्रदीप जैन ने भी संबोधित किया। बी.एन. कॉलेज के प्राचार्य प्रो. राजकिशोर प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न जयंती समारोह का संचालन छात्र जद (यू) के अध्यक्ष रंजन कुमार ने किया।

प्रस्तुति : डॉ. राज शेखर

क्या मायने है राष्ट्रीयता के

❑ डॉ॰ नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

राष्ट्रीयता की मूल अवधरणा से हम कितने परिचित हैं, यह एक महत्त्वपूर्ण चिंतन–बिंदु है। राष्ट्रीयता के पृष्ठाधर क्या हैं? राष्ट्रीय–चेतना का होना क्यों जरूरी है? विश्व–फलक पर राष्ट्रीयता का क्या स्थान है? आदि इस प्रकार के अनेक प्रश्न राष्ट्रीयता के संदर्भ से जुड़े हुए हैं। इन प्रश्नों पर विचार करना नितांत आवश्यक है, क्योंकि हमारे राष्ट्रीय–जीवन के सुखमय अस्तित्व के लिए इन प्रश्नों का उत्तर खोजना परमावश्यक है। आज हम जिस राष्ट्र में रह रहे हैं वह एक सुवियंस्त, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संरचना एवं 'विविध्ता में एकता' का सुपरिणाम है। ऐसा भी माना जाता है कि ''राष्ट्र की एक भौगोलिक और सामाजिक–सांस्कृतिक परिकल्पना हमारे पूर्वजों के मन में अवश्य विद्यमान थी। अनेक स्वतंत्रा राज्यों का समूह होते हुए भी अपना देश प्राचीन युग में)षियों के मन में, कवियों और मनीषियों के मन में अपनी समूची सांस्कृतिक छवि के साथ विराजमान था। भारत का एक भौगोलिक रूप भी इन)षियों एवं कवियों के नेत्राों के सामने था। कहने का अभिप्राय यह है कि भारत का यह नक्शा भले ही कवियों की कल्पना में विद्यमान हो, एक केंद्रीय सत्ता के अधिन सुवियस्त न हो, उस समय के भारतीय मानस में था अवश्य। जिसे हम राष्ट्रीय भावना या चेतना कहते हैं, वह जैसा कि डॉ॰ राम विलास शर्मा ने कहा है कि एक सुदीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है।'' ;'भारत का स्वाधिनता–संग्राम,' आजादी की अग्नि शिखा में, संपादन, डॉ॰ शिव कुमार मिश्र, इपफको, 34, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110019, 1998द्ध बहराल।

वैसे तो राष्ट्रीयता की अवधरणा एक व्यापक अवधरणा है पर हम भारत में राष्ट्रीयता के संबंध में विचार कर रहे हैं। राष्ट्रीयता का संदर्भ अपने–अपने ढंग से जुड़ा हुआ है। किंतु राष्ट्रीयता के बुनियादी तत्त्व प्रत्येक राष्ट्र में एक से ही हैं। यदि हम राष्ट्रीयता की मोटे रूप में बात करें, तो कहना होगा कि संसार का कोई भी भू–खंड जिसकी अपनी भौगोलिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अस्मिता हो, जिसकी अपनी परंपराएँ हों, जिसका अपना इतिहास हो तथा इन सभी पर वहाँ के निवासियों को गर्व हो, जिसकी अस्मिता की रक्षा के लिए वे सदैव मनसा–वाचा–कर्मणा तैयार रहते हों, जिसके लिए वे बडे से बड़ा त्याग करने में नहीं हिचकते हों, जिसके अतीत के प्रति जिनका रागात्मक संबंध हो, जिसके वर्तमान के प्रति उनका विकासोन्मुख सक्रिय योगदान हो और जिसके भविष्य के लिए उनकी आँखों में पल–पल निर्माण, लोक–मंगल के साथ–साथ समस्त विश्व के कल्याण की भावना के सपने तिरते हों। किसी देश की राष्ट्रीयता का अर्थ संकीर्णता का पर्याय नहीं हो सकता। किसी भी देश की राष्ट्रीयता अपनी स्वायत्तता को बरकरार रखते हुए 'जियो और जीने दो' की भावना से एक 'वैश्विक राष्ट्रीयता' के उदात्त भाव से जुड़नी चाहिए। हमारे यहाँ जब यह कहा गया कि ''अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्, उदारचरिताम् तु वसुध्ैव कुटुंबकम्, तो इसके पीछे अपनी राष्ट्रीयता के साथ एक प्रकार के विश्व–परिवार का भाव भी छिपा हुआ था। कहना न होगा कि जिसे हम भारतीय संस्कृति के रूप में जानते–पुकारते हैं वह किसी एक जाति, ध्र्म, नस्ल या संप्रदाय का निर्माण न होकर अनेक जातियों, ध्र्मों, संप्रदायों एवं नस्लों के लोगों के सम्मिलित उद्योग का प्रतिपफल हैं। हमारे राष्ट्र की सामासिक–संस्कृति की अवधरणा के पीछे यही भाव प्रमुख रहा है।

यह सही है कि जहाँ हम जन्म लेते हैं, जहाँ की प्राण वायु में हम पलते हैं, जहाँ के अन्न–जल से हमारा पोषण होता है, जहाँ हम शिक्षित–संस्कारित होते हैं और जहाँ हम पारस्परिक रिश्तों में बँध्ते हैं, जहाँ हमारे समस्त क्रिया–कलाप होते हैं, जहाँ हम अंतिम सांस लेते हैं उस माटी के प्रति हमारा ममत्व स्वाभाविक हैं। यही ममत्व कालान्तर में एक वृहद् संदर्भ में राष्ट्रीयता का स्वरूप ग्रहण करता है। इस माटी पर हमें गर्व होता है, हमें उससे प्यार होता है। हम उस माटी के प्रति सदैव कृतज्ञ रहते हैं या हमें होना चाहिए। राष्ट्रीयता का भी यही तकाजा है। देश प्रेम या उसका सघन रूप राष्ट्रीयता का संबंध केवल अपने देश में ही हो ऐसी बात नहीं है। यह भाव संसार में प्रत्येक भू–भाग में स्थित हर एक भौगोलिक क्षेत्रा में देखा जा सकता है। राम नरेश त्रिपाठी के 'पथिक' की ये पंत्तिफयाँ याद आ जाती हैः

''विराट रेखा का वासी जो जीता है निज हाँपफ–हाँपफ कर
वह भी अपनी मातृभूमि पर कर देता है प्राण निछावर।''

जिस व्यक्ति में अपने देश के प्रति प्रेम नहीं होता, मातृभूमि पर गर्व नहीं होता, राष्ट्रीयता के प्रति समर्पण नहीं होता उसके बारे में अँग्रेजी कवि पर वाल्टर स्कॉट की ये पंक्तियाँ कितनी सटीक हैंः

If there be such, mark him, well
for him no ministreal reptures swell
To the vide dust from where unghe spring
He will go unwept unheart and unsung

तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपनी जन्मभूमि के प्रति स्वाभाविक ममत्व होता है। यही ममत्व आगे चलकर उसकी राष्ट्रीय पहचान बनता है। हाँ यह बात अलग है कि कभी–कभी उस ममत्व का अतिरिक्त अविवेक की मनःस्थिति में उसे संकीर्ण और स्वार्थकेंद्रित भी बना देता है। इससे 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सार्वभौम आदर्श खंडित हो जाता है।

जैसा कि कहा गया है कि राष्ट्रीयता का रिश्ता प्रत्येक राष्ट्र की अपनी परिधि में होता है और इसी परिधि में वह राष्ट्र जीता है, मरता है। पर मानव संस्कृति के मंगल के लिए विभिन्न राष्ट्रीयताएँ, जैसे विभिन्न नदियाँ अंततः सागर में जा मिलती हैं, एक वृहद् वैश्विक–राष्ट्रीयता में समाहित हो जाती हैं या उन्हें हो जाना चाहिए। अब राष्ट्रीयता के संबंध में भारत की बात करें। अतीत में या अपने पराधीनता काल में भारत कभी भी एक सुविन्यास राष्ट्र के रूप में नहीं रहा। आजादी के बाद अनेक अप्रिय हादसों से गुजरता हुआ अपना देश पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक एक अखंड राष्ट्र बना। हमने संभवतः पहली बार अपनी राष्ट्रीयता को पहचाना। हमने कहा कि 'गर्व से कहो कि हम भारतीय हैं'। इसी राष्ट्रीयता का बल प्राप्त कर हम आगे बढ़ते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्रा में नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। राष्ट्रीयता का यही बोध हमें एक राष्ट्रीय संस्कृति से जोड़ रहा है। अखंड राष्ट्र की भावना की अग्नि में सभी प्रकार की संकीर्णताएँ भस्मीभूत होकर हमें अधिकाधिक शत्तिफशाली बना रही हैं। राष्ट्रीयता के परचम तले हम अपनी विविधताओं क्षेत्रा, धर्म, विश्वास, लोकसंस्कृति, वेश–भूषा, भाषा आदि के बीच एकता के सूत्रा में बंधे हुए हैं। यह हमारे राष्ट्र के लिए एक शुभ संकेत है।

पर एक दूसरे पहलू पर विचार करें। क्या हम अपनी राष्ट्रीयता के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हैं? समय–समय पर उठने वाले क्षेत्रीय विवाद, क्षेत्रीयता–भाषा, धर्म–सप्रदाय आदि के झगड़े, मनमुटाव, वैमनस्य, मनोमालिन्य क्या हमारी अखंड राष्ट्रीयता की भावना के अनुकूल हैं? हमारा आंतरिक कलह, दिनोदिन बढ़ता कदाचार, भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण, अलोकतांत्रिक व्यवहार, सामाजिक वैषम्य जैसी स्थितियाँ क्या हमारी राष्ट्रीयता का अहित नहीं कर रही हैं? इस प्रकार के अनेक प्रश्न हमारी राष्ट्रीयता को क्षत–विक्षत करते नजर आते हैं। कहीं–कहीं राष्ट्रीयता की बात पंथ–निरपेक्षता से हटा कर किसी विशेष विचारधरा की संकीर्ण मनोवृत्ति से जोड़ दी जाती है। इससे राष्ट्र की अखंडता का अहित होता है। हमारी राष्ट्रीय चेतना, हमारे संविधन, लोकतांत्रिक पद्वति, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय पशु–पक्षी, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत में पूर्णतया परिलक्षित होती है। हमारी राष्ट्रीयता का बोध हमें अपनी सुरक्षा के प्रति साचेत करता हुआ हमें अमन–चैन की जिदंगी जीने का संकल्प प्रदान करता है।

जैसे किसी बगीचे के सभी पूफल एक ही रंगत के नहीं होते उसी प्रकार संसार के विभिन्न राष्ट्रों की अपनी–अपनी राष्ट्रीयताएँ होती हैं जिनमें उन राष्ट्रों का अतीत, वर्तमान और भविष्य सिमटा रहता है। यहाँ किसी भी तरह के टक़राव की गुंजाइश नहीं होती। हाँ 'जियो और जीने दो' के आदर्श के अनुरूप कोशिश यही होनी चाहिए कि किसी का अहित करके हमें अपना हित नहीं साध्ना चाहिए। सभी प्रकार की राष्ट्रीयताओं के पीछे 'इंसानियत' का भाव मुख्य रूप से विद्यमान रहना चाहिए। परेशानी यह है कि –

ज़मी का चप्पा–चप्पा क़त्लगाहे आदमियत है
खुदा महपूफज रखे, आए दिन क़ातिल बदलते हैं।

और बदकिस्मती यह है किः

इंसान मुहब्बत का चलन भूल गया है
या अल्लाह यह जमाने को क्या हुआ है!

पर सुकून है किः

यह शम्मे मुहब्बत न बुझी है, न बुझेगी
माना कि बहुत तेज़ जमाने की हवा है।

दरअसल, सियासत, चाहे वह देश की भीतर की हो या उससे बाहर की हो राष्ट्रीयता की चेतना को नुकसान पहुँचा रही है। सियासत अपने आप में बुरी नहीं होती, पर सियासत करने वालों की मंशाएँ नीयत और आचरण अगर दुरुस्त न हो, तो सियासत किसी के हित में नहीं होती। इसलिए जरूरी यह है कि हम सियासत को सही ढंग से अंजाम दें। यह बात सभी जगह लागू हो सकती है।

वत्तफ के हर दौर में यह बात पाई जाती है
मज़हब के नाम पर रंजिश बढ़ाई जाती है
जुवां के नाम पर रंजिश बढ़ाई जाती है
सरहदों के नाम पर रंजिश बढ़ाई जाती है।

इसलिए,

अहले सियासत को यह काम न करने दो
नपफस–नपफस में मुहब्बत का रंग भरने दो।

अंत में,

राष्ट्रीयता का सर्वत्रा यही पैगाम रहना चाहिए
''एक शज़र मुहब्बत का ऐसा लगाया जाए
जिसका साया पड़ोसी के आँगन में जाए।''

7 च 2, जवाहर नगर, जयपुर–302004, राजस्थान,
दूरभाषः 0141–2650937, मो.:9414829376

कविवर 'नलिन' का काव्य-विवेक

❑ डॉ॰ रामगोपाल पाण्डेय

कविवर 'नलिन' (डॉ॰ ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन') ने अपने कविता-विवेक को निषेध की निसेनी पर टाँग रखा है यह कहकर कि उसमें कविता-विवेक की गर्चे गिनती हो, तो वह सर्वथा शून्य है। कवि की पंक्ति बाँचे :- ''कविता विवेक मैया हमरा में एको नाहीं''।

तुलसी के कविता-सिंधु में उतरकर देखें, तो एक स्थल पर व्याकरणिक प्रकृति की भिन्नता के साथ उपरि लिखित पंक्ति मिल जाति है :- ''कविता विव `क एक नहिं मोरे''। धुरन्धर अर्थकार अर्थ करते हैं कि उन्होंने (तुलसी ने) अपने कविता-विवेक को कहीं से मोड़कर नहीं रखा है, अपितु उसे सन्निकीर्ण किया है। कोई परखना चाहे, तो परखकर देख ले। समसरणी पर कविवर 'नलिन' की पंक्ति :- 'कवित विवेक .... एको नाहीं' अर्थ प्रदान करती है कि हे सरस्वती माँ! हमने ('नलिन ने') एक भी कविता-विवेक ऊन (एक ऊन) करके नहीं रखा है, बल्कि जो भी कविता के सुंदर रस-वर्षण विधान में विहित है, उसे सन्निविष्ट किया है। नहीं तो वाच्यर्थ की धारा यहीं पर पूरे संग्रह से गुजरने से अवरूद्ध कर देता है। किंतु सचाई है कि यहाँ 'नलिन' तुलसी से आत्मान्तरण कर धन्यता प्राप्त करता है और मगही कवियों में अनौपम्य।

कार्पण्यभक्ति में भक्त कवि पूरे नकार के साथ उल्लसित, हर्षित रहता है। कवि 'नलिन' भी यहाँ इसीलिए निषेध की दुनियाँ से गहरी प्रीति रखता है। 'सतरंग' फूल खिलल हे' मगही कविता-संग्रह कविता-विवेक की शर्त पर कवि के समग्र कविता-विवेक का परिचय प्रस्तुत करता है। इसमें दो राय नहीं।

अनुप्रास-प्रियता कवि की निसर्ग प्रकृति है। समग्र संग्रह से गुजरने के बाद यह बात स्वतः स्पष्ट है। अक्षर-समाम्नाय से साक्षात्कार में कविता सर्वोच्च शिखर छू लेती है। पश्चात् शब्द-अर्थोद्भावन अथवा भावलोक की सृष्टि संश्लिष्ट होती दृष्टिगोचर होती है। कवि 'नलिन' ने अक्षर-समाम्नाय का साक्षात्कार किया है। उसने अपने आत्मालोक में उसे मंडित भी किया है। कवि सरस्वती-स्तुति न लिखकर सरस्वती-वंदना लिखता है, अपनी निसर्ग प्रकृति के विरूद्ध। कारण कि उसे अर्थ लोक से लेकर भावलोक तक अपने को परम सिद्धि का स्वामी घोषित करना है। पक्के, सिद्ध अर्थ का साक्षात्कार करना अधकचरे कवि के बलबूते की बात नहीं। स्तुति में सिर्फ कीर्तिगायन होता है, स्तु+क्तिन्। यह धातुजन्य अर्थ ही नहीं, अर्थजन्य भी है। किंतु वंदना में कीर्तिगायन तक ही नहीं ठहरता, उसकी व्याप्ति में अर्चन-पूजन भी अर्थभूत हो जाता है। यह भक्ति की सघन स्थिति है। इसलिए कवि 'नलिन' सरस्वती की मात्र स्तुति तक नहीं ठहरता। वह वन्दना की भावभूमि पर विचरण कर अपनी सान्द्र भक्ति का द्योतन करता है। सरस्वती-वन्दना के स्थान पर कवि बानी-वंदना (वाणी-वन्दना) शीर्षक भी रख सकता था, किंतु अनुप्रास मोहभंग करके उसने ऐसा साभिप्राय किया है। एक तो मगही की बोलचाल-भाषा में सरस्वती शब्द ही यत्किञ्चित् हेरफेर के साथ मौजूद है। यह ध्यान रख, अपर सरस्वती में 'सरस्' धातुगत अर्थ में जो रस-द्रवता है, उसका भी ध्यान। वाणी में 'वण्' धातु होने से शब्दायित होने के अतिरिक्त दूसरी अर्थ-व्यंञ्जना संभव न थी। इसलिए कवि 'नलिन' एक सिद्ध रचनाकार की हस्ती रखता है, यह मगही कवियों में संदेश भेजता है। सरस्वती समानार्थक अनेक शब्द हैं :- ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।'' कवि 'नलिन' की सरस्वती वाणी-महारानी है। उसकी महिमा अपरम्पार है। शंभु और विरंच जिसके गुण कीर्तन करके पार नहीं पाते।

शंभु सहस्रसंज्ञाधारी हैं। उनमें सर्वाधिक समीचीन कवि को अपनी भावधारा के अनुकुल शंभु शब्द लगता है। कारण कि इस संज्ञा में मंगल का भाव प्रच्छन्न है। वाणी महारानी की मंगलविध ायिनी कृतियाँ अनन्त हैं। उनका गायन शंभु के सिवा कौन सा करता है?

निष्कर्ष, मंगल पर मंगल विधान करने वाले शंभु हैं और रच-रचकर गान करने वाले का नाम विरंचि है। ये दोनों अगर संग-संग संगायन करें, तो भी सरस्वती की गुणगाथा का गायन कर पाना संभव नहीं। गाते-गाते थकलन शंभु और विरंचिदेव/गाहु नहीं पयलन जानत जहान हे/

शब्द-अर्थ की सम्पृक्ति में कविता का पूरा आँगन खुलता है। कालिदास कहते हैं - वागर्थाविव सम्पुक्तौ। तुलसी भी कहते हैं - गिरा अरथ जल बीचि सम............/ कवि 'नलिन' के पूरे कविता-संग्रह में से कहीं से भी कोई पंक्ति बाँचकर देख लें। आपको जितनी सुघड़ता शब्दों में मिलेगी, उतनी ही अर्थ में भी। सुप्रयुक्त शब्द अर्थ की तीव्र ऊमियाँ उठता है और दीप्ति में एक से बढ़कर एक।

कविता में एक द्वार होता है, जहाँ शब्द और अर्थ में मीठी गलबाँही होती है, जहाँ कविता का अंतर्लोक उमंग और उल्लास में चिरोर्जस्वित होता है। यहीं कविता कविता होती है। गीत में केवल गीत नहीं होता। उसमें भी कविता का भोग होता है। सच तो है कि कविता एक जातिवाचक संज्ञा है जिसके गर्भबाह्य गीत नहीं होता। गीत पर गौर करें, तो वह अपनी शीर्ष परिणति पर मुक्ति का मंत्र है, कविता को क्या इससे इनकार है? दोनों महत् उद्देश्य के मिलन-बिंदु पर एकमेक हैं। इसी अभिप्राय के परिपाक के लिए कवि ने अपने सुष्ठु संग्रह 'संतरंग फूल खिलल हे' (प्रकाश-विशाल पब्लिकेशन, कैलास मार्केट, पटना-800001) में गीत और कविता का सम्मोहक सन्निवेश किया है।

'संतरंग फूल खिलल हे' बहुविध अर्थव्यापी, अनेकार्थ-व्यञ्जक शीर्षक है। एक तो अर्थ देता है कि इस संग्रह में कोमल भावनाओं की बहुकोणीय व्यञ्जना है, अपर कि इसमें संतरंग फूल खिले हैं अर्थात् सात रंगों वाले फूल खिले हैं। रंग तो सात ही कहे गए हैं, - बैनीआहपीनाला (बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी,

और लाल)। कवि 'नलिन' को इन रंगों की पक्की पहचान है। उसकी चेतना इन रंगों के प्रति सजग है। इन्द्रधनुष में समग्र रंगों की एकत्र संस्थिति होती है। कवि इससे अनभिज्ञ नहीं। वह संग्रह के 27 वे पृष्ठ पर लिखता है,- खिलल गगन इन्द्र-धनु रंग-बिरंगा रे। 'इन्द्रधनु' सतरंग को प्रतीकित करता है। नीले रंग की चंतना जतलाने के लिए कवि लिखता है- नील फूल के सोभा से ई तीसी दमक रहल हे। पृष्ठ 96 पर नील रंग की पहचान में कवि ने लिखा है :- नील पटोर बीच ललना के नव अधअंग खुलल हे/घन के वन मानो बिजली के सतरंग फूल खिलल हे/ कविश्रेष्ठ प्रसाद जी ने श्रद्धा के सौंदर्य को चौकियाते हुए लिखा है - 'नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग, खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग। ''प्रसाद पूर्ववर्ती हैं और अनुवर्ती है 'नलिन'। अनुवर्ती अभिज्ञ है, अनभिज्ञ नहीं कि हिंदी के बहुसंख्य पाठकों के कंठों में उपर्युक्त पंक्तियाँ अपने बिम्ब की चारूता के करण रच-बस गयी हैं। उसके बावजूद 'नलिन' ने ललना के लालित्य-बोध के लिए उसी बिम्ब को निर्भीकता से वरण कर लिया है। नोटिस में लें, तो ध्यान में आएगा कि कविता में अर्थ का घनत्व पैदा करने के लिए भाषा का कसाव चाहिए। प्रसाद के 'सकुमार' और 'मृदुल' दोनों विशेषण यहाँ वहिष्कृत हैं। इसके साथ एक शब्द 'बीच' को भी अतिरिक्त करार दिया गया है। प्रसाद का ध्यान-केंद्रण गुलाबी रंग पर था, किन्तु 'नलिन' ने इस केंद्रण को तोड़ा है और उसे सतरंग में विकेन्द्रित किया है। इस काव्य-कौशल के लिए मुँह से अनायास निकल पड़ता है,-

बैगनी और आसमानी रंग नील रंग के निकट के रंग है। हरे रंग की पहचान में कवि ने लिखा है - हरियर हरियर धान कि कोना-कोना रे अथवा आर-पार धरती में फैलती हरियाली के दरिया/ पीत वर्ण की परिचिति में कवि 'नलिन' की पंक्तियाँ हैं- सरसों के साड़ी में सुत्थर जड़ी नखत के काढ़ल/ कि पीत पात में झरल इहाँ अजब अतीत हे/ सरसों के पीअर सड़िया में धरती चहक रहल हे/ रक्त वर्ण के प्रति सम्पृक्ति कवि की इस प्रकार है- झकझक झलमल टेसू लेखा लाल किरन पसरल हे/ कि दुख के इंगोरा नियर लाल टहटह (पृ॰-30)/ सोह रहल लाली भर लुहलुह हर मुठान के कोंपल/ नव परास सेनु से सोहे भरल माँग धरती के (पृ॰-34)/ कि लाल-लाल फूल के खिलल इहाँ पलास के कि बाग औ बगान में गुलाब लाल-लाल हे (पृ॰-34)/ कृष्ण वर्ण के प्रति 'नलिन' का वाक्पुष्प है - कटई न काटे सून सेजरिया सगरो कार अँधिरिया/ भारतीय आचार्यों के अनुसार मूल रंग केवल पाँच हैं - श्वेतो रक्त स्तथा पीतः कृष्णो हरितमेव च मूलवर्णा: समाख्याता: पञ्च पार्थिवसत्तम।

संग्रह के 34 वें पृष्ठ पर 'बसंत' कविता है। यह रंगचेतना की चित्रशाला है। यह कविता, वास्तव में, चित्र-संगीत की मनोरम छवि-शिखा से संपूर्ण है। मगही कवियों के कैलेंडर को नोटिस में लेने पर यह अकेली कविता कवि 'नलिन' को उनके बीच अग्रध्वज सिद्ध करती है - रंगतत्त्व की दृष्टि से।

कविता ने अपने पथ पर अकथ और अथक यात्रा की है। कवि इसका जाग्रत पहरुआ रहा है। रचना के दौरान रचनाकार का स्रष्टापक्ष मुखर एवं मुख्य रहता है। ध्यान रखना होता है कि समग्रता में दोनों के मध्य सुष्ठु संतुलन रहे। कवि 'नलिन' का स्रष्टापक्ष कर्मचेतना की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करता है कि जैसा बीज वपित किया जाता है, वैसा ही फल लथर लाता है - जइसन बीआ बुने खेत में तइसन ही फल आवे/इस क्रम में कवि की यह भी स्थापना है कि शुभशुभ कर्म के फलभोग अवश्यमेव प्रकट होते हैं - ई जिनगी से ऊ जिनगी में करम सुभासुभ धावे (अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभशुभम्।)। किंतु स्रष्टापक्ष पर द्रष्टापक्ष का पतन कितना प्रीतिकर है, यह देखिए-सिद्धि के सदन सुभ अनुकूल होके आज। 'नलिन' के जिनगी के फूलवा खिलावहु (हनुमान, पृष्ठ-102)। दरअसल स्रष्टापक्ष पर द्रष्टापक्ष का पतन कई कारणों से होता है। उनमें एक कारण उसकी ध्मतमकपजंतल है। यह उसके व्यक्तित्व का अंतर्विरोध है, विसदृशता विसंगति है। तुलसी साहित्य में उतरकर देखें, तो तुलसी की भी यही स्थिति दृष्टिगोचर होती है - धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपुत कहौ, जुलहा कहौ कोउ/ काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब, काहू की बिगार न सोऊ/ यह तीव्र घृणा जातीयता के प्रति तुलसी की है, किंतु वही तुलसी आदर्शवादी मनोवृत्ति का शिकार होकर कहता है - ''पूजहिं विप्र सील गुन हीना, सुद्र न गुनगन ग्यान प्रबीना।।''

कविता- विवेक के अन्तर्गत विषयवैभव का विभावन महत्त्वपूर्ण होता है। प्रथम आकर्षण और अनुरंजन इसी से होता है। 'नलिन' के यहाँ धूप, फेड़, निरमान, बदरा, भोर, ओरी, अगम कहानी, अकाल, बरखा, बसंत, समाजवाद, बसंतबहार, बसंती सोभा, भिखारी, सबरी, मुआर, ब्रह्मधाम, प्रममगन, कजरीवन, धरती, नेह-निछाउर, गरमी, अंतरजामी, साँझपरी, नगराज हिमालय, किसान, सावन, पुकर, निहोरा, बेटी, प्रेम-दिया, तथागत, मधुवन, ललन, ऊसा, हनुमान, दान, दहेज, ठनका, पूनम, मन, काल, जमुना, होली और करम विषय कविता के बाँधन में बँधे हैं।

'धूप' ब्वदजतेंजपदह ैजंजमउमदज की कविता है। इसमें ब्वदेजतेंजपदह की भित्ति धूप पर केंद्रित है। यही शब्द प्राणन रूप है इस कविता में। फेड़ (पेड़) सृष्टि के कंगलविधान में सहायक है। परहित उसकी चेतना का सार-सर्वस्व है। ध्वन्यर्थ कि समस्त जीवों में प्राण-प्रचोदन करने वाला यह वधिक के हाथों न पड़े। उकी रक्ष हर कीमत पर होनी चाहिए। 'निरमान' में धरती को स्वर्ग बनाने का सपना संजोया गया है। 'बदरा में कवि 'नलिन' ने एक रिपोर्टर की हैसियत रखी है। रिपोर्टर शब्द-चित्र उकरने और संगीत में माहिर है, यह सिद्ध है। भोर में कवि की द्विविध मनोदशाएँ व्यञ्जित हैं। एक छोर पर यह जीम ेचपतपज वा मदरवलउमदज दक कमेपतमध ।दक ीवचमे दक ीेमए तिवउ ेस सपअपदह जीपदहे की कविता है, दूसरे छोर पर पराजित पुरुषार्थजन्य विधि-विपाक की कविता है। ओरी में बदरिया की नुक्का-चोरी वर्णित है। यह चितवन की डोरी बाँधने में सक्षम है। अगम कहानी जेंदो दवज ीमंअमद उपे की कविता है। अकाल में कारण-कार्य की पैनी तस्वीर है। प्राणि-जगत् अकालजनित दारूण

व्याकुलता शिकार है। यहाँ तक कि जड़ प्रकृति पर भी उसकी काली छाया है। दिल दहलाने वाले विम्बों की सर्जना इस कविता की बड़ी खासीयत है 'बून पड़ल न पानी के' यह कारण-काव्य है और 'छछनल हे बैला के जोड़ी/ रिकटल हे ई सानी के जैसे मर्मस्पर्शी कार्य-वाक्य कई आये हैं इस कविता में। बरखा में चित्र-संगीत का सौन्दर्य है। बसंत कविता की पृष्ठ-03 पर चर्चा हो चुकी है। समाजवाद कविता में 'नलिन' ने समाजवाद की फलश्रुतियों का वर्णन नहीं किया है, बल्कि उसके अंधे पार्श्व में घटित विखण्डित मूल्यों की वर्णना की है। कलिकाल के ग्रहण से समाजवाद में नकारात्मक आचरण हो रहे हैं, ऐसी स्थापना है कवि की। बसंत बहार में बसंत झरल इहाँ पुरान हे खिलत नया बिहान हे' के रूप में चित्रित है। बसंती सोभा में बसंत को ऐसे बाजीगर के रूप में चित्रित किया गया है जो शोभा की नगरी रच देता है। कवि इस विडम्बना की ओर भी ध्यान खींचता है कि मध ुमास रुचिर रूप-चितेरा हे, किंतु करील उसके प्रभाव से अछूता है- ई मधुमास कि जे सब के रूप चितोरा/ पर करील के सजा न पइलक विधि के लगलई फेरा (पत्र नैव करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम्?) भिखारी कविता में भिखारी के कर्म और स्वरूप की पहचान करायी गयी है और उस भाग्य विधाता की तलाश भी जिससे दारिद्य मिट सके। उसके आस-पास लगे मेले की संस्कृति से उसका उपचार नहीं। सबरी में रविराम के प्रति सबरी की अनन्य रति का वर्णन प्रस्तुत है। मुआर शब्दचित्रसिद्धि की कविता है। मुआर हो तो फूल की बहार नहीं और फूल की बहार हो, तो मुआर नहीं। दोनों में वैपरीत्य संबंध है। मुआर की नुकीली तस्वीर बनाने के लिए कवि ने लिखा है - उपहल फूल बहार। टेंस (ज्मदेम) आधुनिक कविता में प्रयुक्त हो रहा है। तनाव (ज्मदेम) से प्रभाव पैदा किया जाता है। मुआर में मुआर का शब्द चित्र खड़ा करने के लिए इस तनाव को औजार बनाया गया है,- ऊपर अँइठल बदरा नीचे धरती पड़ल दरार/ 'ब्रह्मधान' में राम का ब्रह्मत्व वर्णित है और उसकी शरणागति से दुखी जीव के ठौर पाने की घोषणा की गयी है,- दुखिया तो ठौर पावे तोहरे सरन में/ प्रेम-मगन में मिलन की अदाओं के छंद रचे गये हैं,- बतिया में रतिया कट गेलइ, छंद मिलल जे जे चहलन हे/ कजरीवन के व्याज से सुख-सदन का सम्मोहक संसार खड़ा किया गया है। इस कविता में कवि की काव्यात्मक साधुता के दर्शन होते हैं। धरती में मेघ को धरती का बालम कहा गया है। फिर उनके विरह-मिलन का छंद रचा गया है। 'नेह-निछावर' में नेहाभाव के कारण विसंगत होते रिश्तों की तल्खी उकेरी गयी है- ई समाज ढाँचा के ठठरी टूटल औ भाँगल हे/ बिन पतवार रचित के नैया हावा में टाँगल हे/ 'गरमी' को विकेड (ॅपबामक) रूप में चिह्नित किया गया है,- गरमी अथोर भोर तक सतावे रोज। 'अन्तरजामी' कविता अखिलान्तरात्मा प्रभु की कण-कण में प्रतिष्ठा के साथ यह प्रार्थना है कि कविमन को कंचन कर दे,- कामादिदोषरहितं कुरू मानसं च। 'साँझपरी' निराला की 'संध्या' की अदा पर लिखी गयी कविता है। 'नगराज हिमालय' में कवि 'नलिन' ने हिमालय को सर्वप्रथम नगराज फिर उसे शंकर का अधिवा, धरती का मानदंड, भू का वरदान, गौरी पार्वती का क्रीडाक्षेत्र, देश की गरिमा, महिमा तथा ज्योति से पूर्ण धरती का जीवन कहा है। किसान शीर्षक से दो कविताएँ है। इन दानों में किसान के अलग-अलग बिम्ब हैं। एक में किसान बालू सड़ाकर मोती उगाने वाला है। उसकी घरवाली तितली बनके घर में कुरच-कुरच रहती है- बालू सड़ल झरल हे मोती गिनती में सुख पइली........... तितली बन के कुरच रहल हे घर-घर में घरवाली। दूसरी कविता में किसान गरमी की हाला पीने वाला है, उसके पैरों में फफोले पड़े हैं। पूरे चित्र से गुजरने पर यह पता होता है कि कवि जिसे किसान कह रहा है, अपनी कूबत से धरती को स्वर्ग बनानेवाला कह रहा है, वह खस्ताहाल खेतिहर है- फटल विवाई हे गोड़ा में]]] धइले लगना हाथ अरौआ ले सिरौर के झाँके/ सावन में शब्द-सौंदर्य और रम्य अर्थ की त्रिवेणी है। पुकार में आवागमन-चक से छूट जाने की देव से पुकार है। 'निहोरा' में कार्पण्यशरणागति भक्ति की मधुर अभिव्यञ्जना है। बेटी में बेटी के प्रति गलत अवधारणा पर चुटीला प्रहार है और कुप्रथा को हटाने का भी संकल्प। प्रेम-दिया दिलकश दीवानी है। तथागत में तथागत के उलट मूल्यों की विवृतोक्ति है- भाँग पड़ल इनरा में सँउसे जुग पी के मातल हे/ मधुवन में मधुवन का वर्णन चलबिम्बों के माध्यम से किया गया है। यौवन के साथ उभरी, भरी ललित का वर्णन परम्परित उपमानों द्वारा यह सिद्ध करता है कि उपमान कभी बासी नहीं पड़ते, चाहिए सिर्फ कलात्मक 'ऊसा' क्षितिज तुल्यकक्ष की कविता है। क्षितिज जिस प्रकार धरती और आसमान को गलाबाँही देता दृष्टिगत होता है, किंतु विदित है कि यह आभास मात्र है, वास्तविकता नहीं। ऊसा भी कभी कविश्रेष्ठ जयशंकर प्रसाद के पार्श्व से लिखी गयी कविता प्रतीत होती है, तो कभी आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के पार्श्व से। ऐसी झूठी आभासिक स्थिति में मौलिकता कवि की बरकरार है। इसमें उषा की अलंकृत उपस्थिति से इनकार नहीं। उष/ ऊषा दोनों प्रचलन में है। इन्ही का तद्भव ऊसा है। उषा का अर्थ है जो अंधकार को जला दे- ओषत्यंधकारम्। कवि ने इसी अर्थ- पोषण हेतु लिखा है- कंचन के गगरी ले ऊसा पूरब में मुसकायल/सोना जइसन किरन मनोरम धरती पर छितरायल/ हनुमान बाल ब्रह्मचारी हैं, ध ीर वीर-महावीर हैं। रुद्र के अतुल अवतार, सिंह के समान विकराल हैं। सिद्धि-सदन और करुणा-निधान हैं। रामचन्द्र बाबत चकोर हैं। सीता के शोक को दूर करने वाले हैं। मैया अंजना के लाल हैं। सब के पिता, बंधु और सखा हैं :- .... च पिता त्वमेव/त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव/ भाई बाप बंधुमीत तू ही के। अतः अन्तिम में कवि 'नलिन' शुभ्र विचार स्थापित करते हुए कहता है-करुनानिधान हनुमान के ही जाप/ मनमा के भगति के गंगा बहावहु। चान कविता में चाँद-चाँद है। दहेज दानव बनकर समाज का अवमूल्यन कर गया है। अतः उसे हटाने की सत्प्रेरणा दी गयी है, इस कविता में। ठनका में ठनका के नकारात्मक और साकारात्मक दोनों पहलुओं को रखा गया है। एक ओर का बिम्ब है, - चूम रहल नदिया के सागर/तो दूसरी ओर है,- सुधर चोंच

में नाल कमल के धइले हंस उड़ल हे/ 'पूनम' एक साँस में लिखी गयी कविता है, चवदजंदबवने वअमतसिवू वि चवूमतनिस संद. हनंहमण 'मन' में सपाटबयानी भी है और काव्यात्मक कथन भी। गीता में अर्जुन ने कहा है कि कृष्ण! मन बड़ा चञ्चल है, प्रमथन स्वभाव वाला है, बड़ा दृढ़ और बलवान है। इसलिए उसका वश में करना मैं वायु की भाँति अति दुष्कर मानता हूँ- चञ्चल हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम/ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्/ 'नलिन' मन के संबंध में कहता है :- पारा के जइसन ई बिखरल/ बानर के जइसन ई भटकल/ कहियो रूप न निखरल एकर/ कठिन बनल है बाना जेकर/ 'वायोरिव सुदुष्करम्' की जगह पारदस्येव सुदुष्करम् अथवा 'मर्कटस्येव सुदुष्कम्' नये बिम्ब हैं। 'काल' में आत्मनिष्ठता (नइरमबजपअपजल) है। इसके साथ काल को बहुकोणीय अर्थ दिया गया है,- जैसे समय, मृत्यु प्रभृति। मृत्यु (यम) रूप है- सोना जइसन अव्वल दिन के/खा गेइल हे काल/ 'समय' अर्थ में कविता का आरंभ ही है। 'जमुना' कविता में यमुना आधार है और आधेय है- देह-देही (राधा-कृष्ण) के गूढ़ प्रेम का व्यञ्जन। निराला के लिए यमुना प्रश्न-कथा है,- बता, कहाँ अब वह वंशीवट/ कहाँ गये नटनागर श्याम/ चल-चरणों का व्याकुल पनघट/ कहाँ आज वह वृन्दाधाम? किंतु, कवि 'नलिन' के यहाँ आकर यमुना प्रश्नकथा से उत्तरकथा हो गयी है। कोई कहना चाहे, तो कह सकता है कि वह (यमुना-जमुना) देही-देही (राधाकृष्ण) की प्रेम कथा हो गई है, जो सगुण-निर्गुण के बीच सम्मति है। होली रति-गीत है, प्रीति-गीति है। राग-रंग की सुघड़ अथिव्यक्ति है। 'करम' में यथा कर्म तथा फलम् का प्रतिदिन है-जसन बीआ बुने खेत में तइसन ही फल पावे। इस कर्म का प्रचेता मन है। कठोपनिषद् में मन को लगाम कहा गया है - मनः प्रग्रहमेव च। 'नलिन' के शब्द बाँचे- करम धरम के अगुआ मन हे मन ही नाच नचावे।

गीत आत्मद्रव की सघनता है। गर्चे गेयता लय, ताल, राग के संयोग से सम्पन्न हो जाय तो गीत गीत हो जाता है। कवि 'नलिन' के गीत गीत -तत्त्व की दृष्टि से सर्वविधि रूप में खिलते-खिलते है। कवि के आत्मसंघर्ष के द्रव्य गीतों में सहज ही छलक आये हैं - मिलल न कहियो ठौर ठिकाना/ जिनगी भर सुनली हे ताना। गिरली दर दर खाके ठोकर/ कटँवा गड़ गड़ सूले/ 'सूले' क्रियापद में सशक्ता है कि कलेजा मुँह को आ जाता है। क्रिया का ऐसा पैनापन मगही कवियों में विरल है। एक और उदाहरण - कभी न पइलूँ रेन बसेरा। जिनगी में नैं भेल सबेरा। घेरलक आज भँवर के घेरा/ मनना हरदम हूले/ हूले क्रिया नुकीलापन नोटिस में लेने लायक है। कितना मर्मतोड़क है।

गगन के आँगन में............. और बरखा, आज तथागत आवऽ तथा तथागत, संग पिया के खेले होली और होली 'कइसे करब सगाई' और दहेज, धीअन के हुलसावऽ और 'बेटी' जैसी गीत-कविताओं से गुजरने पर पुनरावृत्ति-दोष स्पष्टतः प्रतीत होने लगता है, किंतु कैमरा-पद्धति पर जीवन-खण्ड के चित्रण के लिए यह आवश्यक हो जाता है। प्रत्येक छायाचित्र का एक विशिष्ट विन्यास, अपनी पृष्ठभूमि होती है। अतः गीत-कविता का विषय एक होने पर भी मुद्रांकन अथवा अदा के निष्कर्ष में अलग-अलग ध्वनि के साथ एक विशेष सौंदर्य की सृष्टि हो जाती है। अतः कविवर 'नलिन' इस दृष्टि से नमस्य हैं और कैमरा-पद्धति से मगही गीत कविता-लेखन में अनूठे।

उपाचार्य, हिंदी-विभाग,
राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काजीपुर, पटना-4

वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन

विगत दिनों हिंदी भवन में वाइस ऑफ सिटीजन पंजी. व वरिष्ठ नागरिक पत्रिका परिवार के संयुक्त तत्वावधान में तृतीय वरिष्ठ नागरिक सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। डॉ. योगानन्द शास्त्री (अध्यक्ष दिल्ली विधानसभा) ने दीप प्रज्जवलित कर समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। उद्घाटन पश्चात् अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जो भी अपने माँ और बुजुगो की सेवा करता है उसे स्वतः आयु, विद्या, यश और बल प्राप्त होता है। समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री राम सिंघल ने वृद्धों की लगातार हो रही हत्याओं पर चिंता जताई। समारोह में पूर्व मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना ने वृद्धों की समस्या एवं संघर्ष में अपने को हर समय उपलब्ध रहने का आश्वासन भी दिया। समारोह में वृद्धों में होने वाली शारिरीक समस्याओं में सहभागिता के लिए हृदय रोग विशेषज्ञ पद्म श्री डॉ. के. के. अग्रवाल, प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल अरोड़ा ने अपने अनुभव एवं जानकारी उपस्थित वृद्धजनों को अवगत कराया।

समारोह में राजस्थान से आयी कवयित्री डॉ. कविता किरण ने अपनी सुंदर मधुर आवाज में ग़ज़ल प्रस्तुत कर लोगों को भावुक कर दिया।

समारोह में वरिष्ठ नागरिक आवाज पत्रिका के सम्पादक श्री सरदारी लाल ने सरकार से सन् 1999 में बनी राष्ट्रीय वृद्ध नीति को जल्द से जल्द क्रियान्वित करने का आग्रह किया।

समारोह में सभी आगत अतिथि को शाल व पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया।

प्रस्तुति - प्रो. पी.के. झा 'प्रेम'

राष्ट्रीय विचार मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन

मंच के वरिष्ठ सदस्य डॉ. शास्त्री की अध्यक्षता एवं डॉ. बी.एन. पाण्डेय के पर्यवेक्षण में मंच की नियमावली की कंडिका 5,8,9 एवं 17 में प्रदत्त प्रावधानों के तहत विगत 17 फरवरी 2011 को अपराह्न 2:00 बजे अनुव्रत भवन दिल्ली के प्रांगण में आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच की आम सभा की बैठक ने वर्ष 2011-2014 के लिए मंच की नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए :-

क्र सं.	पदनाम	नाम	पूरा पता	दूरभाष
1.	अध्यक्ष	डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम	7च/2, जवाहर नगर, जयपुर-4 (राजस्थान)	0141-2650937
2.	कार्यकारी अध्यक्ष	डॉ. सोमेश्वर दत्त शास्त्री	कोशाम्बी, वैशाली (यूपी.)	
3.	उपाध्यक्ष	डॉ. हरी सिंह पाल	आकाशवाणी, दिल्ली	
4.	उपाध्यक्ष	डॉ. बाल शौरि रेड्डी	27, वडि वेलोपुरम, माम्बलम, चेन्नई	
5.	उपाध्यक्ष	डॉ. एस. तंकमणि अम्मा	केरल	
6.	उपाध्यक्ष	डॉ. साधु शरण	रोड नं.-1, आदित्य नगर, पत्रा. केशरी नगर, पटना-24	0612-2287204
7.	उपाध्यक्ष	डॉ. सोमदत्त शर्मा 'सोम'	बी-97 आनन्द विहार, दिल्ली-92	9953322541
8.	उपाध्यक्ष	डॉ. बी.एन. पाण्डेय	अणुव्रत भवन नई दिल्ली-2	9350817138
9.	राष्ट्रीय महासचिव	श्री सिद्धेश्वर	'दृष्टि' यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92	011-22530652
10.	सचिव	प्रो. पी.के.झा 'प्रेम'	डी-86/ए, गणेश नगर, काम्प. पांडव नगर, दिल्ली-92	9213102432
11.	कोषाध्यक्ष	मो. अनिकुर रहमान	महेश पट्टी, उजियारपुर, समस्तीपुर (बिहार)	7631794169
12.	संयुक्त सचिव	श्री संजय सौम्य	ई-2, बृज बिहार, गाजियाबाद (उ.प्र.)	0120-2893448
13.	प्रचार सचिव	डॉ. मोदिनी प्रसाद राय	73/12, पुष्प विहार, साकेत, दिल्ली-17	9899464844
14.	अध्यक्ष (युवा कोषांग)	संजीव कुमार	डी-124, साउथ गणेश नगर, दिल्ली-92	9911916611

कार्यकारिणी सदस्य

क्र सं.	नाम	पूरा पता	दूरभाष
1.	डॉ. ब्रह्मचारी सुरेन्द्र (पूर्व कुलपति)	पाटलीपुत्र कॉसानी, पटना-बिहार	
2.	श्री ईश्वर गोयल (पूर्व पार्षद)	304 जेएमडी हाउस, 4378/4बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-2	9811758076
3.	श्री मानवेन्द्र कुमार (पत्रकार)		8860609257
4.	डॉ. राजशेखर (जेएनयू)	200ए मुनिरिका, नई दिल्ली-67	9289931323
5.	प्रो. चंद्रशेखर सिंह	अशोक नगर, तिलक नगर	9818662341
6.	प्रो. धर्मवीर गुप्ता	नोएडा, उ.प्र.	08010530101
7.	प्रो. मनोज कुमार	412, जी. ब्लॉक, तृतीय तल, टाइप-2, से.-4,, तिमारपुर, दि.-54	9350166616
8.	श्री अलख नारायण झा (प्रधानाध्यापक)	संस्कृत उच्च विद्यालय, निर्मली, सुपौल, बिहार	
9.	प्रो. अरूण कुमार भगत		9818387111
10.	श्री निर्मल दूबे		
11.	प्रो. अंजना चौबे	2613 शादीपुर, मेन बाजार, वेस्ट पटेल नगर न.दि.-8	9868901060
12.	श्री अजय कुमार (अधिवक्ता)	बी-एच. (पूर्व) 406 प्रथम तल, शालीमार बाग दि.-88	9868543232
13.	डॉ. प्रसुन्न झा	ई.-20ए, गणेश नगर, नई दिल्ली-92	9899000992
14.	अशोक प्रियदर्शी (सह संपादक इंडिया न्यूज)		9811128964
15.	श्री गोपाल प्रसाद (पत्रकार)	साकेत ब्लॉक, मंडावली, दिल्ली	9540650860
16.	कुमारी शैलजा सिंह (कवयित्री)	ए-419, नेहरू विहार, नई दिल्ली-54	9560187689
17.	डॉ. शाहिद जमील	सी-6 पथ सं.-5, आर ब्लॉक, पटना-1	9430559162
18.	श्री सुधीर रंजन	यू-207 विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92	
19.	श्री जितेन्द्र धीर सम्पादक 'शब्द संस्कृति'	कसकला	

20.	डॉ. मिथिलेश दीक्षित		
21.	डॉ. कुसुम लुनिया	बी-100 सूर्य नगर, गाजियाबाद	
22.	श्री अतुल कुमार (संपादक, धन्यवाद)	7 यू. एफ. शफदर हासमी मार्ग, नई दिल्ली	011-23711306
23.	श्री राज भास्कर जी	सी-1/20 आई. ए. कॉलोनी, वसंत विहार, नई दि.-57	
24.	श्री अमिताभ रंजन पायलट, इंडियन एअर लाईन	दिल्ली	
25.	श्री सुरजीत सिंह जीवन		
26.	प्रो. एच. के. चौधरी	एस.के.आर. महा. सरायरंजन, समस्तीपुर, बिहार	9431897497
27.	श्री दीपनारायण चौबे	2613, शादीपुर मैन बाजार, वेस्ट पटेल नगर, दि.-8	9868901060
28.	श्री रमेश कुमार मंडल	कटिहार (बिहार)	9386859599
29.	श्री एल. आर. भारती	अनुव्रत भवन, नई दिल्ली-2	
30.	श्री उपेन्द्र नाथ		
31.	डॉ. मणिकांत ठाकुर	ए-118, लोहिया नगर, गाजियाबाद-201001	9873261746
32.	श्री नागेश	5-2, 6/115ए वैशाली गाजियाबाद	9971972629
33.	प्रो. रणधीर कुमार सिंह		
34.	प्रो. मनोज कुमार सिंह	23/2, इन्दिरा विकास कॉलोनी, नई दिल्ली-9	9810716872
35.	प्रो. जी झा	पालम गाँव, नई दिल्ली	09818873791
37.	श्री अरविन्द कुमार 'पप्पु'	शकरपुर, नई दिल्ली-92	
38.	श्री सतेन्द्र कुमार	शकरपुर, नई दिल्ली-92	
39.	मुकेश कुमार चौधरी	दलसिंह सराय, समस्तीपुर, बिहार	09939639023
40.	संजीव कुमार सिंह (इण्डो न्यूज)	लाजपत नगर, नई दिल्ली	9810678523
41.	दीनबन्धु सिंह (पत्रकार)	पाण्डव नगर, नई दिल्ली	9911073655
42.	राजन जायसवाल	डी-385, ललिता पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92	011-43082
43.	प्रो. अतुल कुमार सिन्हा	शास्त्री नगर, नई दिल्ली	9868002781
44.	श्री निरंजन कुमार सिंह	गणेश नगर, पाण्डव नगर काम्पलेक्स, नई दिल्ली	
45.	प्रो. चन्दन पोद्दार	इन्दिरा विकास कॉलोनी, नई दिल्ली-9	9891014932
46.	श्री शांति कुमार जैन	क्यू-16, मॉडल टाऊन, दिल्ली-9	9811225575
47.	प्रो. यू.सी. शर्मा	डब्ल्यूए-156, शकरपुर, दिल्ली-92	9810801847
48.	जगदीश कामथ	ग्राम/पोस्ट चुरयारी, भायाफुल बारात, जिला- मधुबनी, बिहार	9006559429
49.	सरदारी लाल (सम्पादक) वरिष्ठ नागरिक आवाज	दिल्ली-92	
50.	साजीद हयात	606, ग्रेट चन्द्रा अपार्टमेन्ट, पटना	9525053339

मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर मंच के प्रमुख पत्र विचार दृष्टि के पदेण संपादक एवं डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम को संपादकीय सलाहकार एवं मंच के राष्ट्रीय सचिव प्रो. पी.के.झा 'प्रेम', राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अनिकुर रहमान, युवा कोषांग के अध्यक्ष संजीव कुमार को पत्रिका परामर्शी के रूप में शामिल किया गया तथा बाकी बचे पदों पर मनोनयन का अधिकार नई कार्यकारिणी को प्रदान किया गया। सभा के अन्त में प्रो. पी.के.झा 'प्रेम' के धन्यवाद ज्ञापन के साथ आभार व्यक्त किया।

हा./

डॉ. बी.एन. पाण्डेय
निर्वाचन अधिकारी

सच्चा देशभक्त वही है जो देश हित में काम करे : सोलंकी

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 115 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में देशभक्त से परिपूर्ण कार्यक्रमों से सारा वातावरण भावनापूर्ण हो गया । मधु विहार के सोलंकी मार्केट स्थित प्रांगण में नेताजी की 115 वीं जयन्ती के आयोजन में पालम विधान सभा के हजारों लोग विद्यमान थे ।

सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित दक्षिण दिल्ली के सांसद श्री रमेश कुमार जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण किया एवं उपस्थित जन समूह को नेताजी द्वारा देश के प्रति किये गये त्याग एवं बलिदान का स्मरण कराया। इस उपलक्ष्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में दिये गये योगदान के लिए पांच लोगों को सम्मानित किया गया जिनमें दैनिक जागरण पश्चिमी दिल्ली के वरिष्ट पत्रकार श्री संजीव गुप्ता, शिक्षा विद एवं (निदेशक –मुनि इंटर नेशनल स्कूल) श्री अशोक कुमार ठाकुर, डा0 अजय सिंह पुंडीर, एम सी डी के राजेश शर्मा एवं समाज सेवी श्री अजमेर सिंह खर्ब शामिल हैं। सांसद रमेश कुमार ने कार्यक्रम के आयोजक चौ0 रणबीर सिंह सोलंकी को धन्यवाद देते हुए कहा कि देश के युवाओं को वास्तव में आज ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता है। आज के बच्चों में देश भक्ति का जज्बा पैदा करना हमारा दायित्व बनता है जिसे आप बखूबी निभा रहे हैं।

राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के बैनर तले आयोजित नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 115 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कायक्रम में कई स्कूल के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया । मुनि इंटरनेशनल स्कूल, मोहन गार्डेन के बच्चों ने वंदे मातरम् गाकर समा बांधा। मधु विहार, लिटिल स्टेप प्ले स्कूल के नन्हें बच्चों ने 'ए मेरे वतन के लोगों' गीत पर अभिनय किया जिसे देख कर दर्शकों की आंखें नम हो गई। कृष्णा मॉडल स्कूल, नजफगढ़ के विद्यार्थियों में पुष्कर झा, मधुलता एवं अमित ने महंगाई डायन गाकर खूब तालियां बटोरी। मधु विहार सी ब्लाक के लड़के एवं लड़कियों ने नृत्य तथा नाटकों की प्रस्तुतियां दी। मैडम देवकी निर्देशित कार्यक्रम में ज्योति , पूजा , रीमा, राहुल , रश्मि, प्रीति, खुशी, निभा , पंकज , वंदना, रेणु , अंजलि द्वारा अभिनीत नाटक, अनपढ़ बहू एवं दहेज विरोधी नाटक को लोगों ने खूब सराहा।

कार्यक्रम के अयोजक एवं राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के अध्यक्ष चौ0 रणबीर सिंह सोलंकी ने सभा में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारा देश फिर से सोने की चिड़ियाँ हो सकता है बशर्ते कि देश से भ्रष्टाचार मिट जाय। इस अयोजन में आये सभी पत्रकारों को श्री सोलंकी ने सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य लोगों के अतिरिक्त श्री इन्द्र मोहन लाम्बा,बलवान सिंह खोखर, शोभा पंडित, डा0 समदर्शी, कुलदीप सोलंकी ,रण सिंह , होशियार सिंह, राजपाल सोलंकी, मनी राम,सुरेश गहलोट, लाला, साहित्यानन्द सुमन , लटॅरी लाल, श्री ज्ञान गंगोत्री विकास संस्था के महासचिव एवं समाजसेवी भाई बी के सिंह आदि उपस्थित थे। मंच संचालन डा0 सुरेन्द्र झा एवं तिवारी जी ने किया ।

प्रस्तुति : सुरेन्द्र झा

'ब्याहता' : सहज संवेदना की पारिवारिक कहानियाँ

❑ सरिता शर्मा

प्रेमा खुल्लर के कहानी संग्रह 'ब्याहता' की सभी कहानियां परिवार के बदलते सामाजिक मूल्यों से जुड़ी हुई हैं। इनमें स्त्रियां जुझारू और परिवार की भलाई के लिए चिन्तित नजर आती हैं। इनमें घटनाओं का ताना–बाना

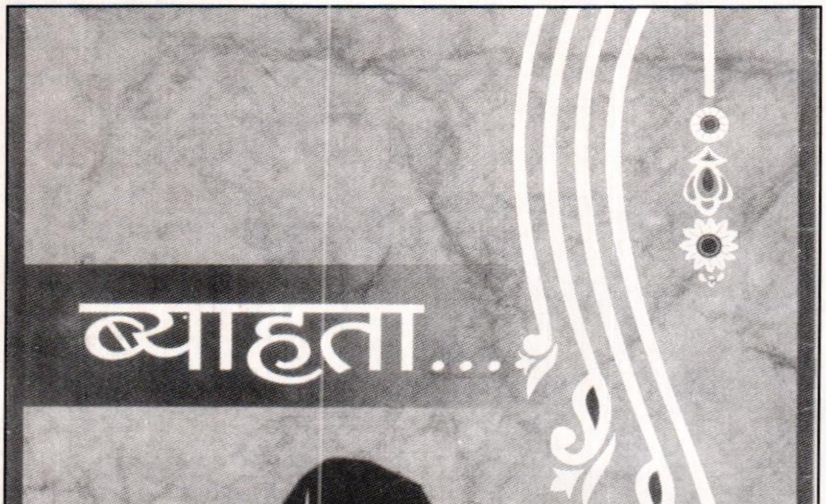

घरेलू परिवेश में बुना गया है।

पहली कहानी **'ब्याहता'** बहुत लम्बी होने के कारण कुछ हद तक बोझिल हो गयी है। अनावश्यक विस्तार से बचा जा सकता था। इसमें मुस्कान लंबे समय तक अपने पति जयंत के सुधर जाने का इंतजार करती है। जब जयंत को उसकी प्रेमिका ठुकरा देती है तो वह अपनी गलती मान लेता है और मुस्कान उसे क्षमा कर देती है।

'दो गज कपड़ा' में ठकुराइन रचना की करूण गाथा के जरिये बुढ़ापे के समय की पीड़ा को अभिव्यक्त किया गया है। दबदबे से रहने वाली ठकुराइन वृद्धावस्था में दुर्दिन की शिकार होकर भूख से मर जाती है। **'अस्तित्व'** टूटते बिखरते परिवार की दास्तान है जो बच्चों के खर्चीलेपन और दुश्चरित्र के चलते बर्बाद हो जाता है। **'प्यास'** में पानी के महत्व के बारे में इतना लिखा गया है कि दुखांत प्रेम कहानी की बजाय वह निबंध लगती है। **'आशियाना'** में सालवा असफल प्रेम विवाह के बाद मायके में लौट कर घर की जिम्मेदारी उठाती है। उसके माता–पिता स्वार्थवश उसका विवाह नहीं होने देते हैं मगर पचपन साल की उम्र में अमन उसको अपनाता है और सास–ससुर को भी साथ ले जाता है। **'छलते रिश्ते'** में जीवन की जटिलताओं के उतार–चढ़ाव देखने वाली भाभो का चित्रण है जो अपने टूटे हुए परिवार को समेटने की कोशिश करती है। अमीर अपनी पूरी सम्पत्ति ट्रस्ट के नाम करके वृद्धाश्रम में अपना घर बना लेता है। **'तन्हाई'** में अनन्या समाज में रहकर भी तन्हाई झेलती है।

कहानी संग्रह की भाषा गृहणियों और मध्यवर्गीय नारी पात्रों के अनुकूल अत्यंत सरल और पठनीय है। इनमें स्त्री–पुरुष के रिश्तों, जीवन की भटकन, मन की पीड़ा, अकेलापन और वृद्धों की तकलीफों का सशक्त वर्णन है।

पुस्तक	:	**ब्याहता**
लेखिका	:	**प्रेमा खुल्लर**
प्रकाशक	:	**बसंती प्रकाशन नयी दिल्ली**
मूल्य	:	**300 रु.**

राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे भारतवंशी अमेरिकी- कवि सुरेन्द्रनाथ

❑ सिद्धेश्वर

संप्रति अमेरिका की ऊर्जा संबंधित परियोजनाओं के प्रबंधन से जुड़े भारतवंशी अमेरिकी कवि व अभियंता सुरेन्द्रनाथ तिवारी अपने काव्य-संग्रह 'उठो पार्थ। गांडीव संभालो' में राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे हैं। मुझे अच्छी तरह याद है आज से चार-पाँच साल पूर्व राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था 'राष्ट्रीय विचार मंच', बिहार के अध्यक्ष तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी जियालाल आर्य के किदवईपुरी के आई०ए०एस० कॉलोनी स्थित उनके निवास की खुली छत पर आयोजित कार्यक्रम में सुरेन्द्र जी की कविताओं पर हुई परिचर्चा में मुझे भी कुछ कहने-सुनने का मौका मिला था। सच बताऊँ, उस वक्त भी इस संग्रह के प्रथम संस्करण की चुनी रचनाओं का ओजपूर्ण पाठ कवि-मुख से सुनकर मैं अभिभूत हुआ था। दरअसल, पिछले कई दशक से अमेरिका जैसे सर्वशक्तिशाली देश के एक आधुनिक नगर में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित और सात समंदर पार अपना जीविकोपार्जन करते हुए अपने देश भारत का माथा ऊँचा करने वाले कवि सुरेन्द्र की स्मृतियों में न केवल अपना भारत व बिहार, बल्कि पूर्वी चंपारण स्थित अपना गाँव चिकनौटा तरोताज़ा है। राष्ट्र के संदर्भ में लिखी प्रस्तुत संग्रह दूसरे संस्करण की अधि कांश कविताओं में सुरेन्द्र का कवि-मन उतना ही चिंतित है जितना कि अन्य भारतीय। जिस जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर कहा गया है आज उस भूमि में जन्म लेकर, यहाँ का अन्न-जल सेवन करते हुए यहाँ की धरती पर धमाचौकड़ी करने वाले अनेक अपनत्व कृतघ्नतापूर्वक जघन्य कारनामें करते रहते हैं। आज जब कवि-मन देश में अंत: वाह्य समग्रत: एक विस्फोटक उथल-पुथल के साथ-साथ इसके अपकारक तत्त्वों को गर्जमान देखता है, तो उसका मन बैचैन हो जाता है और इस संग्रह की कविता में कहता है--

प्रतिज्ञा बस एक होनी चाहिए,
इस महान राष्ट्र की अखण्डता ।
उद्देश्य बस एक होना चाहिए,
इस महान राष्ट्र की अखण्डता ।
धर्म बस एक होना चाहिए,
इस महान राष्ट्र की अखण्डता ।
ये नहीं है प्रश्न के पल,
ये नहीं संदेह के क्षण,
सव्यसाची !
यह प्रहर गांडीव का है।

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि सुरेन्द्र ने अपने देश एवं राष्ट्रीयता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर अपने सामाजिक, नागरिक, राष्ट्रीय एवं नैतिक दायित्व एवं धर्म का निर्वहन किया है। देश की अखण्डता की रक्षा की बात करना उसी कृतज्ञता को प्रमाणित करता है।

चाहे राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रश्न हो, चाहे मूल भारतीय सांस्कृतिक धारा का या फिर राष्ट्रीयता का प्रश्न हो, प्रत्येक स्तर पर केवल विनाशक, विरोध एवं विद्रोह की ही लगी आग को देखते हुए भी देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना का अभाव जब कवि देखता है, तो कह उठता है--

''ओ मेरे भोले युधिष्ठिर, क्या करेगा धर्म का तू,
नारियाँ लुटने लगेंगी जब सरे बाजार में ?
क्या करेगा यह प्रतिज्ञा, बोलिए मेरे पितामह
राष्ट्र ही जल जाएगा, जब आज लाक्षागार में ?''

सन् 1996 में 'उठो पार्थ! गांडीव संभालो' शीर्षक की कविताएँ उस समय लिखी गई जब भारतीय राजनीति में उथल-पुथल था, आयोध्या मंदिर का मुद्दा छाया था, बिहार में अराजकता, हत्याओं का दौर था और भ्रष्टाचार का नंगा नाच शुरू हो गया था। संविध ान की आड़ में यह सब देखकर समाज को बाँटकर प्रजातंत्र के नाम पर जनता को लूटने और ठगने का अधिकार नेताओं ने प्राप्त कर लिया था। देश भले ही रसातल में चला जाए, नेता आमजन के साथ विश्वासघात करते रहे, मगर देश के सच्चे हितैषी यह सबकुछ देखकर मूकदर्शक बने रहे। जो थोड़े से लोग कुछ करना भी चाहते थे वे भी अपनी जान के डर से समझौता कर बैठे और युधिष्ठिर जैसे चुप रहना ही उनलोगों ने मुनासिब समझा। तभी कवि सुरेन्द्र ने उठो पार्थ! 'गांडीव संभालो' कहकर उस अर्जुन के बहाने उन्होंने उन सभी आमजन के हितैषियों का आह्वान करने का प्रयास किया। भारत में अलगाववादी गुट राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सांप्रदायिक सौहार्द को जिस कटुता के साथ खुली

चुनौती दे रहे हैं और उसे सरकार तथा देश के प्रबुद्धजन उनके सुर में सुर मिलाते दिख रहे हैं, उस स्थिति में कवि सुरेन्द्र की चिंता स्वाभाविक है। देश की एकता व अखण्डता के लिए हमारे नागरिकों को ललकारना उन्होंने मुनासिब समझा।

काव्य-संग्रह	: 'उठो पार्थ! गांडीव संभालो'
कवि	: सुरेन्द्रनाथ तिवारी, भारतवंशी अमेरिकी
समीक्षक	: सिद्धेश्वर, संपादक, 'विचार दृष्टि'
प्रकाशक	: सुरेन्द्रनाथ तिवारी, 160, बंकर हिल रोड प्रिंसटन, न्यूजर्सी, अमेरिका - 08540
	पृष्ठ - 144, मूल्य : 100 रुपए / 10 डॉलर

सरल और स्पष्ट तथा अपने परिवेश व अपनी मिट्टी से गहरे जुड़े सुरेन्द्र जी ने इस संग्रह की कविता रूपी रंग-बिरंगे इन्द्रधनुष में अनूठे बिंब अपनी अनूठी शैली में प्रस्तुत की है जिन्हें बार-बार पढ़ने का मन करता है। 'एक मीठे गीत-सी तुम' शीर्षक की निम्न पंक्तियों को देखें आप--

एक मीठे गीत-सी तुम गर लिपट जाओ अधर से,
आज मधुपायी भ्रमर - सा मत्त हो मैं गुनगुनाऊँ,
तुम कहो, तो गीत गाऊँ
हाँ, कहो तो गीत गाऊँ ।' (पृष्ठ - 56)

संकलन की कविताएँ जब हम पढ़ते हैं, तो लगता है सुरेन्द्र जी अपने जन-जीवन से जुड़ी कविताओं में काव्य-सृजन के उच्चत्तम शिखर पर पहुँच गए हैं--

जोड़ता हूँ मैं दिलों को जिंदगी को, आदमी को,
पत्थरों के ये शिवाले बाँटते सारी जमीं को ।
मेरी खुशबू में नहीं है वतन की दीवार कोई,
मैं पवन को रथ बनाकर बाँटता सुरभि धरा को,
पत्थरों की ये दीवारें बाँटती फिरतीं धरा को ।
पत्थरों के बुत बहुत है, बुत नया बन क्या करुँगा?
फूल ही रहने दो मुझको, देवता बन क्या करूँगा?

सुरेन्द्र जी ने जहाँ अपने वतन पर कई कविताएँ लिखी हैं, वहीं प्रकृति के भी गीत लिखे हैं। 'प्रिय, देख रिम-झिम में भींगी सिकहरना की उन्मन कछार' शीर्षक कविता में उनका ग्राम्य प्रकृति का गीत है जिसमें ग्रामीण दुपहरिया का चित्रण मन को झंकृत कर देता है--

''तपती जलती दुपहरिया में,
मुरझाई अमराई भीगी ।
नव-रक्त-पत्र-दल सिहर उठे,
अलसी तरुणाई भीगी ।
चंचल बुंनियों की रिमझिम से,
दुर्वादल का घुंघट भीगा ।
पतली गोरी सिकहरना की,
धारा का अंचल-पट भीगा ।'' **(पृष्ठ 88)**

इस अद्भुत और निराले प्रकृति के सौंदर्य चित्रण में व्यंजनात्मकता भरपूर है जो स्पष्ट दिखाई पड़ती है। सुरेन्द्र जी की कविताओं में प्रकृति के साथ-साथ प्रेम विविध रूपों में मिश्रित हुआ है। अपने देश के प्रति इनकी कविताएँ बेचैन करती हैं कुछ कर गुजरने के लिए।

अपने देशकाल की गतिविधियों के ऐसे चितेरे कवि भाई सुरेन्द्रनाथ जी को, जिनके मन की हलचलों और आत्मिक संबंधों की संवेदनाओं से भी मैं अभिभूत और पराभूत हुआ हूँ, को मैं बिहार की इस पाटलिपुत्र नगरी में अभिनंदन-वंदन करता हूँ जिनके काव्य-संग्रह 'उठो पार्थ! गांडीव संभालो' के द्वितीय संस्करण का विगत 14 नवंबर, 2010 को पटना के गाँधी संग्रहालय सभागार में आयोजित समारोह का मैंने लोकार्पण करते हुए गर्व का अनुभव किया। इनकी कलम निरंतर चलती रहे इसकी मंगलकामना भी करता हूँ।

अध्यक्ष, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना।

गीत

❑ शिव कुमार बिलग्रामी

नहीं कहता कि तुम मुझको
सुकूं की नींद सोने दो।
रहो बस दूर तुम मुझसे
मुझे भर नैन रोने दो।।

चढूं न तुम्हारी नज़रो में,
न तुम दिल में उतर पाओ।
अगर कुछ-कुछ हुआ भी हो,
तो अब कुछ भी न होने दो।।
रहो बस......

कभी कोई ले के पाता है,
कभी कोई दे के पाता है।
जिसे जिसमें करार आये,
उसे उसमे ही खोने दो।।
रहो बस......

418, मीडिया टाइम्स अपार्टमेंट
अभय खंड-4, इंदिरापुरम, गाजियाबाद
मो.- 9868850099

किनारे की धरती– कहानी संकलन

❑ सुजाता प्रसाद

कहानी संकलन 'किनारे की धरती' कुल मिलाकर मध्यमवर्गीय जीवन–शैली का स्पष्ट एवं सजीव वर्णन है, जिसमें कल्पना का पुट नहीं है। कहानियों में नौकरी की बेबसी और कर्मचारी की मजबूरी को दर्शाया गया है; पारिवारिक समस्याओं की उलझन एवं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के घुटन से निकलने की पुरजोर कोशिश की गई है। लेखक के सेवाकाल के दौरान घटित घटनाओं और आस–पास से जुड़ी बातों का भी समावेश किया गया है। यह पुस्तक लेखक के संघर्षमय जीवन की भी सच्ची तस्वीर लगती है। पुस्तक का शीर्षक 'किनारे की धरती' लेखक की अंतर्व्यथा के साथ न्याय करता प्रतीत होता है। इन कहानियों के माध्यम से लेखक अपने समय के समाज की विसंगतियों के प्रति भी जागरूक है।

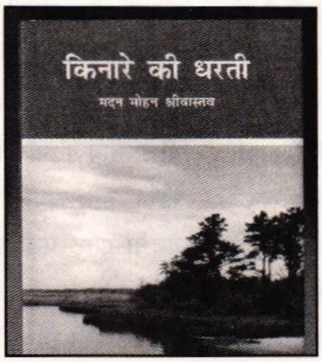

अपनी कृतियों की रचनात्मकता, पाठकों के सामने लाने की रचनाकार की आतुरता उस रेशम के कीट की तरह है जो आवरण से बाहर आने के लिए छटपटाता रहता है जिसका जिक्र लेखक ने अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से यदा–कदा बड़ी शिद्दत के साथ किया है। भाषा–संवाद उतना रेशमी नहीं बन पाया है पर कहीं–कहीं कुछ संवाद जरूर उच्च कोटि के हैं।

सबसे बड़ी कहानी **'किनारे की धरती'** में ट्रेन का इंतजार करते हुए राजेश को यह महसूस होता है जैसे कोई उसकी गर्दन को पकड़कर अथाह जलराशि के बीच दबोच रहा है। इस पंक्ति में 'अथाह जलराशि' को जीवन के असंख्य अनगिनत झंझावातों का प्रतीक बनाया गया है जिस पर पूरी कहानी केंद्रित है; जिसमें नौकरी–पेशा आदमी की मजबूरी है, पारिवारिक मायाजाल है और जीवन के उतार–चढ़ाव हैं। इसी कहानी में एक तरफ जब बॉस कह रहा है कि तुम्हारी माँ के फेफड़े का ऑपरेशन होना है, जिसकी सूचना 'मदर सिरियस' का तार देते हुए दे रहा है, उस विषम परिस्थिति में भी भावहीन बॉस का, राजेश से शिकायत करना और उसे यह धमकी देना कि तुम्हारी वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) मुझे ही लिखना है, सचमुच दयनीय–सा लगता है – और जो हर आम आदमी की कहानी लगती है। सरकारी कर्मचारी की विवशता और एकमात्र आर्थिक स्तंभ के रूप में अपनी नौकरी न छोड़ पाने की मजबूरी– इन दो पाटों के बीच पिसते हुए श्याम के उद्विग्न मन की आंतरिक वेदना कहानी में उभरकर सामने आती है। सृजन के लिए एकांत की चाहत और इस यंत्रवत् जीवन से कहीं भाग जाने वाले कर्मचारी राजेश की निम्नलिखित रचना तो कहानी के सारांश का काम करती है –

"अभावों में झूलती / यह जिंदगी / कसमसा उठी है /
लाल फीतों में / किसी समझौते की बात / मेरे मित्र /
मत करो / यह रखा है / मेरा त्यागपत्र।"

अगली कहानी **'घूमती छत'** सरकारी महकमों में फैले घोटालों–घपलों का एक दस्तावेज है। कहानी में रमेश नामक पात्र, जो कि कैशियर है, पर साहब द्वारा जब यह फरमान दिया गया कि उसके ऊपर दस लाख की सरकारी संपत्ति के घोटाले का आरोप है, और उसके संस्पेंशन की सिफारिश की गई है, तो वह ठगा–सा रह जाता है। रमेश को तो उस गुनाह की सजा मिलने वाली थी, जिसमें शामिल होने की हामी उसने भरी ही नहीं थी। उसने तो एक कर्मचारी के रूप में सिर्फ आज्ञा का पालन किया था। दरअसल घोटाला तो इंजीनियर मित्रा साहब ने किया था। ऐसे में तो रमेश की आँखों के सामने तथाकथित नवनिर्मित प्रयोगशाला की छत घूमती हुई नजर आ रही होती है, जिसका विशालकाय भवन उसकी वर्षों की बनाई इज्जत मिट्टी में मिलाकर और नौकरी छीनकर उसके अस्तित्व को ही खत्म करने वाला था। **'ढहता घर'** पुनः एक मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी का ब्यौरा है। बड़ी होती बहन की शादी की चिंता से चिंतित मन की व्यथा है, मुख्य सदस्य की बेबसी और बेचारगी का नजारा है, अचानक माँ की बिगड़ती तबियत से आशंकित और उद्वेलित विचारों का हू–ब–हू चित्रण है। ऑफिस से आलोक लंबे कदमों से सड़क को पीछे छोड़ते हुए घर की ओर आ रहा होता है तो किसी अप्रिय घटना की कल्पना मात्र उसे अंदर तक झकझोर

देती है। साथ में चल रहा दोस्त श्याम भी मन ही मन कह रहा था माँ का अभाव, आलोक के भटकने की अवस्था होगी लेकिन इस दुनिया के हर आदमी के सामने मौत का अँधेरा है। बीमारी की उम्र लंबी हो सकती है। दो, चार, दस साल तक किंतु मौत जिस किसी के घर आती है, बहुत ही कम उम्र लेकर आती है। यथार्थ बयाँ करतीं ये पंक्तियाँ वाकई मार्मिक हैं। अनुभूति के आधार पर अगर कुछ कहना चाहूँ तो 'सच में मौत के भयंकर तूफान में जिंदगी में बहुत कुछ बदल जाता है।'

'गुमटी' नामक कहानी एक पान वाले के आशियाना बसाने के सपनों और उसके जीवन के उतार–चढ़ाव की कहानी है तो **'अहसास'** में कश्मीर की वादियों में एक कार्यरत् जवान द्वारा एक शहीद जवान की यादों से जुड़े एवं उसके बिखरे परिवार का संवेदनशील चित्रण है। **'साये में'** छोटे से कस्बे से काम की तलाश में दिल्ली महानगर में आए एक युवक की दास्तान है जो कई तरह की यातनाएँ झेलता है; कभी पब्लिक की पिटाई तो कभी पुलिसिया कहर। यहाँ तक कि वापस घर जाने के लिए भी उसके पास पैसे नहीं होते हैं और तब भूख से तड़पता एक ईमानदार शिक्षित युवक सारी मर्यादाएँ तोड़ कर किस तरह पॉकेट मारता है और पकड़े जाने पर वही बुरा काम उसे इनाम स्वरूप सौ रुपये दे जाता है। संक्षेप में भूख, बेकारी और लोकतांत्रिक कुव्यवस्था का कच्चा चिट्ठा है। वहीं **'प्रतीक्षा'** नामक कहानी आपात स्थिति के सन्नाटे व सनसनी, तहकीकात व गिरफ्तारी का सफल विवरण है।

शीर्षक **'उजाला'** में जमशेदपुर में कार्यरत् एक कर्मचारी रंजन के जीवन के कुछ उजले तो कुछ काले पक्ष रखे गए हैं। इस कहानी में उस बस्ती का भी जिक्र किया गया है जहाँ कोई भी सभ्य प्राणी नहीं रह सकता, पर नौकरी है तो सपरिवार रहने की सख्त मजबूरी भी है। दोस्त राजेश को राजनीतिज्ञ न बनने की सलाह देता हुआ रंजन स्पष्टवादी लगता है; उसके द्वारा अपने स्वतंत्रता–सेनानी पिता की शहादत का बयान देना; बड़े भाई साहब का कारुणिक विश्लेषण करना और साथ ही उसके पिता द्वारा सब कुछ राष्ट्र के नाम न्योछावर कर देने के बावजूद भी इनाम स्वरूप भूख, बेकारी और बीमारी का मिलना–इन सबका तार्किक चित्रण करते लेखक की हार्दिक वेदना में सरकारी सिफारिश, रिश्वत एवं भ्रष्टाचार का सही आकलन है।

'बेतरतीब सिलसिला' दहेज रूपी कुरीति की भेंट चढ़ती किसी की बहन के अंत होने की सिलसिलेवार कहानी है। अंतिम कहानी **'वर्षगाँठ'** फिर एक मध्यमवर्गीय नौकरी पेशा परिवार का बदनसीब पक्ष है। सुरसा के मुँह की तरह आती परेशानियाँ, महीने के आखिर में पैसों के अभाव में बजट का डगमगाना, पहले से ही उधार राशि का होना; मकान–मालिक का किराया देना और इन सबके बीच ऐसे में प्यारी–सी बिटिया का जन्म–दिन मनाने का आग्रह करना कितना कठिन लगता है। फिर बुझे मन से राशन की दुकान जाना और खाली हाथ वापस आना, बिटिया का सूट और पत्नी की साड़ी लिए बगैर लौटना, उसके बाद पत्नी का गुस्सा होना और अभावों के आगे नतमस्तक होते दंपत्ति के बीच भावुक भावनाओं का आदान–प्रदान– ऐसा लगता है मानो इन सबके संवाद–संप्रेषण में लेखक की आंतरिक वेदना–फूट पड़ी हो।

अगर देखा जाए तो पारिवारिक दायित्व निभाने के लिए की जा रही नौकरी और लेखक का निजी जीवन नदी के दो समानांतर किनारों के बीच की वो अविराम धाराएँ हैं जिसका कोई किनारा नहीं दिखता हैं। लेकिन लेखक का यह कहना कि धरती मेरा अस्तित्व है तो आकाश मेरी आकांक्षा–बहुत ही प्रेरक है। सचमुच अगर हम अपने अस्तित्व की रक्षा पूरे हौसले के साथ कर लेते हैं तो आकांक्षाएँ जरूर पूरी होती हैं।

पुस्तक की भाषा शैली ऐसी है कि पाठक कहीं ऊबता नहीं है, उत्सुकता बनी रहती है। लेखन में सहजता है। कहीं–कहीं तो प्रादेशिक बोली को भी बड़ी शुद्धता के साथ स्थान दिया गया है। हाँ, कहानियों में कुछ संयोजित शब्दों की पुनरावृत्ति खलती है। कुछ भी हो–सभी कहानियाँ लेखक के दिल के अपने असली एवं अनुभूत उद्‌गार लगती हैं मानो जो देखा, जो सोचा, जो महसूसा, वही बोला और ज्यों का त्यों पन्नों पर उतार दिया हो आम आदमी की भाषा में।

पुस्तक : किनारे की धरती
लेखक : मदन मोहन श्रीवास्तव
प्रकाशक : एस.एन. पब्लिकेशन, नांगलोई, दिल्ली–110041

भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य बना

❑ उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'

भारत 19 वर्षों के बाद पहली जनवरी 2011 को पुनः संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य बन गया। पिछली बार, भारत दो वर्षों– 1991 और 1992– के लिए इस 15 सदस्यीय प्रतिष्ठित समूह का सदस्य बना था। तब से आज तक वैश्विक भूराजनीतिक परिदृश्य बदल चुका है और अब भारत संयुक्त राष्ट्र महासभा के कुल 192 वोट में से रिकार्ड 187 वोट प्राप्त कर निर्विरोध चुना गया है। भारत को पाकिस्तान सहित कई अप्रत्याशित देशों के भी वोट मिले। पिछले वर्ष अक्तूबर में मतदान होने के तुरंत बाद पाकिस्तानी प्रतिनिधि ने भारत के चुने जाने पर भारत के प्रतिनिधि को बधाई दी। भारत के साथ इस बार जर्मनी, पुर्तगाल, दक्षिण अफ्रीका और कोलंबिया भी इस विश्व संघ के अस्थायी सदस्य बने हैं।

भारत को रिकार्ड वोट मिले। यह इस बात का संकेत है कि विश्व के राष्ट्रों में भारत को कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है। इससे यह भी पता चलता है कि अधिकांश देशों का मानना है कि भारत यू एन सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए योग्य उम्मीदवार है। विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक होने के अलावा भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी है। वर्ष 2025 तक इसकी जनसंख्या चीन से भी अधिक होकर विश्व में सबसे अधिक हो जाएगी। इसकी वैश्विक हैसियत के अनुरूप इसकी सैनिक और आर्थिक शक्ति भी बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि हरदीप सिंह पुरी ने ठीक ही कहा है कि भारत, परमाणु अप्रसार और निःशस्त्रीकरण के प्रति बेहद प्रतिबद्ध परमाणु शक्ति संपन्न देश है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में हमेशा ही सक्रिय योगदान दिया है। श्री पुरी ने कहा है कि मौजूदा परिदृश्य में भारत, दक्षिणी विश्व के नेता और जी–20 देशों के महत्त्वपूर्ण सदस्य के रूप में उभरा है। चाहे नयी आर्थिक व्यवस्था, विश्व व्यापार संगठन वार्ता, वैश्विक पर्यावरण संबंधी वार्ता हो या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सुधार की बात– एक भी वैश्विक मुद्दा ऐसा नहीं है जिसमें भारत की मौजूदगी, सहयोग और विचार की जरूरत न हो। संक्षेप में कहा जाए तो आज कोई भी वैश्विक संगठन या प्रणाली भारत के बिना अधूरी है। इन सबके होते हुए भी भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद यानि यू.एन.एस.सी का स्थायी सदस्य नहीं बनाया गया है। इसका कारण है कि सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का निर्धारण मौजूदा वैश्विक हकीकतों के आधार पर नहीं बल्कि 1940 के दशक की हकीकतों के आधार पर निर्धारित किया गया था। उसके बाद इस विश्व संगठन की स्थायी सदस्यता में एकमात्र बदलाव तब किया गया था जब ताइवान के स्थान पर चीन को 1971 में सदस्य बनाया गया था। स्पष्ट है कि यूएन सुरक्षा परिषद में सुधार का लंबे समय से इंतजार है। अब इसके चार स्थायी सदस्यों रूस, यू.के., अमेरिका और फ्रांस ने भारत की स्थायी सदस्यता के पक्ष में स्पष्ट सहमति व्यक्त कर दी है और चीन ने भी भारत के प्रति पूर्ववर्ती रूख में बदलाव करने का संकेत दिया है जिससे लगता है कि यह लक्ष्य अब ज्यादा दूर नहीं है। भारत केवल सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता ही प्राप्त करना नहीं चाह रहा है बल्कि उसकी मंशा है कि इस विश्व संगठन की स्थायी और अस्थायी सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि की जाए। इसलिए जब भी सुरक्षा परिषद में सुधार किया जाएगा, स्थायी सदस्यता के अन्य दावेदार देशों को भी सदस्य बनाने की प्रबल संभावना रहेगी। इसके अलावा भारत, संयुक्त राष्ट्र में व्यापक सुधार चाहता है ताकि यह मौजूदा विश्व–व्यवस्था का वास्तविक प्रतिनिधि बने। मौजूदा विश्व–व्यवस्था में विकासशील और उभरती शक्तियाँ ज्यादा प्रभावशाली होती जा रही हैं। हालाँकि सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्यों की शक्तियों के बारे में वास्तविक समस्याएँ मौजूद हैं। जबकि कुछ यूएन सदस्य शीतयुद्ध की समाप्ति की बात कहते हुए स्थायी सदस्यों के वीटो पावर की समाप्ति चाहते हैं तो अन्य सदस्य इसे बनाए रखने के पक्ष में हैं। ऐसे भी प्रस्ताव हैं कि केवल मौजूदा स्थायी सदस्यों के पास वीटो पावर रहेगा और नए सदस्यों को कुछ समय तक इसे इस्तेमाल करने की मनाही रहेगी। वीटो पावर संबंधी इस समस्या का हल कब निकलेगा इसका पता भविष्य में ही लग पाएगा। भारत के लिए यह तो निश्चित ही है कि जब भी इसे स्थायी सदस्यता दी जाएगी तब इसके साथ अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियाँ भी आएँगी। भारत इनका निर्वाह करने के लिए बखूबी तैयार भी है।

▶ बी–173, मधु विहार, उत्तम नगर, न.दि.–110059

समुद्री डकैती (पाइरेसी) : गंभीर अंतर्राष्ट्रीय समस्या

❑ उपेन्द्र नाथ 'अनन्य'

हिंद महासागर, अरब सागर, अदन की खाड़ी और आसपास के समुद्री क्षेत्रों में इन दिनों समुद्री डकैतियों ने अन्तर्राष्ट्रीय सामुद्रिक व्यापार को गंभीर समस्या से ग्रस्त कर दिया है। विश्व के समुद्री मार्ग से कच्चे तेल का किए जाने वाले परिवहन का लगभग 40 प्रतिशत इसी क्षेत्र से किया जाता है। इस तथ्य को देखते हुए स्थिति बेहद गंभीर हो गयी है। समुद्री डकैतियों विशेषकर सोमालिया के समुद्री डकैतों की हरकतों पर गंभीर चिंता जताते हुए भारत के रक्षा मंत्रालय ने हाल में ही भारतीय संसद में अपनी रिपोर्ट पेश की है जिसमें कहा गया है कि समुद्री डकैतियों से समुद्री मार्गों की सुरक्षा खतरे में पड़ती जा रही है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि पश्चिमी द्वीपसमूहों के आस–पास के समुद्री क्षेत्रों में सोमालिया के समुद्री डकैतों की हरकतों पर और कड़ी निगरानी रखे जाने की जरूरत है। इस रिपोर्ट में सामुद्रिक सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र ढाँचे के अन्तर्गत बहुपक्षीय सहयोग और बढ़ाने का आह्वान किया गया है। हाल ही में इस ज्वलंत मुद्दे पर मंत्रीमंडल की सुरक्षा संबंधी समिति की बैठक के बाद सरकार ने भारत के पश्चिमी तट से प्रस्थान करने वाले मालवाहक जलयानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वतःस्फूर्त तरीका अपनाने एवं आक्रामक उपाए करने के लिए भारतीय नौ सेना को अधिकृत किया है। सरकार द्वारा अधिकृत किए जाने के बाद भारतीय नौ सेना ने 12 मार्च को भारतीय पश्चिमी तट से लगभग 600 सामुद्रिक मील दूर अरब सागर में बंधक बनाए गए वेगा 5 नामक मोजाम्बिक के झंडे लगे मछलीमार जलयान में अड्डा जमाए समुद्री डकैतों के खिलाफ कार्रवाई कर 61 सोमाली समुद्री डकैतों को हिरासत में लिया और 13 नाविकों को उनके कब्जे से छुड़ाया। पिछले 28 दिसंबर को सोमाली समुद्री डकैतों द्वारा इस जलयान का अपहरण किया गया था और समुद्री डकैतियों को अंजाम देने के लिए अपने अड्डे के रुप में इसका इस्तेमाल डकैतों द्वारा किया जा रहा था। समुद्री डकैतों ने 11 मार्च की रात को वेगा 5 जलयान से दूसरे जलयान एम वी वैंकूवर ब्रिज पर हमला किया था जिससे संकट के संकेत प्राप्त हुए थे। अरब सागर में निगरानी कर रहे आई.एन.एस. कालपेनी ने सीमित गोलीबारी कर इस पर अपनी प्रतिक्रिया जतायी थी। इससे भयभीत होकर समुद्री डकैतों ने बंधक बनाने की अपनी कोशिश छोड़कर अँधेरे में इस क्षेत्र से भागने की कोशिश की पर उसे भारतीय जहाज द्वारा कब्जे में ले लिया गया। इससे पहले भी इस वर्ष अरब सागर में 28 जनवरी और 5 फरवरी को डकैतों द्वारा कब्जे में लिए गए दो जहाजों पर भारतीय नौ सेना द्वारा कार्रवाई कर 43 डकैतों को गिरफ्तार किया गया था। ऐसा लगता है कि सोमाली समुद्री डकैत, वर्ष 2008 से ही अफ्रीकी सागरों तथा अदन की खाड़ी में तैनात अंतर्राष्ट्रीय नौ सैनिक बल द्वारा पकड़े जाने से बचने के लिए अपनी डकैतियों का दायरा इस क्षेत्र से बाहर भी फैलाते रहे हैं। भारत ने अदन की खाड़ी में सामुद्रिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक दर्जन से ज्यादा देशों वाले सामूहिक कृतक बल में अपने तीव्रगामी जहाजों में से एक को तैनात किया है।

हर माह अदन की खाड़ी से 20 से ज्यादा भारतीय मालवाहक जहाज गुजरते हैं। समुद्री डकैती के खतरों के कारण पश्चिमी देशों के जहाजों के मालिक स्वेज नहर और अदन की खाड़ी से जहाज ले जाने के बजाए केप ऑफ गुड होप वाले ज्यादा लंबे रास्ते से जहाज ले जाने के लिए बाध्य हो रहे हैं। अब भारत सरकार समुद्री डकैतों को भारतीय जलयानों से दूर रखने के लिए इन जलयानों पर सशस्त्र रक्षकों को रखने की मंजूरी देने वाले प्रस्ताव पर विचार कर रही है। भारतीय नौ सेना द्वारा यह प्रस्ताव भी सरकार को किया जा रहा है कि अपहरण की स्थिति में उपग्रह संचार का प्रयोग करते हुए संकट–सूचना दे सकने वाले क्रू सदस्यों के लिए इंजन रूम की मोर्चेबंदी करके 'सुरक्षित गृह' की व्यवस्था रखना सभी मालवाहक जलयानों के लिए अनिवार्य हो। तब नौ सेना के कमांडो को अतिरिक्त नुकसान झेले बगैर जहाज में कमांडो कार्रवाई के लिए तुरंत घुसने का मौका मिल सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए यह गंभीर चिंता का मसला है कि पिछले वर्ष सोमालिया के समुद्री डकैतों ने विश्व के 53 जलयानों का अपहरण किया और 11 हजार से अधिक लोगों को बंधक बनाया। इस क्षेत्र के देशों द्वारा कार्रवाई कर पिछले वर्षों में कई समुद्री डकैतों को पकड़ा तो गया पर दुर्भाग्य की बात यह है कि अधिकतर देशों में समुद्री डकैतियों से प्रभावशाली तरीके से निबटने के लिए कानून नहीं है। वास्तव में अब समुद्री डकैती व्यवस्थित उद्योग का रूप ले चुकी है। सोमालिया में प्रभावी सरकार का न होना भी इस समस्या को बढ़ाने में एक प्रमुख कारक है। विश्व के लिए गंभीर चिंता का विषय अब यह भी है कि सोमालिया के समुद्री डकैतों एवं अल शबाब जैसे आतंकवादी गुटों के बीच संबंध होने की खबरें भी प्राप्त हुई हैं। इन चुनौतियों से निबटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को सर्वप्रथम सोमालिया में सक्षम सरकार बनाने को प्रोत्साहित करना चाहिए जो इस गंभीर समस्या को दूर करने के लिए कार्रवाई कर सके तथा दूसरा कदम यह उठाया जाना चाहिए कि समुद्री मार्गों में संयुक्त निगरानी को और सुदृढ़ अवश्य किया जाए। स्पष्ट है कि इन चुनौतियों से निबटने के लिए ठोस अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई किए जाने की अविलंब आवश्यकता है।

बी–173, मधु विहार, उत्तम नगर, न.दि.–110059

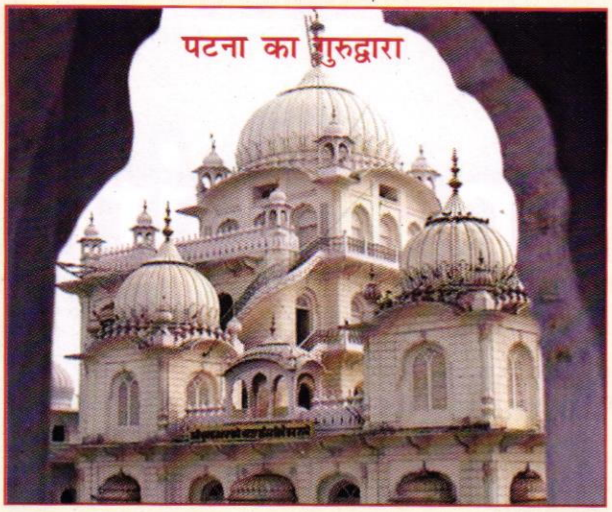

पटना का गुरुद्वारा

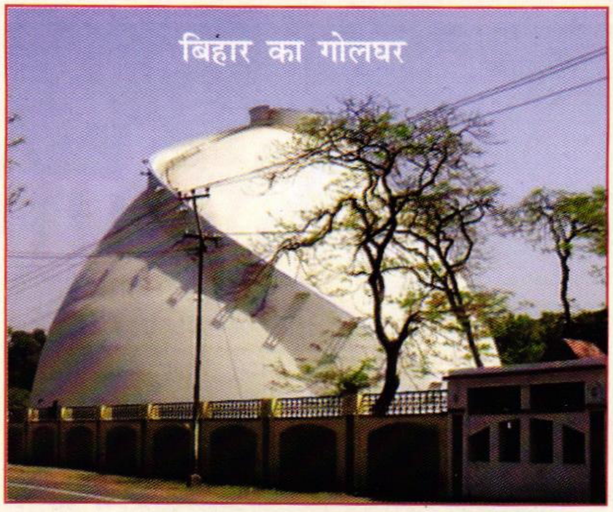

बिहार का गोलघर

मिथिला की पेंटिंग

मिथिला की पेंटिंग

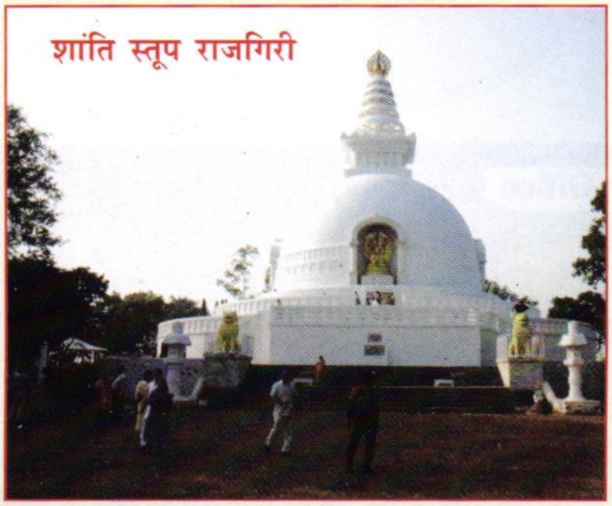

शांति स्तूप राजगिरी

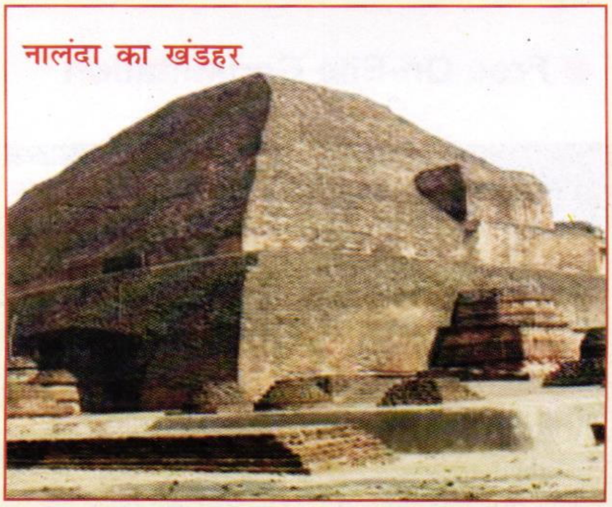

नालंदा का खंडहर

वर्ष : 13 अंक : 46 जनवरी–मार्च 2011 RNI REG. No. : DEL HIN/1999/791

24hrs.Computer care 9311281443

Solutions Point

- Annual Maintenance Contract/Warranty Support Services
- Desktop/Server/Network Management
- Information Security Management
- Data Storage & Back-up Solutions
- Sale Purchase of Various IT Products
- Mail Management Services
- Software Licensing Audits
- Web Design & Maintenance
- Training & Development
- Free On-Site Consultation

24hrs. Computer care 9311281443

Corporate Office

Solutions Point Infotech, D-55, Laxmi Nagar, Near Sipra Hotel, Delhi-92

Tel-28822431, 42487975, 9811310733, 9711276884, 9873434085-7 Fax-42486862,

24 Hrs. Computer Care-9311281443, Connexxion-2431

Email: info@solutionspoint.net

http: //www.solutionspoint.net